[illegible]

0152,1J96x
133

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ثبتی

یہ پوتھی بابو سیو درت رای جی رادھا کرشن جی

مارواڑی ساکن شہر بنارس کی ہے اگر کوئی بوده کرے

تو مالک سمجھا جاوے فقط

تاریخ ۹

0152,1J96x ९४९९
B3

0152,1J96x 9509

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0152,1J96x
B3

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
आगत क्रमांक...... 1671
दिनांक..................

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री

अथ

सुंदरविलासग्रंथ.

हिंदीवृजभाषामैं

दादूपंथीसाधूस्वामीसंदरदासजी

ताकोशोधकरकेछप्यो

मुंबईमें

गंगाविष्णुश्रीकृष्णदासइनोनें

आपके

श्रीवेंकटेश्वरछापखाना.

पद्यात्मकसुरसवाणीमेंप्रसिद्धकिया.

आवृत्ति १ ली

संवत् १९४० ज्ये. मा.

१२१२
मुमुक्षु भवन वेद वेदांग पुस्तकालय
ग्रन्थालय
क्रमांक ५८५
दिनांक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

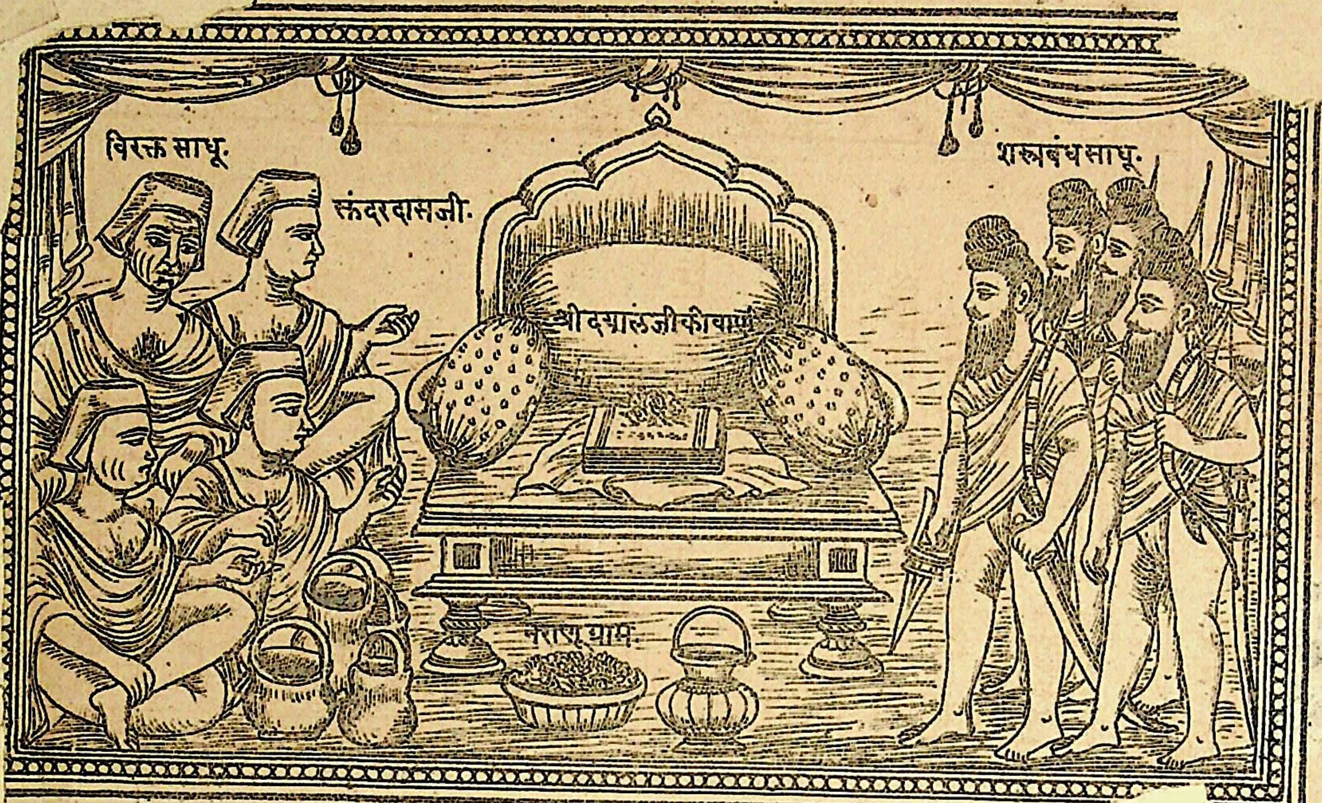

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुंदरविलास.

अथ सुंदरविलासके अंगकी अनुक्रमणिका.

अंग		पृष्ठ	वृत्त.
१	गुरुदेवको अंग प्रारंभः	१	२७
२	उपदेसचिंतामणिको अंगप्रारंभः	१०	३६
३	कालचिंतामणिको अंगप्रारंभः	२२	२६
४	देहआत्माविछोहको अंगप्रारंभः	३०	११
५	तृस्नाको अंगप्रारंभः	३४	१३
६	धीरजउराहनेको अंगप्रारंभः	३७	१२
७	विश्वासको अंगप्रारंभः	४१	१२
८	देहमलिनतागर्वप्रहारको अंगप्रारंभः	४५	५
९	नारीनिंद्याको अंगप्रारंभः	४७	६
१०	दुष्टजनको अंगप्रारंभः	४८	५
११	मनको अंगप्रारंभः	५१	३६
१२	चाणकको अंगप्रारंभः	५९	२२
१३	विप्रीतज्ञानको अंगप्रारंभः	६६	६
१४	वचनविवेकको अंगप्रारंभः	६९	१४
१५	निर्गुणउपासनाको अंगप्रारंभः	७३	८
१६	पतिव्रताको अंगप्रारंभः	७६	७
१७	विरहउराहनेको अंगप्रारंभः	७८	४
१८	शब्दसारको अंगप्रारंभः	७९	१०
१९	भक्तिज्ञानमिश्रितको अंगप्रारंभः	८२	६
२०	विपर्जयशब्दको अंगप्रारंभः	८४	३१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंग		पृष्ठ	छन्द.
२१	सूरातन को अंग प्रारंभः	९२	१२
२२	साधू को अंग प्रारंभः	९६	३०
२३	ज्ञानी को अंग प्रारंभः	१०६	१८
२४	सांख्यज्ञान को अंग प्रारंभः	१११	३७
२५	अपने भाव को अंग प्रारंभः	१२४	१२
२६	स्वरूपविस्मरण को अंग प्रारंभः	१२७	२६
२७	विचार को अंग प्रारंभः	१३६	२१
२८	ब्रह्म निःकलंक को अंग प्रारंभः	१४३	४
२९	आत्मअनुभव को अंग प्रारंभः	१४४	३२
३०	ज्ञान को अंग प्रारंभः	१५५	१४
३१	निरसंसे को अंग प्रारंभः	१५९	४
३२	प्रेमज्ञानी को अंग प्रारंभः	१६०	५
३३	अद्वैतज्ञान को अंग प्रारंभः	१६२	२४
३४	जगतमिथ्या को अंग प्रारंभः	१६९	५
३५	आश्चर्ज को अंग प्रारंभः	१७१	१५
	छन्दसंख्या	५६०	

समाप्तः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री

अथसुंदरदासकृत

सुंदरविलास

सवैया

प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥अथसुंदरविलासलिख्यते॥ ॥अथगुरुदेवकोअंगप्रारंभः॥ ॥इंदवछंद॥ ॥मोजकरीगुरुदेवदयाकरि, शब्दसुनायकह्योहरिनेरो, ज्यौंरविकैप्रगटेनिसिजातसु, दूरकियोभ्रमभानअंधेरो॥ कायकवाचकमानसहूंकरि, हैगुरुदेवहिवंदनमेरो, सुंदरदासकहेकरजोरिजु, दादुदयालकोहूंनितचेरो ॥१॥ पूरणब्रह्मविचारनिरंतरकामनक्रोधनलोभनमोहैं श्रोत्रत्वचारसनाअरुघ्राणसु, देखिकछूकहुनैननमोहैं॥ ज्ञानस्वरूपअनूपनिरूपन, जोसुगिरासुनमोहनमोहैं, सुंदरदासकहेकरजोरिजु; दादुदया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लहिमोरिनमोहैं॥३॥ धीरजवंत अडिग्गजितें-
द्रिय, निर्मलज्ञानगह्योदृढआदू सीलसंतोष
क्षमाजिनकेघट, लागिरह्योसुअनाहदनादू॥
भेषनपक्षनिरंतरलक्षजु, औरनहींकछुवाद
विवादू एसबलछनहेजिनमाहिंसु, सुंदरकेउ
रहेगुरुदादू॥३॥ भोजलमेबाहिजातहुते जि-
न, काढिलियेअपनेकरआदू औरसंदेहमि
टायदियेसब, कानन टेरसुनायकेनादू॥पूरन
ब्रंह्मप्रकासकियापुन, छूटगयोयहवादविवा-
दू एसिकृपाजुकरीहमऊपर, सुंदरकेउरहेगु-
रुदादू॥४॥कोउकगोरषकोंगुरुथापन, कोउ-
कदत्तदिगंबरआदू कोउककंथरकोउकभर-
थर, कोउकबीरकिराषतनादू॥कोउकहेहरि-
दासहमारजु, योंकरिठानतवादविवादू औ-
रतोसंतसबहिसिरऊपर, सुंदरकेउरहेगुरुदा-
दू॥५॥ कोउविभूतजटानषधारी, कहेयहभे-
षहमारोहें आदू॥कोउककानफरायफिरेपुन,को
उकसंगबजावतनादू॥कोउककेसलुचाइकरेव्र-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न, कोउकजंगमकेशिववादू योसबभूलिपरेजि-
नहीतित, सुंदरकेउरहैगुरुदादू ॥ ६ ॥ जोगि
कहेगुरुजैनकहेगुरु, बोधकहैगुरुजंगममानैं
भक्तकहेगुरुन्यासिकहेबन, वासिकहेगुरु
औरबखाने ॥ शेखकहेगुरुसोफिकहेगुरु, या-
हितसुंदरहोतहैरान बाहुकहेगुरुबाहुकहेगु-
रु, हैगुरुसोइसबेभ्रमभाने ॥ ७ ॥ सोगुरुदेव
लिपेनछिपेकछु, सत्वरजोतमतापनिवारी इं-
द्रियदेहमृषाकरिजानत, सीतलतासमताउर
धारी ॥ व्यापकब्रह्मविचारअखंडित, द्वैतउपा
धिसबैजिनटारी। शब्दसुनायसंदेहमिटावत,
सुंदरवागुरुकीबलिहारी ॥ ८ ॥ पूरनब्रह्मबता-
यदियोजिन, एकअखंडितव्यापकसारे राग
रुद्वेषकरेअबकोनसुं, जोअहिमूलवहीसबडा
रे ॥ संशयशोकमिट्योमनकोसब, तत्वविचारक-
ह्योनिरधारे सुंदरसुद्धकियेमलधोइजु, हैगुरु-
कोउरध्यानहमारे ॥ ९ ॥ ज्योंकपड़ाद्दरजीगहि-
व्योंतत, काष्टहिकोबढईकसिआने ॥ कंचनको
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जुझनारकसेपुनि, लोहकोघाटलोहारहिजानें॥
पाहनकोकसिलेतसिलावट, पात्रकुंभारके-
हातनिपानें तेसेंहिशिष्यकसेंगुरुदेवजु, सुंद-
रंदासतवेंमनमाने॥ १०॥ ॥ छंदमनहर॥
सत्रूहूनमित्रकोऊजाकेसबहेसमान, देहकोम
मत्वछांडिआतमाहीरामहे॥ औरहूऊपाधि-
जाकेकबहूनदेषियत, सुषकेसमुद्रमेंरहतआ-
ठोंजामहें॥ रिद्धिअरुसिद्धिजाकेहातजोरिआगे
षरी, सुंदरकहततकेसबहीगुलामहें अधिक
प्रसंसाहमकेसेंकरिकहिसके, एसेगुरुदेवकोह-
मारेजुप्रनामहें ॥११॥ ज्ञानकोप्रकासजाकेअंध
कारभयोनास, देहअभिमानजिनतज्योजानछा
रधी सोईसुखसागरउजागरवैरागरज्यौं, जाके
वेनसुनतबिलातहेंबिकारधी॥ आगमआगाधअ
तिकोउनहिंजानेगति, आत्माकोअनुभवअधिक
अपारधी ऐसेगुरुदेववंदनीकतिहुंलोकमाहिं,
सुंदरविराजमानसोभनउदारधी॥१२॥ काहू-
सोंनरोषतोष काहूसोनरागदोष, काहूसोंनवे-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रभावकाहूसौंनघातहैं काहूंसोंनबकवादकाहूं- सोंनाहींविषाद, काहूंसोंनसंगनतोकाहूपक्षपो- तहैं॥काहूंसोंनदुष्टबैनकाहूंसोंनलेनदेन,ब्रह्मको विचारकछुश्रोरनसुहातहैं सुंदरकहतसोईई सनिकोमहोईस, सोईगुरुदेवजाकेदूसरीनबात- है ॥१३॥ लोहकोंज्यौंपारषपषानहुंपलटलेत, कंच नछुवतहोतजगमेंप्रमानीयें द्रुमकोंज्यौंचंदनप लटोहिलगायवास, श्रापकेसमानताकोंसीतलता श्रानीयें ॥ कीटकोंज्यौंभृंगहुपलटकेकरत- भृंगि, सोउउडिजायताकोंश्रचरजमानियें सुं- दरकहतयहसगरेप्रसिधवात, सदासिसपलटें- सोसदगुरुजानियें॥१४॥ गुरुबिनज्ञाननहींगु- रुबिनध्याननहीं,गुरुबिनश्रातमाबिचारनलहत हें गुरुबिनप्रेमनहींगुरुबिननेमनहीं, गुरुबिन सीलहूसंतोषनगहतुहे ॥ गुरुबिनप्यासनहीं- बूधीकोप्रकासनहीं, भ्रमहुकोनासनाहिंसंसे ईरहतुहें॥गुरुबिनवाटनाहींकोडीबिनहाटना हीं, सुंदरप्रगटलोकबेदयोंकहतुहें ॥ १५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पढेकेनबैठेपास अक्षरनबांचसके, बिनहीपढे तेकैसेआवतहैपारसी॥जौहरिकेमिलेविनपर-रिविनजानेकोई, हाथनगलीयेरहेसंशयनढारसी॥ वैदहूनमिल्योकोऊबुटीकोबतायदेत,भे-दविनुपायेवाके औषदहेछारसी॥ सुंदरकहतसु खरंचहूनदेख्योजाई, गुरुबिनज्ञानज्यौंहीअं-धेरेमेंआरसी॥१६॥गुरुकेप्रसादबुद्धिउत्तमद-साकोगहे,गुरुकेप्रसादभवदुःखबिसराइये गु रुकेप्रसादप्रेमप्रीतिहुअधिकबाढे, गुरुकेप्रसा दरामनामगुनगाइये॥गुरुकेप्रसादसबजोगकी जुगतिजाने, गुरुकेप्रसादसुन्यमेंसमाधिलाइये सुंदरकहतगुरुदेवजोकृपालहोइ, तिनकेप्र-सादतत्वज्ञानपुन्यपाइये ॥ १७ ॥ बूडतमौं सागरमें आयकेबंधावेधीर, पारउलंघायदे-तनावकोज्यौंषेवसों॥ परउपगारीसबजीवनि-केसारेकाज, कबहूनआवेजाकेगुननिकोछेवसों ॥वचनसुनायभयभ्रमसबदूरकरे, सुंदरदिखाय देतअलषअभेवसों आरहुसनेहहिहमनीकेक-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रिदैषेसोधे, जगमेंनकोऊहितकारी गुरुदेवसो॥ १८॥ गुरुतातगुरुमातगुरुबंधुनिजगात॥ गुरुदेवनरंवाशिषसकलसंवास्योहैं गुरुदियेदिव्यनैनगुरुदियेमुरववैन, गुरुदेवश्रवनदेसबदउचास्योहैं॥ गुरुदियेहाथपावगुरुदियेसीसभाव, गुरुदेवपिंड माहींप्रानश्रायडास्यौहै सुंदरकहतगुरुदेवजुकृपालहोई, फिरघाटघडिकरिमोहिनिसतास्यौहैं ॥ १९ ॥ कोऊदेतपुत्रधन कोऊदेतबलधन, कोऊदेतराजसाज देवऋषिमुन्योहैं कोऊदेतजससमान कोऊदेतरसश्रान, कोऊदेतविद्याज्ञानजगतमेंगुन्यौहैं॥ कोऊदेतऋद्धिसिद्धिकोऊदेतनवनिधी, कोऊदेतश्रोरकछूतातेसीसधुन्यौहें सुंदरकहतएकदीयोजिनरामनाम, गुरुसोउदारकोऊदेष्योहेंनसुन्योहें ॥ २० ॥ भोमीहूंकीरेनुकीतोसंरव्याकोऊकहनहें, भारहूश्रठारद्रुमतिनकेजोपातहें मेघनकीसंरव्यासोऊऋषीनकहीबिचार, बुंदनिकीसंरव्यानेऊश्रायकेविलातहें॥ तारनकीसं-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ख्यासोऊकहीहेपुरानमाही, रोमनकीसंख्या पुनिजितनेकगातहें सुंदरजहांलोंजंतु तिनहीं कोआवेअंत, गुरुके अनंतगुनकोपैकहेजात हे॥२१॥ गोविंदकेकियेजीवजातहेरसातलकों, गुरुउपदेसेसोतोछूटेजमफंदतें गोविंदकेकिये-जीववसपरेकर्म, निकेगुरुकेनिवाजेसुफिरतहेस्व च्छंदतें॥ गोविंदकेकियेजीव बूडतभोसागरमे, सुंदरकहतगुरुकाढेदुःखदंदतें औरहूंकहां लोंकछुमुषतेंकहोबनाय, गुरुकीतोमहिमाअ-धिकहेगोविंदतें॥ २२॥ चिंतामनिपारसकलप तरुकामधेनु, औरहुअनेकनिधिवारिवारिना-षियें॥ जोइ कछुदेषीयेसोसकलविनासवंत, बुधिमेंविचारकरिबहुअभिलाषीयें॥ नातेंम-नवचनकरमकरिकरजोरी, सुंदरचरनसीस-मेऊदीनभाषीये॥ बहुतप्रकारतीनोलोकस-बसोधेहम, ऐसीकोनभेटगुरु देवआगेरा-षियें॥ २३॥ महादेववामदेवऋषभकपि-लदेव, व्यासशुकदेवजयदेवनामदेवजु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामानंदसुषानंदकहियेअनंतानंद, सुरसुरानंददहूकेआनंदअछेवज्जु ॥रैदासकबीरदाससोझादासपीपादास, दासहूकेदासभावभावहूकीटेवज्जु॥ सुंदरकहतसंतप्रगटजगतमाहीं, तैसेगुरुदादूदासलागेहरिसेवज्जु॥ २४॥ गुरुदेवसवैपरिअधिकविराजमान, गुरुदेवसबहीतेंअधिकगरिष्टहैं॥ गुरुदेवदत्तात्रयनारदसुकादिमुनि, गुरुदेवज्ञानघनप्रगटबसिष्टहैं॥ गुरुदेवपरमआनंदमयदेषियत, गुरुदेववरवरियानहुवरिष्टहैं सुंदरकहतकछुमहिमाकहीनजाय, ऐसेगुरुदेवदादूमेरेशिरइष्टहैं ॥ २५॥ जोगीजैनजंगमसन्यासीवनवासीबोध, औरकोऊभेषपक्षसबभ्रमभान्योहै ॥ तापसरुऋषीश्वरमुनीस्वरकवीश्वर, सबनिकोमतदेषीतत्वपहिचान्योहैं॥ वेदसारतत्वसारस्मृतिपुरानसार. ग्रंथनिकोसारसोईहृदेमाहिंआन्योहैं सुंदरकहतकछूमहिमाकहीनजाय, ऐसोगुरुदेवदादूमेरेमनमान्योहैं ॥२६॥ जीतेहेजु-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कामक्रोधलोभमोहदूरकिये, औरसबगुननकौं मदजिनभान्योहें उपजैननापकोई सीतलस्वभाव जाको, सबहीमेंसमतासंतोषउरआन्योहें॥का- हूसोनरागदोषदेतसबहीकेतोष, जीवतहीपायोमो क्ष एकब्रह्मजान्योहें॥ सुंदरकहतकछूमहिं माकहीनजाई, ऐसोगुरुदेवदादूमेरेमनमान्यो हें॥ २७॥ ॥ इतिश्रीगुरुदेवकोअंग- संपूर्ण॥१॥ ॥ ॥ अथउपदे- सचिंतामणिकोअंगलिख्यते॥ ॥हंसा लछंद॥ ॥ तोसहिचतुरसुजानपरवीनअति, परेजनिपिंजरेमोहकूआ पायउतमजनमलाय- लेचपलमन, गायगोविंदगुनजीतजूवा॥ आप- हिआपअज्ञाननलनीबंध्यो, विनाप्रभुविमुखकै घेरमूवा दाससुंदरकहेपर्मपदतोलहे, रामहरि रामहरिबोलसूवा॥ १॥ नएससैतानकोआ पनैकैदकर, क्यादूनीमेंफिरेषायगोता, हेगुनः गारभीगुनाहीकरतहैं, षायगामारनबफिरे- रोता॥ जिनुजेषाकसें आजबपेदाकिया,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तूंउसेक्यौं फरामोसहोता दाससुंदरकहै सरम-
नबहीरहै, हक्कतूंहक्कतूंबोलतोता ॥२॥ आष
कीबूंदक्यौंजूदपैदाकिया, नैनमुषनासिकाकरी
जूती षेलऐसाकरै उहीलीयाफिरे, जागकेदेष-
क्याकरेसूती॥ भूलउसषस्मकोंकामतैक्याकि-
या, वेगहियादकरमरनिपूती दाससुंदरकहै स
र्वसुषतोलहैं, भीतुहीभीतुहीबोलतूती॥३॥
अबलवस्तादकेकदमकीषाकहो, हीरसबगु-
जारसबछोडफेना यारदिलदारदिलमाहीतूं,
यादकरहैतुझेपासतूंदेषनैनां॥ जानकाजानहै
जिंदकाजिंदहैं, सुषनकासुषनकछुसमझसे-
ना दाससुंदरकहै सकलघटमेंरहै, एकतूंएकतूं
बोलमैना॥४॥ ॥छंदमनहर॥ ॥
कानकेगएतेकहांकानऐसे होतमूढ, नैनकेगएते
कहांनैनऐसेपाइयें नासिकागएतेकहानासि-
कासुगंधलेत, मुषकेगएतेऐसेमुषकहागा-
इयें। हाथकेगएतेकहांहाथएसोकामहोन, पां
वकेगएतेऐसेपावकितधाइये याहीतेंवि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चारदेषसुंदरकहततोहि, देहकेगएतें ऐसेदेह-
कितपाइये॥५॥वारवारकह्योतोहीसावधान-
क्योंनहोई, ममताकीमोटसिरकाहेकोधरतुहे
मेरोधनमेरोधाममेरोसुतमेरीबाम, मेरेपसुमेरे
गामभूल्योहीफिरतुहे॥ तूंतोभयोबावरोविकाय-
गईबुद्धितेरी, ऐसोअंधकूपग्रेहतामेतूंपरतुहे
सुंदरकहततोहीनेकहुनआवेलाज, कांजकों-
विगारकेअकाजक्योंकरतुहे॥६॥ तेरेतोकोपेंच
पर्योगांठीअतिधूरिगई, ब्रह्माआई छोरेक्योंही
छूटतनजबहू तेलसोंभिजोईकरिचिंथरा-
लपेटराषे, कूकरकूपूछसुधोहोतनहींवबहू॥
सासूदेतसीषबहूकीरीकोगिनतजाई, कहत-
कहतदीनवीतगएसबहू सुंदरअज्ञानीऐसो
छोड्योनहीअभिमान, निकसनमानलगचे
त्योंनहीकबहूं॥७॥वालुमाहीतेलनाहीनिकसत-
काहूविध, पथरनभीजेबहुवर्षतघनहे पा-
नीकेमथेतेकहूंधीवनहींपाइयत, कूकस-
केकूटेकंहूंनिकसतकनहे॥ सून्यहीकीमू-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठीभरीहाथनपरतकछू, उसरसैंबोहेकहानिपजन
अनहै उपदेसअोषदसोंकोनविधिलागेताही,
सुंदरअसाधरोगभयोजाकेमनहे ॥ ८ ॥ वेरीघर
माहीतेरेजानतसनेहीमेरे, दारासुतवितते-
रोषोसिषोसिषायगे अोरहीकुटंबलोग
लूटेंचहूंअोरहीनें, मीठीमीठीबातकहीतोसों
लपटायगे॥संकटपरेगोजबकोईनहिंतेरोतब,
अंतहीकठनवांकीवेरऊठजायगे सुंदरकहत
तांतेजूठोईप्रपंचसब, स्वपनेकीन्याईसबदेष
तविलायगे॥ ९॥वारूकेमंदिरमांहीवैठीरत्धो
स्थिरहोय, राषतहेजीवनकीअासकेऊदीनकी
पलपलछीजतघटतजातघरीघरी, बिनसतवार
कहाषबरनाछिनकी॥ करतऊपायजूठेलेनदेन
षानपान, मूसाइतउतफिरेताकीरहीमीनकी
सुंदरकहतमेरीमेरीकरिभूल्योसठ, चंचलचे
पलमायाभईकिनाकिनकी॥१०॥अवनलेजा
ईकरिनादकीलेडारीफांसी, नेनहूंलेजाईकरिरू
पबसकस्योहे नासिकालेजायकरिबहुतसुं-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गावेगंध, रसनालेजाईकरिस्वाद्मनहस्योहै ॥ त्वचाकुलेजाईकरिनारीसोंस्पर्शकरे, सुंदरकोड्कसाधुठगनितेंडस्योंहै कामठगक्रोधठगलोभठगमोहठग, ठगनीकीनगरीमेंजीवश्राइपस्योहै ॥ ११ ॥ पायोहैमनुष्यदेहश्रौसरबन्योहैश्राई, असीदेहवारवार कहोकहांपाईये भूलतहैबावरेतुअबकेसीयानोहोई, रतनअमुलसीतोकाहेकूंठगाइये ॥ समुझि विचारिकरिठगनिकोसंगत्याग, ठगबाजिदेखीकरिमनन डुलाइये सुंदरकहततातेंसावधान क्यूंनहोई, हरिकोभजनकरिहरिमेंसमाइये ॥ १२ ॥ घरीघरी घटतछीजतजात छिनछिन भीजत,हीगरिजातमाटीकेसोढेलहै भूकतीकेद्वारश्राईसावधानक्योंनहोई, बारबारचढतनत्रियाकोसोतेलहै ॥ करिलेसुकृतहरिभजलेअखंडनर, याहीमेंअंतरपडेयामेंत्र्इस्मेलहै मनुषजनमयहजीतभावेहारअब, सुंदरकहत यामेंजुश्राकोसो षेलहै ॥ १३ ॥ जोवनकोगयोराजश्रौरसबभयोसा-

ज, अपनीदोहाई फेरदमामोबजायोहे लकुटि हथियारलीयेनेनकरढाल दये, स्वेतवारभयोता कोतंबूसोतनायोहे ॥ दसनगएसुमानोदरवानदू रकिये, जोगरिपरिसुआनबिछानोबिछायोहे सीसकरकंपतसुसुंदरनिकास्योरिपु, देषतहीदे षतबुढापोदोरीआयोहे ॥ १४ ॥ देहकोनदेहक छूदेहकोममत्वछांड, देहतोदमामोदीयेदेहदेह जातहे घटतोघटतघरीघरीघटनासहोत, घ- टकेगएतेघटकीनफिरबातहे ॥ पिंडपिंडमाहीपिं डपिंडकोऊपावतहें, पिंडपिंडषातपुनपिंडहिको पातहें ॥ सुंदरनहोयजासोंसुंदरकहतजग, सुं- दरचैतन्यरूपसुंदरविष्यातहें ॥ १५ ॥ ॥
॥ ॥ छंदइंदवजय ॥ ॥ श्रीवत्वचाकटि हेलटकीकचहूपलटेआजहूरतवामी दंतगएमु षकेउपरेनष, रे नगएसुषरोषरकामी ॥ कंपनहू हसनेहसुदंपत, संपनजंपनहेनिसजामी सुं- दरअंतहुभोनतभोनभ, ज्योंभगवंतसकलो- नहरामी ॥ १६ ॥ देहघटीपगभोमीमंडेनही,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औलटियापुनहाथलईजू आंषिहुनाकपरेमु-
रवतेजल, सीसहलेकटिढीचनईजू ॥ ईश्वर-
कौंकबहूनसंभारत, दुषपरेनबहाइदईजू सुं-
दरतोहिविषेसुषवंछत, घोरेगयेपेंबगेनगएजू॥
॥१७॥ पाइअमोलकदेहयहेनर, क्यूंनविचारक
रेदिलअंदर कामहुक्रोधहुलोभहुमोहहु, लूट-
नहेदशहुदिशि इंदर॥ तूंअबवंछतहेसुरलोकहि
कालहुपाइपरेसुपुरंदर छांडिकुबुद्धिसुबुद्धि
हृदेधरि, आतमरामभजेक्युनसुंदर ॥१८॥
इंद्रनिकेसुषमानतहेंसठ, याहिहितेंबहुतेंदुष-
पावे ॥ ज्यौंजलमेंऊषमांसहीलीलत, स्वादब-
ध्योजलबाहिरआवे ॥ ज्यौंकपिमूठनछांडतहे
रसना, वसबंधपर्योविललावे सुंदरक्योंपहि
लेनसंभारत, ज्यौंगुरषाईसुकानविंधावे ॥१९
॥कौनकुबुद्धिभईघटअंतर, तूंअपनेप्रभुसों
मनचोरे भूलगयोविषयासुषमेंसठ, लालचि
लागिरह्योअतिथोरे ॥क्यौंकोऊकंचनछार-
मिलावत, लेकरपाथरसोनगफोरे, सुंदरयानर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देहअमोलक, तीरलगीनौकाकितबोर ॥ २० ॥ देषनकेनरसोभतहेंजैसे, आहिअनौपमकेलिकोषंभा भीतरतोकछुसारनहीसुनि, ऊपरछीलकअंबरदंभा। बोलतहेपरनाहिकछूसुध, ज्यौंहिबयारतेबाजतकुंभा रूसरहेकपिज्यौंछिनमाहिंजु, याहीतेसुंदरहोतअचंभा ॥ २१ ॥ देषनकेनरदीसतहेपरि, लछनतोपसुकेसबहीहें बोलतचालतपीवतषातरू, वेघरवेबनजातसहीहें ॥ प्रातगएरजनीफिरिआवत, सुंदरयोनितभारवहीहे औरतोलछनआईमिलेसब, एकक्मीसिरशृंगनहीहें ॥ २२ ॥ प्रेतभयोकिपिसाचभयोकि, निसाचरसोजितहीतितडोले तूंअपनीसुधभूलगयो, मूषतेकछुऔरकीऔरहीबोले ॥ सोईउपाईकरेजुमरैयचि, बंधनतोकबहूंनहिषोले सुंदरजातनमेहरिपावत, सोतननासकियोमतिभोले ॥ २३ ॥ पेटतेबाहिरहोतहिबालक, आइकेमातुपयोधरपीनो मोहबंध्योदिनाहिदिनआए, तरुनभयोत्रय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केरसभीनो॥ पुत्रप्रपौत्रवंध्योपरिवारसु, एसे-हि भांतिगयेपनतीनो सुंदररामकोनामबिसारकें. आपहिआपकोबंधनकीनो ॥ २४ ॥ मातापितासुतभाईबंध्योजुव, तिकेकहेकहाका-मकरेहें चोरिकरेबटपारिकरेकीर, षीवनि-जीकरिपेटभरेहें॥ सीतसहेसिरघामसहेकहे, सुंदरसोरनमांऊमरेहे बांधीरत्योममतासबसोंनर, याहीतेबांध्योहीबांध्योफिरेहें॥२५॥ तूंठगकेधनओरकोल्यावत, तेरोऊतोघरओरहीफोरे, आगलगेसबहीजरिजाईसू, तूदमरीदमरीकरजोरें॥ हाकमकोडरनाहीनसूजत, सुंदरएकहिवारनिचोरे तूंपरचेनहींआपनिषाइसु, तेरेहीचातूरितोहिलेबोरे॥ २६॥ ॥छंदमनहर॥ ॥ करतप्रपंचइनपंचनीकेबसपर्यो, परदारारतभैनआनतबुराईको परधनहरेपरजीवकीकरेघात, मदमाषषाईलवलेसनभलाईको॥ हांयगोहिसाबतवसुषतेनआवेजाव, सुंदरकहततलेषोलेतराईराईको-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इहांतोकीयेविलाससजमकीननतोहीत्रास, उहांतोन-हिंहेकछूराजपेंपांबाईको॥२७॥ दूनियांकोदोड-ताहे अोरनकोलोडताहे, अोजूदकोमोडताहेवदो ईसराईका मुरगीकोंमोसताहेबकरीकोरोसताहे, गरीबांकोरवोसताहेबेमहेरगाईका॥ जुलमको-करताहेधनीसोंनडरताहे, दोजगकोभरताहेषजा नाबलाईका होयगाहिसाबतब आवेगानजाब कछू, सुंदरकहतगुनेगारहेषुदाईका॥२८॥क रकर आयोजब षरषरकाढ्योनार, भरभरबाज्यो ढोलघरघरजान्योहे दरदरदोस्योजायनरनरआ गेदीन, बरबरबकतननेक अलसांन्योहे॥सरस रसोधेधनतरतरतोरेपान, जरजरकाटतआधिक मोदमान्योहे फरफरफूल्योफिरेडरडरपेनमूढ, हरहरहंसतनसुंदरसंकान्योहे॥२९॥ जनमासिरान्योजाई भजनविमुषसठ॰ काहे-कोभवनकूपबिनमीचमरेहें गहतअविद्या जानिसुकनलनीज्योमूढ, करमअौषि-करमकरतनडरेहे॥ आपहीतेंजानअं-

धनरकमेंबारबार, अजहुंनसंकमनमाहींअबकरे हें दुखकोसमूहअवलोकके नत्रासहोइ, सुंदर कहतनरनागपासपरेहें ॥ ३० ॥ जूठोजगएनसु-ननित्यगुरुबेनदेषें, आपनेंहुनेंनतोऊअधरहे-ज्वानीमें केतेरावराजारंकभयेरएचलागए, मि-लगएधूरमाहींआएतेकहानीमें ॥सुंदरकहतअ बताहीनसुरतआवे, चेतक्यौंनमूढचितलायहि-रदानीमें. भूलेजनदावजातलोहकेसोतावजात, आवजातएसेजेसेंनावजातपानीमें ॥ ३१॥जग मगपगतजिसजिभजिरामनाम, कामक्रोधतनमनघेरिघेरिमारियें ऊठमूढहठत्यागजागभाग सुनिपुनि, गुनज्ञानआनिआनवारिवारिडारीयें। गहीताहीजाहीसेसईससिसुरनर, औरबातहे ततातफेरिफेरीजारीयें सुंदरदरदषोईधोईधो ईबारबार, सारसंगरंगअंगहेरिहेरिधारीये॥ ॥३२॥ ॥छंददुमीला ॥हठजोगधरों नजातभिया, हरिनामबिनामुषधूरपरे सठसो गहरोछिनगातकिया: चरिचामबिनाभुषपूरिजरे:

भटभोगपरोघनघातधीया अरिकामकिनासु-
षजूरिमरें मठरोगकरोधनधातहिया, परराम्नति
नादुषदूरकरे॥३३॥गुरुज्ञानगह्यतिसोईसुषी,
भ्रममोहतजेसबकाजसरे धुरिध्यानरहेपतिषो-
इसुषी, रनलोहबजेतबलाजपरे॥सुरतानननहेहति-
दोषदुषी तनछोहसजेअबआजमरें पुरथानलहे
मतधोइरुषी जनबोहरजेजबराजकरें॥ ३४ ॥
॥ ॥छंदमनहर॥ ॥ काहेकौंफिरतनरभटकतठो
रठोर डागुलेकीदोरदेषीदोरसबजानीये जोगजज्ञ
जपतपतीरथव्रतादिकनि, तिनहूकोफलसोऊसि-
ध्याइबखानीये ॥ सकलउपाइतजिएकरामरामभ
जि, याहीउपदेससुनिहृदेमाहीआनीये॥नाहीतें
समुझिकरिसुंदरविश्वासधरि. औरकोऊकहेकछू
ताकीनहींमानीयें॥३५॥ ॥छंदइंदव॥ ॥
संतसदाउपदेसबतावत, केंससबेसिरस्वेतभएहें
तूंममताअजहूंनहींछांडत, मातहूआयसंदेशदयें-
हें॥आजकेकालचलेऊठमूरष तेतोदेषतकेतें-
गएहें ॥ सुंदरक्यौंनहिरामसंभारत, वाज-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गमैकहोकोनरहेहे ॥ ३६ ॥ ॥ इतिउपदेसचिं-तामणिकोअंगसमाप्तः ॥ २ ॥ ॥ ॥

अथकालचिंतामणिकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंद इंदव ॥ ॥ मंदिरमहलविलायतहेगज, ऊठददा-मादिनाइकदोहें तातहूमांतत्रियासुतबंधव, देष-धूपामरहोतबिछोहें ॥ झूठप्रपंचसोराचिरह्योसठ काठकिपूतरीज्यौंकपिमोहें मेरीहिमेरीकहेनित सुंदर, आषिलगेकहिकोनकोकोहे ॥ १ ॥ एमेरे-देसविलायतहेगज, एमेरेमंदीरएमेरेथाती ॥ एमे रेमातपितापुनिबंधव, एमेरेपूतसोएमेरेनाती ॥ ए-मेरीकामनिकेलकरेंनित, एमेरेसेवकहेदिनरा-ती सुंदरवेसेंहिछांडगयोसब, तेलजरयोरबु-झुझीजबबाती ॥ २ ॥ तेदिनचारबिश्रामलियोस ठ, तेरेकहेकछूव्हेगईतेरी जेसेहीबापदादा गएछांडिकै, तेसेहीतूंतजिहेंपलफेरी ॥ मारिहेकालचपेटअचानक होईघरीकमेरा-षकीढेरी सुंदरलेनचलेकछूएसंग, भूली-कहेनरमेरीईमेरी ॥ ३ ॥ केयहदेहजरायकेछार,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कीयाकिकीयाकिकीयाकिकीयाहैं केयहदेहज
मीमहिगारी, दीयाकिदीयाकिदीयाकिदीयाहैं॥
केयहदेहरहेदिनचार, जीयाकिजीयाकिजीया
किजीयाहैं सुंदरकालअचानकआई, लीया-
किलीयाकिलीयाकिलीयाहै ॥४॥ देहसनेहन-
छांडतहेनर, जानतहे थिरहेयहदेहा छीजन
जायघटेदिनहीदिन, दीसतहे घटकोनितछेहा
॥ कालअचानकआयगहेकर, ढाहगिराईकरे
तनषेहा सुंदरजानियहे निहचेधरि, एकनिरं-
जनसोकरिनेहा ॥५॥ तूंकछु औरविचारतहेन-
र, तेरोविचारधस्यौइरहेगा कोटिउपायकरेध
नकेहित, भागलिख्योतितनोइलहेंगा॥ भोरकि
सांऊधरीपलमाऊस, कालअचानकआइग
हेगा रामभज्योनकीयौनाहिंसुकृत, सुंदरयोंप
छिताइरहेगा॥६॥ भूलिगयोहरिनामकोतूं-
सठ, देसधोंकोनसंजोगवन्योहे कालअचान-
कआएगहे कंठ, पेषधोंजूठोहितानोतन्योहे॥
छारकरेसबधामकोंलूटि, अनादिकोंएसेही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवहन्योहे कोऊनहोतसहाइकुटुंब, अनादि-
कोसुंदरथूंहिसुन्योहे ॥७॥ बीतगए पिछलेसब
हीदिन,आवतहेआगलेदिंननेरे कालमहाबलवं
तबडोरिपु, सोधरत्योसिरऊपरनेरे ॥एकधरीम-
हिमारिगिरावत, लागततांहीकछूनहिंबेरे सुंदरसं-
तपुकारकहेसब, हूंपुनितोहिकहोंअबटेरे ॥८॥
सोधरत्योकहांगाफल व्हेकरि, तोसिरऊपरकाल
दहारे धामसधूमसलागिरत्योसठ, आइअचा-
नकतोहिपछारे ॥ज्योंवनमेंमृगकूदतफंदत, चित्र
गलेनषसोउरफारे सुंदरकालडरेजिनकेडर, ताप्र
भुकोंकहुंक्योंनसंभारे ॥९॥ चेतनक्योंनअ-
चेतनओंधत, कालसदासिरऊपरगाजे रोकिरहे-
गढकेसबद्वारनि, तूंतबकोंनगलीव्हेभाजें॥आ
इअचानककेंसगहेजब, याकरिकेपुनितोहिजुला
जे सुंदरकोनसुहायकरेजब, मुंडहिमुंडभरा
भरवाजें ॥१०॥ तूंअतिगाफलहोइरत्योसठ, कुं-
जरज्योंकछुसंकनआनें माथनहीतनमेंअपनो-
बल, मत्तभयोविषयासुषठाने ॥ वोसत बातस-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेदिनबीतत्त, नीतअनीतकछुनाहिंजाने सुंदर-
केहरिकालमहारिपु, दंतउषारिकुंभस्थलमानें॥
११॥मातपिताजुवतीसुतबंधव, आइमिल्योइन
सेंसनबंधा स्वारथकेअपनेअपनेसब, सोयह-
जानतनाहिनअंधा॥कर्मविकर्मकरेतिनकेहित,
भारधरेनितअपनेकंधा अंतविछोहभयोसबसों
पुन, याहींतेसुंदरहेजगअंधा॥१२॥ ॥छंदम-
नहर॥ ॥करतकरतधंधकछूबेनजानेअंध, आ
वतनिकटदिनआगलेचपाकदे जेसेबाजतीनरकुं
दाबतहेअचानक, जेसेंबकमछरीकोलील तलपा
कदे॥जेसेंमक्षिकाकीघातमकरिकरत आय, जेसे-
सांपमूसकसोंग्रसतगपाकदे चेतरेअचेतनर-
सुंदरसंभारराम, एसेतोहीकालआयलेईगोट
पाकदे॥१३॥मेरोदेहमेरोगेहमेरोपरिवारसब, मेरो
धनमालमेतोबहुविधभरोहुं मेरेसबसेवकहूंक-
मकोऊमेटेनाही, मेरीजुवतीकेमेतोअधीकपिया
रोहुं॥ मेरोबसऊंचोमेरोबापदादाएसेभये,
करतबडाईमेतोजगतउजारोहुं सुंदरक-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हतमेरोमरोकरिजानेसठ, ऐसेनहींजानेमेंतोका लहीकोचारोहूं ॥१४॥ जबतेंजनमधस्योतबहीतें भूलपस्यो, बालापनमाहीं भूल्योसमझ्योनरुषमें जोवनभयोहैजबकामबसभयोतब, जुवतीसोंएकमेकभूलीरह्योरुषमें॥ पुत्रहू प्रपौत्रभएभूल्यो तबमोहबांध, चिंताकरिकरिभूल्योजानेनदीदुषमे सुंदरकहतसबतीनोपनमाहीं भूल्यो, अंतपुनिजोइपस्योकालहीकेमुषमें॥१५॥ ऊठत बैठत कालजगतसोवतकाल, चलतफिरतकालकाल उरधस्याहैं कहतसुनतकालषातहूं पीवतकाल, कालहीकेगालमाहीं हरहरहर पोहैं॥ तातमातबंधुकालसुतदारागृहकाल, सकलकुटंबकालकाल जालफस्योहैं सुंदरकहतएकरामबिनसबकाल, कालहीकोकृतकियो अंतकालग्रस्योहैं॥ १६॥ जबतेंजनमलेनतबहीतें आयुघटे, माईसोंकहतमेरोबडोहोतजात आजऔरकाल औरदिनदिनहोतऔर, दोस्योदोस्योफिरत षेलत अरुषातहैं॥ बालपनजीत्योजबजोवनलग्योहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आई, जोवनहू बीते बूढोडोकरोदीषातहे सुंदरक
हतएसे देषतही बुझिगयो, तेल घटगएजेसे दीप
कबुझातहें ॥ १७ ॥ सबकोऊ ऐसे कहेकालहमका
टतहें, कालतो अरवंडनाससबकोकरतुहे जाकेभ
यब्रह्मापुनहोलहें कंपायमान, जाके भयअसुरसुर
इंद्रऊडरतुहे ॥ जाके भयशिव अरु शेषनागतीनो
लोक, केईककल्पबीतेलोमसपरतुहे सुंदरकह-
तनरगरबगुमानकरें, तूंतो सठपल पल कनिमें-
मरतुहे ॥ १८ ॥ कालसो बलवंतकोऊनहीदेषीयत,
सबकों करत अंतकाल महाजोरहें कालहिको-
डरसुनि भग्यो मूसापेकंबर, जहांजहांजाईतहांत
हांवाको घोरहें ॥ कालभयानकभयभीत सबकीये
लोक, स्वर्गमृत्यु पातालमेंकालहीकोसोरहें का-
लहीकोकाल एक सुंदर अरवंडब्रह्म, वासोकाल-
डरेजोइचल्योवहीओरहें ॥ १९ ॥ वरषाभएतेजेसें
बोलतभंभीरीस्वर, षंडनपरतकहूंने कहूं नजानी
ये ॥ जेसेपुंगीवाजत अषंडस्वरहोतपुनि, ताहूमे
नअंतरअनेकरागगानीये ॥ जैसेकोईगुडीको-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चढावतगगनमाहीं, नाहूकीसुधुनीसुनियेसेहीव-षानीयें सुंदरकहततेसें कालको प्रचंडवेग, शत-दिनचल्योजाइ अचरजमानीये ॥ २० ॥ मायाजोर-जोरनरराषतजतनकरि, कहतहेएकदिनमेरेकाम आईहे तोहीतोमरतकछूवारनहींलागेसठ, देष-तहीदेषतबलूलासोबिलाइहें ॥ धनतोधस्योहीरहे चलतनकोडीगहे, रीतेहाथनिसेंजेसो आयोतेसोजाई ह : करीलेसुकृतयहबेरीयांनआवेफिरी, सुंदरक हतनरपुनिपछताईहें ॥२१॥ बावरोसुभयोफिरेबा-वरीहीबालकर, बावरोज्योंदेतयाकूलागतबुरानेहें। मायाकोउपायजानेमायाकीचातुरीठाने, मायासेम-गनआनिमायालपटानोहें ॥जोबनकेमदमातोगि-नतनकोउनातो, कामबसकामनीकेहाथहिबि-कानोहें अतहिभयोबेहालसूजतनमाथेकाल, सुंदरकहतएसोआरकोदिवानोहें ॥ २२ ॥ झूठे धनझूठोधामझूठोसुषझूठोकाम, झूठीदेहझू-ठोनामधरीकेभुलायोहें झूठोतातझूठीमातझूठे सुतदाराभ्रांत, झूठोहितमानमानझूठोमानलायोहें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झूठोलेनझूठोदेनझूठोमुषबोलेवेन, झूठेझूठेकरेफेन झूठीहीकोधायोहें झूठहीमेंएनोभयोझूठीहीमेंपच गयो. सुंदरकहतसाचकबहूनआयोहें ॥२३॥ ॥

॥दीर्घाक्षर॥ ॥झूठेहाथीझूठेघोराझूठाआगेझूठादोरा, झूठाबांध्याझूठाछोराझूठाराजारानीहें झूठीकायाझूठीमायाझूठाझूठेधंधेलाया, झूठामूआझूठाजीआझूठीयाकीवानीहें॥झूठासोवेझूठाजागेझूठाझूजेझूठाभागे, झूठापीछेझूठाआगेझूठेझूठीमानीहें झूठालीयाझूठादीयाझूठाषायाझूठापीया, झूठासोदाझूठाकीयाऐसाझूठामानीहें॥ २४ ॥

॥मनहरछंद॥ ॥

झूठयोंबंध्योहेजालताहीतेग्रसतकाल, कालविकरालव्यालसबहीकोषातहें नदीकोप्रवाहचल्योंजातहेसमुद्रमाहीं, तेसेजगकालहीकेमुषमेंसमातहें॥ देहसोंममत्वतानेंकालकोभेमानतहें, ज्ञानउपजेतेवहिकालहूविलातहें सुंदरकहतपरिब्रह्महेंसदाअखंड, आदीमध्यअंतएकसोईठहरातहें॥२५॥

॥छंदइंदव॥ ॥कालउपाव-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नकालषपावत, कालमिलावतहे गहीमाटी का-
लइलावतकालचलावत, कालसिषावतहे सब-
आटी॥कालबुलावतकालभुलावत,कालडुबावतहे
वनघांटी सुंदरकालमिटेजबहीपुनि, ब्रह्मवि-
चारपढेजबपाटी॥२६॥ ॥इतिश्रीकालचिं
तामणिकोअंगसमाप्तः॥३॥ ॥छ॥ ॥
अथदेहआत्माबिछोहकोअंगप्रारंभः॥ ॥
छंदइंदव॥ ॥वेअवनारसनामुषवेसेही, वेसेही
नासिकवेसेहींअंषी वेकरवेपगवेसबद्वारसु,वे
ससीषहीरोमअसंषी॥वेसेहीदेहपरिपुनिदीस
त, एकविनासबलागतपंषी सुंदरकोउनजानि
सकेयह, बोलतहोसुकहांगयोपंखी॥१॥बो-
लतचालतपीवतषावत, सीचतहेद्रुमकोजेसेमा
ली लेतहूदेतहूदेषतरीझत, तोरततानबजावत
ताली॥ जामहीकर्मविकर्मकीयेसब, यहदेह
परीअबठाली सुंदरसोकितहूनहींदीसत, षेल
गयोइकषेलसोंख्याली॥२॥मातपिताजुवति-
सुतबंधव, लागतहेसबकोअतिप्यारो लोककुं-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टबषरोहितराषत, होईनहींहमतेकछुंन्यारो॥ देहसनेहतहांलगजानहुं, बोलतहेसुषसब्दउचारो सुंदरचेतनशक्तिगईजब, वेगिकहेघरबारनिकारो॥ ३॥ रूपभलोतबहीलगदीसत, जोलगबोलतचालतआगे पीवतषातसुनेअरुदेषत, सोईरहेउठिकेपुनिजागे॥ मातपिताभईयामिलिबेठत, प्यारकरेजुवतिगरलागें सुंदरचेतनशक्तिगईजब, देषतताहीसबेडरभागे॥ ४॥ ॥छंदमनोहर॥ ॥कोनभांतकरतारकीयोहेंशरीरयह, पावककेमाहीदेषोपानीकोजमावनो. नासिकाश्रवननेंनवदनरसनवेन, हाथपावअंगनषसिपकोबनावनों॥ अजबअनूपरूपचमकदमकओप, सुंदरसोभतअतिअधिकसुहावनो जाहिहिनचेतनशकतिजबलीनहोइ, ताहीछिन्नलगतहेसबकोंअभावनों॥ ५॥ मृतकाकोपिंडदेहताहीमेंजुगतिभई, नासिकानयनमुषश्रवनबनायेहें सीसपावहाथअरुअंगुरीविराजमान, अंगुरीकेआगेपुनिनषहुलगायेहें॥ पेटपीठछातीकंठचिबु-

कन्अधरगाल, दसनरसनबहुबचनसुनायेहैं सुं
दरकहतजबचेतनासगतिगई, वहेदेहजारीबारी-
छारकरीआएहैं॥ ६॥ देहतोप्रगटयहज्योंकीत्यों
कीजानीयत, नेनकेऊरीकेमांहीजाषतनदेषीये ना-
केऊरोकेमाहिंनेकनसुवासलेत, कानकेऊरोषेमाहीं
सुनततनलेषीयें॥ मुषकेऊरोषेसेनबचनउचारहो-
त, जीभहूकोषटरसस्वादनविसेषीये सुंदरक-
हत कोऊकौनविधिजानेनाहीं षीरोकारोकाहू-
हाराजातो हूंनपेषीयें॥ ७ ॥ नाततोपुकारेछा
तीकूटिकूटिरोवतहैं, बापहू कहतमेरोनंदन क-
हांगयो भईयाहुकहतमेरीबाह आजदूरभई,
बहनकहतमेरोवीरदुषदेगयो ॥ कामनीकहत
मेरेसीससिरताजकहां, उनततकालहायषा-
यरंडापोलद्यो सुंदरकहत कोऊताहीनहींजा
नीसके, बोलतहुतोसोयहछिन्नमेकहांगयो
॥ ८ ॥ रजअरुवीरजकोप्रथमसंजोगगयो, चेत-
नासकतितबकोनभांतिआईहैं कोऊएककहेबा
जमध्यहिकीयोप्रवेस, किनहूकपंचमासपीछेकेसु

नाईहें॥ देहकौंविजोगजबदेषतहीहोईगयो, तब कहोकोनकहांजाइकेसमाईहें पंडितहीऋषीस्वर तपेस्वरमुनीस्वर, सुंदरकहतयहकिंनहुंनपाइहें॥९॥ तबलोहीक्रियासबहोतहेंविवधभांति, जबलग घटमाहिचैतन्यप्रकासहें देहकेअसक्तभयेक्रियासबथकीजाय, जबलगस्वासचालेतबलगआसहे॥ स्वासहूथक्योहेजबरोवनलगेहेतब, सबकोऊकहे अबभयोघटनासहे काहूनहींदेष्योकिहिवोरकी नकहांगयो, सुंदरकहतयहीबडोईतमासहें॥१०॥ देहतोस्वरूपतोलोंजोलोहेअरूपमांहि, सबकोऊआदरकरतसनमानहें टेढीपागबांधीबारबारहिमरोडेमूछ, बाहूऊसबारेआतिधरतगुमानहें॥ देसदेसहीकेलोकआयकेहजूरहोई, बैठकरतषतकहावेसुलतानहें सुंदरकहतजबचैतनासकतिगई, ऊहेदेहताकीकोऊमानततन आनहे॥११॥ ॥ ॥ इतिदेहआत्मादिछोहकोअंगसमाप्तः॥४॥ ॥छ॥ ॥अथतृसनाकोअंगमारंभः॥ ॥छंदइंदव॥ नेनननकीपलहीपलमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षण, आधघरी घटिकाजुगईहै जामगयौ-जुगजामगयौपुन, सांझगईतबरातभईहै ॥ आजगई अरुकालगईपर, सोंतरसोंकछुओरटईहे सुंदरऐसेंहीआयुगई, तृसनादिनहीदिनहोतनईहै ॥ १ ॥ ॥ दुमेलाछंद ॥ ॥ कनहीकनकोंबिललातफिरेसठ, जाचतहेंजनहीजनकोंतनहीतनकोंअतिसोचकरेनर, षातरहे अनहीअनकों ॥ मनहीमनकीत्रसनानमिटीपुनि, धावनहे धनहीधनकों छिनहीं छिनसुंदर आयुघटी, कबहूंनगयोवनहीबनकों ॥ २ ॥ ॥ इंद्वछंद ॥ ॥ जोदसवीसपचासभए सत, होईहजारतोलारवमगेगी कोटिअरब षरबअसंष, पृथ्वीपतिहोनकीचाहजगेगी ॥ स्वर्गपतालकोराजकरो. त्रसनाअधिकीअतिआगलगेगी ॥ सुंदरएकसंतोषविनासठ, तेरीनोभूषकदीनभगेगी ॥ ३ ॥ लाषकरोड अरब्बषरब्बनि, नीलपदंम्मतहांलगषादी जोरहिजोर भंडार भरैसब, औररहीसुजमीतरडाटी ॥ तोहूनतो-

हीसंतोषभयोसठ, सुंदरतेअसनानहीकाटी
सूजतनाहिनकालहितोसिर, मारिकेथांपमिला
इतमाटी॥ ४ ॥ भूषलियेदसहूदिसिदोरत, ना-
हीतेंतूंकबहूनअघैहें, भूषभंडारभरेनहीकेसेंकु,
जोधनमेरकुमेरलोंपैहैं॥ तूंअबआगेहिहाथपसा
रत, याहीतेंहाथकछूनहींऐहैं सुंदरक्यौंनहितो-
षकरेनर, षाईकेषाईकितोईकषैहैं॥५॥ भूषन
चावतरंकहिरावही, भूषनचाईकेविश्वविगोई
भूषनचावतइंद्रसुरासुर, औरअनेकजहालग
जोई॥ भूषनचावतहैअधऊर्धहि, तीनहूलोग
गिनेकहांकोई सुंदरजाइतहांदूषहीदुष, ज्ञान
विनानकहूंसुषहोई॥ ६ ॥ पेटपसारदीयोजि-
तहीतित, तेयहभूषकितिएकथापी बोर-
नछोरेकछुनहिआवत, सेबकुभांतभलीवि-
धमापी ॥ देषतदेहभयेसबजीरन, तूंनितनो-
तनआहीअघापी सुंदरतोहीसदासमफाव
त, हेअसनाअजहूनहींधापी॥७॥ तीनही-
लोकआहारकीयोसब, सातसमुद्रपीयोसब-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पानी औरजहांतहांताकतडोलत, काढतआ
षंडरावतप्रानी ॥दांतदिषावतजीभहलावत,या
हीतेमेंयहडाकिनिजानि सुंदरषातभयेकित-
नेदिन, हेअरसनाअजहूनअघानी॥८॥पांवप-
तालपरेगएनीकस, सीसगयोअसमानअंधेरो
हाथदसोदिसकोंपसरेपुनि, पेटभरेनसमुद्रस
मेरो ॥ तीनहूंलोकलीएमुषभीतर, आंषिहुकान
बंधेचहुंफेरो सुंदरदेहधर्योअतिदीरघ, हेअ-
सनाकहूं छेहनतेरो ॥९॥ वादग्रथाभटकेनिसि
वासर, दूरकियोकबहूनहिधोषा तूंहतीपार
निपापनिकोढनि, साचकहूंमतमानहुरोषा ॥तोई
मिलेतबतेहोईबंधन, तूंमरिहेंतबहीहोईमोष सुं
दरऔरकहांकहीयेतूंहि, हेअरसनाअबतोकर-
तोषा॥१०॥ क्योंजगमाहीफिरेऊषभारत, स्वा
रथकोनपरीजिहिजोले ज्योंहरिघाईगऊनहिमा
नत, दूधदोत्योकछूसोपुनढोले ॥तूंअति-
चंचलहाथनआवत, नीकसजाईनहीमुषबो
ले सुंदरतोहिकत्योकितनीबिर, हेअरसनाअ

बतूंमतडोले ॥ ११ ॥ नेकोईकान धरीनहींएककहूं, बोल बोलतपेटहिपाक्यों हूंकोईबातबनाईकहों जब, नेतबपीसतहीसबफाक्यो ॥ केनेकधौंसभएपरबोधत, नेंअबआगेहीकोंरथहांक्यो सुंदरसीषगईसबहीचलि, हेअसनाकहिकेंनोहीथाक्यो ॥ १२॥ तूंहीअमायमदेसपठावत, बूडतजायसमुद्रहिराजा तूंहीअमायपहारचढावत, बादब्रथामरिजाइअकाजा ॥ नेंसबलोक अमायभलीविध, भांढकियेसबरंककुराजा सुंदरनोइदुषाईकहोअब हेअसना तोहीनेकुनलाजा ॥ १३॥ ॥ ॥ ॥ इतिनृसनाकोअंगसमाप्तः ॥ ५॥ ॥ ॥ ॥ ६७॥ ॥ अथधीरजउराहनेकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥

पावदियेचलनेफिरनेकहूं, हाथदियेहरिकृत्यकराये कानदियेसुनियेहरिकेजस, नैनदियेतिनमार्गदिषाये ॥ नाकदियेमुषसोभतताकरि, जीभदईहरिकोगुनगाये सुंदरसाजदियेपरमेश्वर, पेटदियोपरपापलगाये ॥ १॥ कूपभरेअरुवा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चभरेपुन, नालभरेवरषाऋतुतीनो कोठीभ-
रेघटमाटभरेघर, हाटभरेसबहीभरिलीनो ॥ षं
डकघासबषारभरेपरि, पेटभरेनवडोदरदीनो,
सुंदरतीतो ईरीतोरहेयह, कौनषडापरमेश्वरकी
नो ॥२॥ ॥मनहरछंद॥ ॥कीधोंपेट
चूलोकीधोभाठीकीधोभारअहीं, जोईकछूऔं:
कियेसुसबजरिजातुहे किधोंपेटथलकिधोंबा-
विकिधोंसागरहि, जेतोजलपरैतेतो सकलसमा
तुहे ॥किधोंपेटदैतकिधोभूतप्रेतराषसहे,
षाऊंषाऊंकरेकछूनेकनअघातुहे सुंदरकहत-
प्रभुकोंनपापलायोपेट, जबहीजनमभयोतबही
कोषातुहें॥ ३ ॥ विग्रहतोविग्रहकरतअतिघार
वार, तनपुनितनकनकबहूअघायोहे घटन-
भरतक्योंहीघट्योहीरहतनित, शरीरासिराईसेतो
कलहुनषायोहें॥ देहदेहकहतहीकहतजनमगी-
त्यो; पिंडपिंडकाजानिसदिनललचायोहे पुदग-
लगलनगलतनअपतहोई, सुंदरकहतवपुको-
नपापलायोहें ॥४॥ पाजीपेटकाजकोदवाल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोआधीनहोई, कोटवालसोतोसिकदारआगेदी-
नहे सिकदारदीवानकेपीछेलग्योडोलेपुंनी, दी-
वानहूंजायपातसाह आगेलीनहे ॥ पातसाहकहे
याषुदायमुजेओरदेई, पेटहीपसारेवहीपेटबन्न
कीनहे सुंदरकहतप्रभुक्योंहिनहीभरेपेट, ए
कपेटकाजएक एककोआधीनहे ॥ ५ ॥ तेंतो
प्रभुपेटदीयोजगतनचायेजिन, पेटहीकेलीयेघ
रघरद्वारफिस्योहे पेटहीकेलीयेहाथजोरीआ-
गेठाढोहोई, जोईजोईकह्योसोईसोईऊनक-
स्योहे ॥ पेटहीकेलियेपुनीमेघसीतघामसहे, पे-
टहीकेलीयेजाईरनमाहीमस्योहे सुंदरकहतइन
पेटसबभांडकीयो, औरगेलछूटेपरिपेटगेल-
पस्योहे ॥ ६ ॥ पेटसोनबलीजाकेआगेसबहार-
चले, रावआरुरंकएक पेटजीतोलीयेहे कोउवा-
घमारतबिडारतहेंकुंजरको, एसेसुरवीरपेटका
जपानदीयेहें ॥ जंत्रमंत्रसाधनआराधनमसान
जाई, पेटआगेडरतनिडरएसेहीयेहें देवताअ
सुरभूतप्रेतलीनोलोकपुनि, सुंदरकहतप्रभुपे-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टजेरकीयेहैं ॥७॥ प्रातहीउठतजब पेटहीकी-
चिंतातब, सबकोऊजातु आपु आपके अहार-
कों कोऊअन्नवात पुनिआमिषभषतकोऊ, को
ऊघासचरतचरत कोऊदारकों ॥ कोऊमोतीफल
कोऊवासररसपयपान, कोऊपौनपीवतभरतपे-
टभारकों सुंदरकहतप्रभुपेटहीभ्रमाएसब, पे-
टतुमेदीयोहैजगतहोनध्यारकों ॥८॥ ॥छंद
इंदव॥ ॥पेटकेकारनजीवहनेबहू, पेटहीमां
सभषेरुसुरापि पेटहीलेकरचोरीकरावत, पेट
हीकोंगठरीगहीकापी ॥पेटहीपासगरेमहिडार
न, पेटहूडारतकूपरूवापी सुंदरकाहेकोंपेटदि
योप्रभु, पेटसोंऔरनहींकोईपापी ॥९॥ और
नकोप्रभुपेटदियोतुम, तेरेंतोपेटकहूंनहीदीसे
ए भटकाईदीयेदसहूदिस, कोउकरोधनकोउ-
कपीसे ॥पेटहीकारननाचतहेंसब, ज्यौंघरही
घरनाचतकीसे सुंदरआपनषावहुपीवहु, को-
नकरीइनऊपररीसे ॥१०॥ ॥छंदमनहर॥
काहेकोंकाहूकेआगेजायकेआधीनहोई, दीन-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीनबचनउचारमुषकहते जिनकोंतोंमद्अरुगर बगुमानअति, तिनकेकठोरबेनकबहूनसहते ॥ तूं-मारेई भजनसोंअधिकलौलीनअति, सकलकों त्यागिकेएकांतजाइगहते सुंदरकहतयहीतुमहील गायोपाप, पेटनहूतोतोप्रभुबैठेहमरहते ॥ ११॥ पेटहीकेवसरंकपेटहीकेवसराव, पेटहीकेवसओ रषानसुलतानहें पेटहीकेवसजोगीजंगमसन्या-सीशेष, पेटहीकेवसबनवासीषातपानहें॥ पेटही केवसऋषिमुनितपधारिसब, पेटहीकेबससि धसाधकसुजानहें सुंदरकहतनहीकाहूकोगु मानरहें, पेटहीकेवसप्रभुसकलजिहानहें॥ १२॥ ॥इतिधीरजउराहनकोअंगसमाप्तः॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥अथवि-श्वासकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदइंदव॥ ॥होइ-निचिंतकरेमतचिंतहि,चाचदईसोईचिंतकरेगो पांव पसारपर्योकिनसोवत, पेटदीयोसोईपेट भरेगो ॥ जीवजितेजलकेथलकेपुनि, पाहनमेंपहुंचाय धरेगो, भूषहीभूषपुकारतहेमर, सुंदरतूंक-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हां भूषमरेगो ॥१॥ धीरज धारि विचार निरंतर तो-
ही, रच्यौं सोई आपु ही ऐहैं जेती क भूष लगी घ-
रमा नहिं, तेतिक तूं अनयास हि पैहैं ॥ जो मनमें
त्रसना करि ध्यावत, तो तिहुं लोक न षात अघैहैं सु-
दर तूं मत सोच करै कछु, चंच दई जिन चून हि दैहैं
॥२॥ नेकु न धीरज धारत है नर, आतुर होइ द-
सो दिस धावें ज्यौं पसु षेंच लोडावत बंधन, ज्यौं-
गि नीर अहार न आवें ॥ जानत नाहीं महा सति मू-
ष, जा घर द्वार धनी पहुंचावे सुंदर आप कियो घट
भाजन, सो भरि है मत सोंच उपावे ॥ ३ ॥ भाजन
आप घडे जिनने भरि, हैं भरि हैं भरि हैं भरि हैं जू
गावत है जिनके गुन कौं टरि, हैं टरि हैं टरि हैं टरि है
जू ॥ आदिहुं अंतहूं मध्य सदा हरि, है हरि है हरि
है हरि है जू सुंदर दास सहाय सही करि, है करि हैं
करि हैं करि है जू ॥४॥ काहे कों दोरत है दसहू दिस,
तूं नर देषि कियो हरिजू को बैठि रहै दुरि कें मुष मूं-
दि, उघारत दांत षवाइ है टू को ॥ गर्भ थके प्रति
पाल करी जिन, होइ रह्यो तबही जड मूको सुंद-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रह्यौंविललातफिरे, अबराषरिदैविसवासप्रभुको ॥ ५॥ ज्यादिनतैंप्रभवासतज्यौनर, आईअहारलीयोनबहीको षातहींषातभएइतनेदिन, जाननताहिनभूषकहीको॥दोरतध्यावतपेटदिषावत, तूंसठकीटसदाअनहीको सुंदरक्यौंविसवासनराषत, सोप्रभुविश्वभरैकबहीको ॥ ६॥ षेचरभूचरजेजलकेचर, देतअहारचराचरपोषे वेहरिजूसबकोंप्रतिपालत, ज्योंजिहिभांतिनिसीविधतोषें ॥तूंअबक्यौंविसवासनराषत, भूलतहेकितधोंषेहिधोषे· तोहितहांपहुंचायरहेप्रभु, सुंदरबैठिरहेकिनओषे ॥ ७ ॥ ॥छंदमनहर॥ ॥ काहेकोबधूराभयोफिरनअज्ञानीनर, तेरेतोरिजकतेरेघरबैठेआयहें भावेतुसुमेरजाईभावेजाइमारुदेस, जित्तनोकभागलिख्योतित्तनोकपाइहें॥ कूपमाऊभरिभावेसागरकेनीरभरि, जित्तनोकभांडोनीरतित्तनोसमाईहें ताहीतेंसंतोषकरिसुंदरविश्वासधरि, जित्तनोरच्यौहेघटसोईजुंभराईहें॥ ८॥ का-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेकोंफिरतनरदीनभयोघरघर, देषीयततेरोतोंम्र
हारइकसेरहे जाकोदेहसागरमेंसुन्योसतजोज
नको, ताहूकोतोदेतप्रभुयासेनहिंफेरहें ॥ भूषे-
कोउरहतनजानीयेजगतमाही, कीरीम्ररुकुंजर
सबनिहीकोदेरहें सुंदरकहतविसवासक्योंनरा-
षेसठ, वारवारसमुझायकह्योकेतीवेरहें॥९॥
तेरेतोम्रधीरजतूंम्रागलीहीचिंतकरे, म्राजतो-
भर्योहेपेटकालकेसीहोईहें भूषेईपुकारेम्ररु
दीनउठिषातोजाइ, म्रतिहीम्रज्ञानीजाकीमति
गईषोईहें॥ ताकोंनहीजानेसठजाकोनामविश्वं
भर, जहांतहांप्रगटिसबनिदेतसोईहें सुंदरकह
नतोहीवाकोतोभरोंसोनाहीं, एकविसवासबिन-
याहीभांतिरोईहें ॥१०॥ देषधोंसकलविश्वभर
नभरनहार, तूंचकेसमानचूनसबहीकोदेतहें की-
टपसुपंषीम्रजगरम्रछकछपुन, उनकेनसोदा-
कोऊनतोकछुषेतहें ॥ पेटहीकेकाजरातदिवस-
भ्रमतसठ, मेंतोजान्योनीकेकरितूंतोकाऊधेतहें
मानुषसरीरपायकरतहेंहायहाय, सुंदरकहत-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नरतेरेसिररेतहें ॥११॥ तूंतोभयोबावरोउन्मावशे फि रतआनि, प्रभुकोविस्वासगहिकाहेनरहतुहें तेरे- तोरिजकहेंसोआईहेसहजमाहीं, योहीचिंताक रिकरिदेहक्योदहतुहें॥ जिनयहनषसिषसाजिके संवारयोतोहि, अपनेकीयेकीवहलाजकोंवहतुहें काहेकोंअज्ञानीकछुसोचमनमाहींकरे, भूषोतूं कदेनरहेसुंदरकहतुहें ॥१२॥ जगतमेंआईकेवि सारयोहेजगतपति, जगतकीयोहेसोईजगतभ- रतुहें तेरेनिसदिनचिंताओरहीपरिहेंआई, उ- द्यमअनेकभांतिभांतिकेकरतुहें॥ इतउतजायके कसाईकरिल्याऊंकछू, नेकुनअज्ञानीनरधीरज धरतुहें सुंदरकहतएकप्रभुकेविश्वासबिन, या दहीकोंव्रथासठपचिकेमरतुहें॥१३॥ ॥
॥ ॥ इतिविश्वासकोअंगसमाप्तः॥७॥ ॥
॥ ॥छ॥ ॥अथदेहमलीनताकागर्वप्रहारकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहर॥
देहतोमलिनअतिबहुतविकारभरी, ताहूमाही- जराव्याधिसबदुषरासीहें कबहूकपेटपीरकब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हूंकसिरबांय, कबहूंक आषकान मुषमेंविथासीहें॥ औरहू अनेकरोमनषशिषपूररहे, कबहूंकस्वासचले कबहूंकषासीहें: औसोयाशरीरताही-आपनोकेमानतहें. सुंदरकहतयामें कोनसुषवासीहें ॥ १ ॥ ज्याशरीरमाहींतूं अनेकरुषमानरह्यौ, ताहीतूं विचारयामें कौनबातभलीहें मेदमज्जामांसरगरगमेंरगतभर्यो, पेटहू पिटारीसीमेंठोरठोरमलीहें॥ हाडनिसोंभर्योमुष हाडनिकेनेननाक, हाथपावसोऊसब हाडनीकीनलीहें सुंदरकहतयाहीदेषीजिन भूलेकोई, भीतर भंगारभरोऊपरतोकालीहें ॥२॥ ॥छंदइंदव॥ ॥हाडकोपिंजरचामसढ्यौ, सबमांहिभर्योमलमूत्रविकारा थूकरुलाल परेमुषतेंपुनि, व्याधिवहेसबओरहिद्वारा॥ मांसकीजीभसोंषायसबेकछु, ताहीतेताकोहेंकोनविचारा एसेशरीरमें पैसिके सुंदर, कैसेकेकीजीयेंसौचअचारा ॥३॥ थूकरुलालभर्योमुषदीसत, आंषिमेंगीडरनाकमेसेढो ओर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उह्वारमलीनरहे अति, हाडकेमांसकेभीतर भेदो॥ एसेसरीरमेंवासकियोतब, एकसेदीसतब्राह्म-णहेठो सुंदरगर्वकहाइतनेपर काहेकोतूंनरचा-लतटेढो ॥ ४ ॥ जादिनगर्भसंजोगभयोजब,ता-दिनबूंदछियाकूतीनांही द्वादसमासअधोमुष-झूलत, बूडरह्योपुनिवारससमाहीं ॥ तारजवी-रजकीयहदेहसों, तूंअबचालतदेषतछांहीं सुं-दरगर्वगुमानकहांसठ, आपुनिआदिविचारतना-हीं ॥ ५ ॥ ॥ इतिदेहमलीनतागर्वप्रहार-कोअंगसमासः ॥ ८ ॥ ॥ छ ॥ ॥

अथनारीनिंद्याकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदम-नहर ॥ ॥ कामनिकोतनमानो कहीयेसघनवन, उहांकोऊंजायसोतोभुलेहुपरतुहे कुंजरहेग-तिकटिकेहरिकोंभयजामें, वेनीकालीनागनीऊ-फनिकोधरतुहे॥ कुचहे पहारजहांकामचोररहे-तहां, साधिकेकटाक्षबांनप्रानकोहरतुहे सुंदर कहतएकअोरडरजामेअति, राक्षसीबंदनषा ऊंषाउहीकरतुहे ॥ १ ॥ विषहीकी भोमीमांही

विषकेअंकुरभए. नारीविषवेलिबढिनषसि-
षदेषीयें विषहीकेजरमूल विषहीकेडारपात, वि
षहीकेफूलफललागेजुधीसेषीयें ॥ विषकेतंतूप-
सारउरझाईआंटिमार, सबनरवृक्षपरलपटेहीले-
षीयें, सुंदरकहतकोऊसंततरुवचिगयो, तिन-
केतोकहूंलतालागीनहींपेषीयें ॥ २ ॥ उदरमेंन-
रकनरकअधद्वारनिमें, कुचनिमेंनरकनरक-
भरिछातीहें कंठमेंनरकगाल चिबुकनरकबिं-
ब, मुषमेंनरकजीभलालहुचुचातीहें ॥ नाकमेंन
रकआषकानमेंनरकवहे, हाथपावनषसिषनरक
दिषातीहे सुंदरकहतनारीनरककोकुंडयह, नर
कमेंजाईपरेसोनोनरकपातीहें ॥ ३ ॥ कामनिकेअं
गअतिमलिन महाअसुद्ध, रोमरोममलीनमली
नसबद्वारहें हाडमांसमंजामेदचामसोलपेटराषे,
ठोरठोररक्तहुकेभरेईभंडारहें ॥ मूत्रपुरीषआंत
एकमेकमिलिरही, औरहीउदरमाहींविवधबिका-
रहें सुंदरकहतनारीनषसिषनिंदारूप, ताही-
जेसराहेसोतोवडोईगेवारहे ॥ ४ ॥ ॥ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छंदकुंडलिया॥ ॥धौरैरसप्रियामंजरी० औरसिं- गारहिजान चतुराईकरिबहुतविधि, विषैब- नाईआन॥ विषैबनाईआन, लागतविषय- निकोंप्यारी जागैमदनप्रचंड, सराहेनषसिष नारी॥ज्यौंरोगीमिष्टान्नषाई, रोगहिविस्तारैंसुं दरयेगतिहोई, रसिकजोरसप्रियधौरै॥५॥भा- यरसिकप्रियकेसुनत, उपजेबहुतविकार जोया- मेहीचितधरे, बहेहोतनरख्वार॥बहेहोतनरख्वार, वारलोकबहुनलागै सुनतविषयकीबात, लहर- विषहीकीजागै॥ज्यौंकोऊऊंघतनींदमें, लेपुनि- सेजबिछाय सुंदरएसीजानकै, सुनतरसिकप्रि- यभाय॥६॥ ॥इतिनारीनिंद्याकोअंग- समासः॥९॥ ॥७॥ ॥अथदुष्ट जनकोंअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहर॥ ॥ अपनेनदोषदेषैपरकेअगुनपेषै, दुष्टकोस्वभाव उठिनिंदाहीकरतुहे जैसेकोईमहलसंवारिराष्यो नीकेकरी, कीरीनहांजाइछिद्रढूंढतफिरतुहे॥ भोरहीतेंसांझलगसांझहीतेंभोरलग, सुंदरक-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतदिनऐसेहीभरतुहें ॥पावकीनरेकीनहींसूजे-
आगमूरषककौं, औरसौंकहततेरे सिरपेंबरतुहें॥
१॥ ॥छंदइंदव॥ ॥धानअनेकरहेंडरअंतर
दुष्टकहेसुषसोअतिमीठी लोटतपोटतव्याघ्रहि-
ज्यौनित; ताकतहे पुनताहीकीपीठीं ॥ उपरतेछि
रकेजलआनसु, हेठलगावतजारिअंगीठी यास
हीकूरकछूमतिजानहू, सुंदरआपुनिआषिनिदी
ठी ॥२॥ आपनेकाजसंवारनकेहित, औरको
काजविगारतआई आपनौकाजहोउनहोऊ
बूरोकरऔरकोडारतभाई ॥आपहूषोवतऔ-
रहूषोवत, षोयदुनोघरदेतबहाई सुंदरदेष-
तहीबनिआवत, दुष्टकरेनहीं कोनबुराई ॥३॥
ज्योंनरपोषतहें निजदेहहीं, अन्यविनासकरेनि-
हिंधारा ज्योंअहीऔरमनुष्यहीकाटत, वाही-
कछूनहिहोतअहारा ॥ ज्यौंपुनिपावकजारिस
वेकछू, आपहीनासभयोनिरधारा॥ त्यौंयह-
सुंदर दुष्टस्वभावहूं, जानितजोकिनतीनप्रका
रा॥ ४ ॥सर्पडसेसुनहीकछूतालक, वीछूल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0152,1J.96x
B3

गेरुभलोकरिमानों सिंघहू षायतोनाहींकछूडर, जोगजमारततोनहिंहानो ॥ आगजरोजलबूडिमरोगिरि, जाइगिरोकछूभैमतआनो सुंदरओरभलेसबहीयह, दुर्जनसंगभलोजिनजानो ॥ ५ ॥ ॥ इतिदुष्टजनकोअंगसमाप्तः ॥ १०॥

॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ अथमनकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥ हटकिहटकिमनराषतज्यौंछिनछिन, सटकिसटकिचहुंओरअबजातहें लटकिलटकिललचायलोलवारवार, गटकिगटकिकरिविषफलषातहे ॥ ऊंटकिरुटकितारतोरतकरमहीन, भटकिभटकिकहूनेकनअघातहें पटकिपटकिसिरसुंदरजुमानोंहारी, फिटकिफिटकिजाईसुधोंकौनबातहें ॥ १ ॥ पलहीमेंमरिजायपलहीमेंजीवतुहे, पलहीमेंपरहाथदेषतविकानोहे पलहींमेफिरेनवषंडहुब्रह्मांडसब, देष्योअनदेष्योसोतोयातेनहींछानोहें ॥ जातोनहींजानीयत आवतोनदीसेकछू, एसोसीबलाईआवतासोपरयोपानोहे सुंदरकहतया-

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी। 167
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कीगतीहूनलषीपरे, मनकीमतीतकोऊकरेसुविवा नोहे ॥२॥ घेरीयेतो घेरयो हूनआवनहेमेरोपूत, जोई परबोधीएसु कानन धरतुहे नीतिनअनी-तिदेषेसुभनअसुभपेषे, पलहीमें होतीअनहोतीहू करतुहे ॥ गुरुकीनसाधुकीन लोकवेदहूकीसंक, काहूकीनमानेनतोकाहूतेडरतुहे सुंदरकहतताही धीजियेंसुकोन भाती,मनकोस्वभावकछू कस्योनपरतुहें ॥ ३॥ कामजबजागेतबगिनेनन कोउसंक, जानेसबजोईकरिदेषतनमाधीहें क्रोधजबजागेतबनेकनसंभारसके, एसीविधिमूलकीअविधाजिनसाधीहें ॥ लोभजबजागेतबअपतिनक्योंहीहोई, सुंदरकहतइनएसे हीमेंषाधीहें मोहमतवारो निसदिनहीफिरतहे, मनसोंनकहूंहमदेष्योअपराधीहे॥ ४॥ देषवेकोदोरेतो अटकीजाईयाहीवारे, सुनवेकोंदोरेतोरसिक सिरताजहें सुंगवेकोंदोरेतोअघाईनसुगंधकर, षायवेकोंदोरेतोंनधापेमहराजहे ॥ भोगहीकोंदोरेतोअपतिनहीहोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्योंही, सुंदरकहत याहीने कही न लाजहै काहूकों
नकत्यो कैंश्रापुनीहीटेकपरे, मनसो न कोऊ हमदे
ख्यो दगाबाजहैं॥५॥ देषै नकु ठौरठौर कहत औरकी-
और, लीनजाई होत हाडमांसउरगतमें करतबु
राईसर औसरनजानेकछू, धका आयदेतरामनाम
सोंलगतमें।जहांसुर असुर बहाजेसब भेषी-
जन, सुंदरकहतदिनघालत भगतमें और
हु अनेक अंतराई ही करत रहे, मनसो न कोऊहै
अधमयाजगतमें ॥ ६ ॥ जिनठगे संकरबिधा-
ताइंद्रदेवमुनि, आपनोऊ अधिपतिठग्योजिन-
चंदहै औरजोगीजंगमसंन्यासीसेषकौनगिने,
सबनिकोंठगतठगावेनस्वच्छंदहै॥तापेस्वरऋ-
षीस्वरसबपचिपचिगये, काहूकेन आवेहाथएे
सोंपापेबंदहै सुंदरकहत अबकौनबिधिजेताही,
मनसोनकोऊयाजगतमांहीरिंदहै॥७॥ रंककों
नचावें अभिलाषधनपायवेकी, निसदिनसोच
करिएसेहीपचतहै राजाहीनचावेसबभोमीही
कोराजलेवे, औरउनचावेजोइदेहसोंरचतहैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवताअसुरसिधपन्नगसकललोक, कीटपसुपं-
छीकहूंकेसेकेबचतहैं सुंदरकहतकाहूसंतकीक-
हीनजाई, मनकेनचाएसबजगतनचतहैं॥ ८ ॥
॥ ॥छंदइंदव॥ ॥केतकह्मोसभएससुझा
वत, नेकनमानतहेमनभोंडू भूलरह्योविषयासुष
मेकछू, औरनजानतहैंसठदोंडू ॥आंषिनकान
ननाकविनासिर, हाथनपावनहीसुषपोंडू सुंदर
ताहीगहैकोऊक्योंकरि नीकसिजाइबडोमनलोंडू
॥ ९॥दोरतहैदसहूदिसकोंसठवायुलग्यौतबते-
भयोबेंडा लाजनकानकछूनहिंराषत, सीलस्व-
भावकीफोरतभेंडा ॥सुंदरसीसकहाकहिंदी-
जीयें, भैदेनबानछेदेनहिंगेंडा लालचलागर-
ह्योमनयीषर, बारेहीवाटअठारहिपेंडा॥
१०॥स्वानकहूंकेशृंगालकहूकी, बिडालकहूम-
नकीमतिजैसी ढेढकहूंकीधोड़मकह्योकिधौं, भां
डकहूकेभंडाईजैसी ॥चोरकहूवटपारकहूंठग,
जारकहूंउपमाकहुंकैसी सुंदरओरकहाक-
हियेअब, यामनकीगतदीसतऐसी॥११॥के-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेरतुमनरंकभयोसठ, मागतभीषदसोदिसडु-
ल्यो कैवेरतुमनछत्रधरयोसिर कामनिसंगहिं
डोरनरूल्यो ॥कैवेरतुमनछीनभयोअति,कैवेर-
तुसुषपाइकेफूल्यो सुंदरकैवेरतोहीकह्योमन,
कोनगलीकेहीमारगभूल्यो ॥१२॥ इंद्रनिकेसु
षचाहतहेंमन, लालचलागिभ्रमेसठयोंही दे
षीमरीचीभरयोजलपूरन, धावतहेमृगमूरषत्योंं
हीं॥प्रेतपिसाचनिशाचरडोलत, भूषमरेनहिधा
पतक्योंही वायुबधूरहिकोनगहेकर, सुंदरदो
रतहेंमनत्योंही ॥१३॥ ह्वेसबकोसिरताजतत-
छिन, ज्योंअभिअंतरज्ञानविचारें ज्योंकछूओ
रविसेसुषवंछत, तोयहदेहअमोलकहारे ॥छां
डिकुबुधभज्योभगवंतही, आपुतरेपुनिऔर-
हीतारे सुंदरतोहिकह्योकितनीबिर, तूंमन
क्योंनहींआपसंभारे॥ १४॥ कोनस्वभावप-
र्योउठिदोरत, अमृतछांडिचचोरतहाडें ज्यों
भ्रमकीहतनींद्रगदेषत, आतुरह्वोइपडेगजबाडे
॥वादव्रथाभटकेनिसवासर, एकहूसीषलगीनहिं

राडें सुंदरतोहीसदासमुआवत ऐमनतूंभ्रम-वोकिनछांडे॥१५॥जोमननारिकिवोरनिहारत, तोमनहोतहेताहीकोरूप। जोमनकाहूसोंकोधक रेजब,तोमनव्हैतबहीनदरूप॥जोमनमायाहीमा यारटेनित, तोमनबूडतमायाके कूंप। सुंदरजो-मनब्रह्मविचारत, तोमनहोतहेब्रह्मस्वरूप॥१६॥ ॥छंदमनहर॥ ॥कबहूंकहसउठेकबहूं करोईदेत, कबहूंबकतकहूं अंतहूनलहीये क-बहूकषाईतोअघातनहींकाहूकरि, कबहूंककहे मेरेकछूनहिंचहियें॥कबहूंआकासजाइकबहूं पातालजाई, सुंदरकहतताहीकेसेंकरिगहीयें क-बहूंकआयलगेकबहूंउतरभागे, भूतकेसेचिन्नक रेएसोमनकहीयें॥१७॥कबहूंतोपांषकोपरेवा-केदिषावेमन, कबहूंकधूरकेचावरकरिलेतहे क बहूंतोगुटिकाउछारतआकासवोर, कबहूंतोरा-तेपीरेरंगस्यामस्वेतहे॥कबहूंतोआबकोउगाई करिठादोकरे, कबहूंतोसीसधरज्जुदेकरिदेतहे वाजीगजव्यालएसोसुंदरकहतमन, सदाईभ्रम-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नरहेएसोकोउप्रेतहे॥१८॥कबहूंकसाधहोतकबहूं
कचोरहोत, कबहूंकराजाहोतकबहूंकरंकसो क-
बहूंकदीनहोतकबहूंगुमानीहोत, कबहूंकसूधो-
होत कबहूंकबंकसो॥ कबहूंककामीहोत कबहूंक
जतीहोत, कबहूंनिर्मलहोतकबहूंकपंकसो म-
नकोस्वरूपएसोसुंदरफटिकजेसो, कबहूंकसू
रहोतकबहूंभयंकसो॥१९॥हाथीकोसोकान-
किधो पीपरकोपानकिधों, ध्वजाकोउडानकहूं
थिरनरहतुहे पानीकोसोघेरकिधोंपोनउरझेर-
किधो, चक्रकोसोफेरकोउकेसेकेगहतुहे॥अ-
रहटकीमालकिधोंचरषाकोष्यालकिधों, फेरी-
ष्यातोबालकहूंरूधनलहतुहे धूमकेसोधांवता
कोराषवेकोचावएसो, मनकोस्वभावसोतोसुंदर-
कहतुहे॥२०॥सुखमानेदुखमानेसंपतिविप-
तिमाने, हर्षमानेसोकमानेमानेरंकधनहे घ-
टिमानेबढिमानेसुभहूअसुभमानें, लाभमा-
नेहानमानेंयाहीतेकृपनहें॥ पापमानेपुन्यमा
नेउत्तमध्यानमाने, नीचमानेउंचमानेमानेमेरो-

तनहे स्वर्गमानेनर्कमाने बंधमानेमोक्षमाने, सुंदर सकलमानेतातेंनाममन हें ॥ २१॥ जोईजोई देषेक छुसोईसोई मनआही, जोईजोई सुनेसोई मन-हीकोभ्रमहें जोईजोई सुंघेजोई षाइ जोस्पर्सहोई, जोईजोई करेंसोई मनहीकोकर्म हें ॥ जोईजोई म-सेजोई त्यागेजोई अनुरागे, जहांजहा जोईसोई मनहीकोभ्रमहें जोईजोईकहे सोई सकलसुंदर मन, जोईजोई कल्पेसोई मनहीको धर्महे ॥ २२॥ एकही बिटप बिश्वज्यौंकोत्योंहीदेषीयत, अतिहीसघनताके पत्र फलफूलहे आगलेऊर तपातनएनएहो तजात, एसेयाही तरुकोअ-नादीकालमूलहें ॥ दस चार लोकलोंप सरीरल्यो जहांतहां, अरधउरधपुनि सूक्षमरू स्थूल-हें कोउतोकहत सत कोऊतो कहे असत्य, सुं दरकहत भ्रमहीकोमन मूलहें ॥ २३॥ तोसोनक पूतकोऊ कितहूनदेषीयत, तासोनसपूतकोऊ देषीयतओरहे तूंहीआपभुलेमहानीचहूंतेंनी चहोई, तूंहीआपजानेतो सकलसिरमौरहे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तूंहीआपभ्रमेतबजगतभ्रमतदेषे, तेरेस्थित-
भयेसबठोरहीकोठोरहे तूंहीजीवरूपतूंहीब्रह्म
हेआकासवत्, सुंदरकहतमनतेरीसबदोराहे॥
२४॥ मनहीकेभ्रमतेंजगतयहदेषीयत, मनही
कोभ्रमगएजगतबिलातहे मनहीकेभ्रमजेव-
रीमेंउपजतसाप, मनकेविचारेसापजेवरीसमा
तहे॥ मनहीकेभ्रमतेमरीचेकाकोजलकहे, म-
नहीकेभ्रमसीपरूपोसोदिषातहे सुंदरसकलय-
हदीसेमनहीकोभ्रम, मनहीकोभ्रमगयेब्रह्महो
इजातहे॥२५॥ मनहीजगतरूपहोईकरिबिस
तर्‍यो॥मनहीअलषरूपजगतसोंन्यारोहे मन-
हीसकलघटव्यापकअखंडएक, मनहीसकलय
हजगतपियारोहें॥ मनहीआकासवत्हायनपर-
तकछू, मनकेनरूपरेषघधहीनघारोहे सुंदरकह
तपरथोविचारेजब, मनमिटिजाईएकब्रह्मनिज
सारोहे॥२६॥ ॥ इतिमनकोअंगसमा-
प्तः॥११॥ ॥छ॥ ॥अथचाणक
कोअंगप्रारंभः॥ ॥ छंदमनहर॥ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोईजोई छूटवेकोकरत उपायअग्य, सोईसोई द्रढकरिबंधनेपरतुहें जोगजग्यजपतपतीरथव्रतादिऔर, ऊंपापानलेतंजाईही मालेगरतहें ॥ कानहूफराइपुनिकेसहूलुचाईअंग, विभूतिलगाईसिरजटाऊधरतुहे विनाज्ञानपाएनहींछूटतहृदयग्रंथी, सुंदरकहतयोंही भ्रमकेमरतुहें ॥ १॥ ॥सर्वलघुअक्षर॥ ॥जपतपकरतधरतव्रतजतसत, मनवचक्रमभ्रमकष्टसहततन. वलकलवसनअसन फलपत्रजल, कसतरसनरसव्रतजबवसतवन॥जरतमरतनरगरतपरतसर, कहतलहतयहगजदलबलधन, पचतपचतभवभयनटरतसठ, घटघट प्रगटरहतनलषतजन॥२॥ ॥अग्रेपूर्ववत॥ ॥जोगकरेजागकरेवेदविधित्यागकरे, जपकरेतपकरे योंहीआयुषूटीहे॥ जपकरेनेमकरेतिरथऊव्रतकरे, पुहमीअटनकरेवृथास्वासतुटीहें॥ जीवकोजतनकरेमनमेंवासनाधरे, पचिपचियोंहीमरे कालसिरषूटीहे औरऊअनेकविधिकोटिकउपा

यकरे, सुंदरकहत्तविनज्ञाननहिंछूटिहे॥३॥बु-
धीकरीहीननररजतमछायरह्यो, बनबनफिरत-
उदासहोईधरतें कठनतपस्याधरीमेघसीतघामस
हे, कंदमूलषाईकोऊकामनाकेडरतें॥अतिही-
अज्ञानअोरविविधउपायकरे, निजरूपभूलिकेबं
धतजाईपरतें सुंदरकहतऊंधीवोरकेसेंदीषे, सु-
षहाथमांहीअारसीनफेरेमूढकरतें॥४॥मेघसहे
सीतसहेसीसपरघामसहे, कठिनतपस्याकरिकं
दमूलषातहे जोगकरेजागकरेतीरथऊव्रतकरे,
पुन्यनानाविधकरेमनमेंसहातहे॥अोरदेवीदेव
उपासनाअनेककरे, अांवनीकीहोसकेसेंअाक
डोडेजातहें सुंदरकहतएकरविकेप्रकासबिनु,
जेगनाकीजोतीकहांरजनिबिलातहें॥५॥कोई
फिरेनागेपायसुंदरीबनायकरि, देहकीदिसादिषा
ईअाईलोकधूत्योहे कोईदूधरीहोईकोईफला
हारीहोई, कोईअधोमुषफूलिफूलिधूमघूंट्योहें
कोईनहींषायलोनकोईसुषगहेमोन, सुंदरकहत
योंहीव्रथाभूसकूटयोहे प्रभुसोंतोप्रीतिनाहींज्ञा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नसोंपरीचेनाहीं, देष्योमाईअांधरानेंज्यौंबजा रल्हूटयोहै॥६॥ ॥छंदइंदव॥ ॥आस-नमारिसंवारिजटानष, उज्वलअंगविभूतिचढाई याहमकोकछूदेहीदयाकरि, घेरिरहेबहुलोगलुगाई॥ कोउकउत्तमभोजनलावत, कोइकल्यावत पानमिठाई सुंदरलेकरिजातभयोसब, मूरष लोकनयासिद्धपाई॥७॥ ऊरधपायअधोमुषह्वै करि, घूटतधूमहीदेहझुलावें मेघहूसीतहूघाम-सहेसिर, तीनहुकालमहादुषपावें॥ हाथकछूनप रेकबहूकन, मूरषकूकसकूटिउडावें सुंदरवेंछे-विषयसुषीकोघर, बूडतहैअरुजाऊणगावें॥८॥ गेहतज्योपुनिनेहतज्योंपुनि, षेहलगाइकेंदेह संवारी मेघसहेसिरसीतसहेतनु, धूपसहेजु-पंचागनिवारि॥ भूषसहेरहीरूषतरेंपर, सुंदर दाससहेदुषभारी डासनछांडिकेकासनऊपर, आसनमारयोषेंआसनमारी॥९॥ जोकोऊ कष्टकरेबहुभांतिनि, जातअज्ञाननहींमन-रो ज्यौंतमपूरिरह्योघरभीतर, कैसेहुदूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहोयअंधेरो॥ लाठिनिमारियेठेलिनिकारिये, औरउपायकरेबहुतेरो, सुंदरसूरप्रकासभयो तब, तोकितहूंनहींदेषीयेंनेरो॥१०॥ धारबल्यो-घडधारिरह्योजल, धारसह्योगिरिधारिग्रह्योहें भारसंच्योधनभारथमेंकर, भारलह्योशिरभारपस्योहें॥ भारतप्योबहिमारगयोजम, मारदईमनलोनमस्योहें सारतज्योषटसारपस्योकहि, सुंदरकाजकोनसस्योहें॥११॥ कोउभयापयपानकरेनित, कोउकषातहेअन्नअलोना कोउककष्टकरेनिसवासुर, कोउकबेठिकेसाधतपोना॥ कोउकवादविवाद करेअति, कोउकधरिरहेमुषमोना सुंदरएकअज्ञानगएबिनु, सिधभएनहिदीसतकोना॥१२॥ सवैयाछंद॥ ॥कोउकअंगविभूतिलगावत, कोउकहोतनिराटदिगंबर, कोउकसेतकषायकवोढत, कोउककाथरंगेबहुअंबर॥ कोउकबनकलसीसजटानष, कोउकवोढतहेजुबगंबर सुंदरएकअज्ञानगएबिन, ऐसेंबदीसतआहिअडंबर॥१३॥ ॥छंदमनहर॥ ॥आपहीकेघटमांही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रगट परमेस्वर हे, ताई छोडी भूले नर दूर दूर जा
तहे कोई दौरे द्वारिकाकों केई काशी जगन्नाथ. को
ई दौरे मथुराकों हरिद्वार न्हातहें॥ केई दौरे बदरीकों वि
षम पहार चढे, केई तो केदार जात मनमें सुहातहें
सुंदर कहत गुरुदेव देई दिव्य नेन, दूरहीके दूर विन
निकट दिषातहें॥१४॥ ॥छंद इंदव॥ ॥कोउ
कु जात प्रयाग बनारस, कोऊ गया जगन्नाथही धावे
कोउ मथुरा बदरी हरिद्वार सु, कोउ गंगा कुरुषेत्र न्हा-
हावे॥ कोऊक पुष्कर व्है पचतीर्थ, दौरेइ दौरे जु द्वारि
काव्हावे सुंदर वित्त गड्यो घरमाहि सुं, बाहिर ढूंढ-
त क्यों करि पावे॥१५॥ आगे कछू नहीं हाथ पर्यो
पुन, पीछे बिगारि गयो निज भोना॥ ज्यौं कोई का-
मनी कंत ही मार चली, संग और हि देषि सलोना॥
सोउ गयो तजिके तत्त काल, कहै न बने जु रही सु षसो-
ना. तेसेई सुंदर ज्ञान विना घर, छांड भये नर भाड के-
दोना॥१६॥ ज्यौं कोउ कोस कट्यो नही मारग, तेलिके ले
घरमें पसु जोए ज्यौं बनीयां गयौं बीसके तीसकों,
बीसहूमें दसहू नहीं होथे॥ ज्यौं कोउ चौबे छबे कों-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चल्योपुनि, होइदुबेदुई गाढकेषोये तेसेहीसुंदर-
औरक्रियासब, रामबिना निसचैनररोऐ ।१७॥
ज्यौंकोउरामविनानरमूरष, औरनिकेगुनजीभ
भनेगी आनक्रियागडकेगडवापुनि, होतहैभेरे
कछुनबनेगी। ज्यौंहथफेरिदिषायतचावर, अंत
तोधूरिकीधूरि छिनेगी सुंदरमूलभई अ तसें-
करि, सूतेकीभेसपडाईजनेंगी ॥१८॥ होईउदा
सविचारविनानर, ग्रेहतज्यौवनजाईरह्योहै अं-
बरछांडिबधंबरलेकरि, केतपकोत्तनकष्टसह्योहै
॥ आसनमारिसुआसनव्हेंसुष, मोनगहीमनतोनग्र
ह्योहै। सुंदरकोनकुबुधिलगीकहि, याभवसागरमाहि
बह्योहै ॥१९॥ भेषधर्‍योपरिभेदनजानत, भेदल
हेबिनुषेदहीपैहैं भूषहीभारतनींदनिवारत, अ-
न्नतजेंफलपन्ननषैहैं ॥ औरउपायअनेककरे
पुनि, ताहीनेहाथकछूनहीऐहैं यानरदेहबथाअस-
ठषोवत, सुंदररामबिनापछतैहैं ॥२०॥ आप-
नेआपनेथानमुकामस, राहनकोसबभांतिभ-
लीहैं यज्ञव्रतादिकतीरथदान, पुरानकथाजु-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनेकचलीहैं ॥ कोटिकऔरउपायजहालग, तेसुनीकेनरबुद्धिछलीहैं सुंदरज्ञानविनानकहूंसुष, भूलनिकीबहुभांतिगलीहैं ॥२१॥ कोउकचाहतपुत्रधनादिक, कोउकचाहतबांझजनायो कोउकचाहतधातुरसादिक, कोउकचाहतपारदषायो॥ कोउकचाहतजंत्रनिमंत्रनि, कोउकचाहतरोगगमायो सुंदररामविनासबहीभ्रम, देखहुयाजगयौंडहकायो ॥ २२ ॥ काहेकोतूंनरभेषबनावत, काहेकोतूंदसहूदिसडूले काहेकोतूंतनकष्टकरेअति, काहेकोतूंमुषतेकहीफूले ॥ काहेकोऔरउपायकरेअब, आनकीयाकरकेमतभूले सुंदरएकभजेभगवंतहि, तोसुखसागरमेंनितझूले ॥ २३ ॥ ॥

॥ ॥ इतिचाणककोअंगसमाप्तः ॥१२॥ ॥

॥ ॥अथविपरीतज्ञानकोअंगप्रारंभः॥ ॥

॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥एकब्रह्मसुषसोंबनायकरिकहतहें, अंतःकरणतोविकारनसोंभर्योहे जेसठगगोबरकोंकूपोभरिराषतहें,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेरपंच धृतलेकेऊपरज्योंकस्योहे जेसेकोई भांडे
माही प्याजकोछिपायराषें, चीथरांकपूरकोलेमुषबां
धिधस्योहे ॥ सुंदरकहत ऐसेज्ञानीहैजगतमांहीं; ति
नकोतोदेषीकरिमेरोमनडस्योहे ॥१॥ देहकोमम-
त्वपुनिग्रेहसोंममत्वसुत, दारासोंममत्व मनमाया
मेरहतुहें थिरतानलहेजेसेंकंदुकचोगानमाहिं, क
र्मनिकेवसमास्योध काकोंवहतुहे ॥ अंतःकरन-
सदाजगतसोंरच्चिरत्यो, मुषसेंबनायबातब्रह्म-
कीकहतुहें सुंदरअधिकमोहीयाहीतेअचंभोआ
ही, भूमीपरिपस्योकोउचंदकोगहतुहें ॥२॥ मुषसों
कहतज्ञान अमेमनइंद्रीप्रान, मारगकेजलमेंन प्रति-
बिंबलहीयें गांठिमेंनपेसाकोउ भयोरहेसाहुकार, बा
तनिमेमहूररूपैयागनिलहीयें ॥ स्वपनेमेंपंचामृत
जीमकेअपति भयो, जागेतेमरत भूषषाईबेकोंच-
हीयें, सुंदरसुभटजेसेकायरमारतगाल, राजाभो
जसमकहांगांगोतेलीकहीयें ॥३॥ संसारकेसुष
निसोंआसक्तअनेकबिधि, इंद्रीहूलोलपमनक-
बहूनगत्योहे कहतहे ऐसेमेतो एकब्रह्मजानत

हों, ताहीते छोडिकेसुभकर्मनिकोरत्थोहें ॥ ब्रह्म-
कीन प्राप्तिपुनि कर्मसब छूटगये, दाउनते भ्रष्टहो
ईअधविचबत्थोहें सुंदर कहत ताहीत्यागीयेंस्व
पचजेसें, यांही भांतिग्रंथमेंवसिष्ठजीहूंकत्थोहे ॥
४ ॥ ज्ञानी कीसीबातकहे मनतोमलीनरहे वास-
नाअनेकभरीनेकननिवारिहें जेसेंकोऊआभूषन
अधिकबनायराख्यो, कालईऊपरकर भीतरभंगा-
रिहें ॥ ज्यौंहीमनआवेत्यौंही षेलतनिसंकहोई,
ज्ञानसुनिसीसलीयोग्रंथनिविचारीहें सुंदरकहत-
याकेअटकनकोऊआही, जोईवासोमिलेजाईता
हीकोबिगारीहें ॥ ५ ॥ हंसस्वेतबकस्वेतदेषीये-
समानदोउ, हंसमोतिचुगेबकमछरीकोषातहें
पिकअरुकाकदोउकेसेकरिजानेजाई, पिकअं-
बडारिकाककरकहिजातहें ॥ सिंधोअरुफटिक-
पषानसमदेषीयत, वहतोकठोरवहीजलमेंस-
मातहें सुंदरकहतज्ञानीबाहीरभीतरसुध, ता-
कीपटतरओरबाननिकीबातहे ॥ ६ ॥ ॥
॥ ॥ इतिविभीनज्ञानकोअंगसमासः ॥ १३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथवचनविवेककोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनह-
र॥ ॥जाकेघरताजितुरकिनकोतबेलोंबांध्यो,
ताकेआगेफेरीफेरीटटुवादिषाईयें जाकेषासाम-
लमलसाफनवेढेरपडे, ताकेआगेआनीकरिचो-
षईरसाईये॥जाकेपंचामृतषातषातसबदिनबी-
ते, सुंदरकहतताहीराबरीमेंषाईये, चतुरप्रवीन-
आगेमूरषउचारकरे, सुरजकेआगेजेसेंजुंगना
दिषाईयें॥१॥एकवाणीरूपवंतभूषनबसनअं-
ग, अधिकविराजमानकहीयतएसीहें एकवा-
णीफाटेटूटेअंबरउडाएआनी, ताहूमाहीविपरी
तसुनीयतजेसीहें॥एकवाणीमृतकसीबहूनसिं
गारकीये, लोकनीकोंनीकीलगेसंतनिकोंभेंसीहें
सुंदरकहतवाणीत्रिविधजगतमाहीं, जानेकोईच-
तुरप्रवीनजाकीजेसीहें॥२॥राजाकोकुंअरजोस्वरू-
पकोकुरूपहोई, ताकोंतोसिंघासकरिगोदलेषीला-
इए, औरकोउरंकोस्वरूपहोइसोभनीक, ताहू
कोंतोदेषिकरिनिकटबुलाइए॥काहूकोकरूपकारो
कूबरोव्हेअंगहीन, वाकीवोरदेषीदेषीमाथोइहला

हुऐ सुंदरकहतवाकेबापहीकोंप्यारोहोई, योंही ज्ञानीबानीकोविवेकएसे पाइये॥ ३॥ बोलीयेतोतबजबबोलवेकीसुधहोई, ननोमुषमोनकरिचुपहोईरहीयें जोरीयेतोतबजबजोरवोऊजानीपरे, तुकछंदअरथअनुपजामेंलहीये॥ गाईयेतोनबजबगाईवेकोकंठहोई, श्रवनकेसुनतहीमनजाईगहीयें तुकभंगछंदभंगअरथमिलेनकछू, सुंदरकहतऐसीबानीनहींकहीयें॥ ४॥ एकनकेवचनसुनतअतिसुखहोई, फूलसेंझरतहेअधिकमनभावने एकनिकेवचनतोअसीमानोवरषत, श्रवनकेसुननलगतअलषावने॥ एकनिकेवचनकटुककबुविषरूप, करतमरमछेददुषउपजावने सुंदरकहतघटघटमेंबचनभेद, उत्तममध्यमअरुअधमसुहावनें॥ ५॥ काकअरुरासभउलुकजबबोलतहें, तिनकेतोवचनसुहातकहीकोनकोंकोकिलारुसारीपुनसूवजबबोलतहें, सबकोऊकानदेसुनतरवरोनकों॥ ताहीतेसुवचनविवेककरीबोलीयजु, योंहींआकबाकबकितोरियेनपोनकों सुंदरसम-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊएसेंबचनउचारकरो, नहींतोसमुझिकरिबैठेगोगहि मोंनकों ॥ ६ ॥ प्रथमहीयेबिचा रदीमसोनदीजेडार, नाहीतेसुवच्चनसंभारिकरिबोलियें जानेनकहूं हेत-हेतभावतेसीकहीदेत, कहीयेसुतबजबमनमाहीतो लीयें ॥ सबहीकोंलागेदुषकोऊनहीं पावेसुष, बोलीके बथाहीतातें छातीनहीं छोलीयें सुंदरसमझकरिकही येसरसबात, नबहीतोवचनकपाटगहीषोलीये ॥ ७ ॥ औरनोवचनएसेंबोलत हेपरऊजेसे, तिनकेंतो-बोलवेमेंढंगहूनएकहे कोऊरातिदिवसबकत हीरहतएसे, जेसिबिधिकूपमेंबकतमनोभेकहें ॥ विविधप्रकारकरिबोलनजगतसब, घटघटप्रति सुषबचनअनेकहें सुंदरकहत तांतेबचनविचार लेहू, बचनतावहेजामें पाइयेविवेकहें ॥ ८ ॥ जेसें हंसनीरकोतजतहेअसारजानी, सारजानीषिर कोनिरालोकरिपीजियें जेसेदधिमथतमथतका ढिलेतघृत, औररहीपहीसब छांछ छांडीदीजि-ये ॥ जेसेमधुमक्षिकासुवासकोअमरलेत, नेसेही विचारकरिभिन्नभिन्नकीजियें सुंदरकहततातें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वचनअनेकभांति वचनमेंवचनविवेक करिलीजिये ॥९॥प्रथमहीगुरुदेवमुषतेउचारकस्योवेईतोवचन आयलोनिजहीयहें तिनकोविवेककरिअंतःकरन माहीं, अतिहिअमोलनगभिन्नभिन्नकीयेहैं आपकोदरिद्रगयोपरउपकारहेत, नगहीनिगलि केउगलिनगलियेहैं सुंदरकहतयहवाणीयों प्रगटभई, औरकोईसुनकरिरंकजीवजीये- हैं ॥१०॥ वचनतेंदूरमिलेवचनविरोधहोई, वचनतेंरागबढैवचनतेंदोषजु वचनतेंज्वालउठे वचनसीतलहोई, वचनतेंमुदीतवचन हीनेंरो- षजु ॥ वचनतेंप्यारोलगेवचनतेंदूरभगे, वचन तेंसुरझाईवचनतेंषोषजु सुंदरकहतयह वच नकोभेदएसो, वचननेबंधहोतवचनतेंमोषजु ॥११॥वचनतेंगुरुशिषबापपुतप्यारोहोई,व चनतेबहुविधहोतउतपातहें वचनतेंनारीअरुपु- रुषसनेहअति, वचनतेंदोऊअपआपमेंरीसातहे वचनतेंसबआईराजाकेहजूरहोई, वचनतेंचाकर उछोडीपलातहे सुंदरसुवचनसुनत अतिसुषहो

ई, कुवचनसुनतहिंप्रीतिघटिजातहैं ॥१२॥ एकतो
वचनसुनकर्महीमेंवहीजाय, करतबहुत्तविधिस्व
र्गकीउमेदहैं एकहेवचनदृढईश्वरउपासनाकेतिन-
मेंतोसकलहीवासनांकोछेदहै॥ एकहीबचनतामें
एकहीअखंडब्रह्म, सुंदरकहतयोंबतावेअंतबेद
है वचनतोअनेकप्रकारसबदेषियत, वचनवि-
वेककीयेवचनमेंभेदहैं॥ १३॥ वचननेंजोगकरेव-
चनतेंजज्ञकरे, वचननेंतपकरि देहकोंदहतुहैं
वचनतेंबंधनकरतहैंअनेकविधि, वचननेंत्याग
करिवचनरहतुहे ॥ वचननेंउरझारुसुरझेवचन-
हूतें, वचनतें भांतिभांतिसंकटसहतुहे वचनतें
जीवभयोवचननेंसीवहोई, सुंदरवचनभेदवेद-
योंकहतुहे ॥१४॥ ॥ इतिवचनविवेक-
कोअंगसमासः ॥१४॥ ॥छ॥ ॥
अथनिर्गुणउपासनाकोअंगप्रारंभः॥ ॥
छंदइंदव॥ ॥ब्रह्मकुलालरचेबहुभाजन, कसींजि
केवसमोहनभावे विष्णुहीसंकटआयसहेप्रभ
काहूकोरक्षाके काहूकोसंतावे॥ संकरभूतपिसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चनिकेपति, पानीकपाललीयेबिललावे याहीतें सुंदरतिरगुनत्यागसु, निर्मलएकनिरंजनध्यावें ॥१॥ कोटिकबातबनायकहेकहा, होतभयेसबहीमनरंजन शास्त्रसमृतिरुवेदपुरान, वषानतहेअतिलायकेअंजन पानीमेंबूडतपानीगहेकत, पारपहुंचतहेमतिभंजन सुंदर नहांलगेअंधेकीजेवरी, जोलोनधाइएएकनिरंजनं ॥२॥ मंजनसोजोमनोमलमंजन, सज्जनसोजोकहेगतिगूझें गंजनसोजोइंद्रिगहेगंजन, रंजनसोंजोबुझावेरुबूझे॥ भाजनसोंजोभरयोरससमाहीं, विद्ज्जनसोकितहूनअरूझें अंजनसोंजुबढेरुचसुंदर, अंजनसोजुनिरंजनसूझे॥३॥ जोप्रभुलेंउतपत्तिभईयह, सोप्रभुहेउरइष्टहमारे जोप्रभुहेंसबकेसिरऊपर, ताप्रभुकोसिरहीहमधारे॥ रूपनरेषअलेषअखंडित, भिन्नरहेसबकारजसारें॥नामनिरंजनहैंतिनकेगुन, सुंदरताप्रभुकीबलिहारें ॥४॥ जोउपजेविनसेगुनधारत, सोयहजानहुंअजनमाया आवनजायमरेनहिजीवत, अच्युतएकनिरंजन-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राया ॥जौंतरनख्वरहेंरसएकही, आवतजातफिरे-
यहछाया सोपरब्रह्मसदासिरऊपर, सुंदरताप्रभु
सोंमनलाया ॥ ५॥ ज्योंउपज्यौकछुआईजहांल
ग, सोसबनासनिरंतरहोई रूपधरयोसुरहेन-
हिनिश्चल, तीनहीलोकगिऐकहांकोई ॥राज-
सतामसतसात्विकजेगुन, देषतकालग्रसेपुनवो-
ई आपहीएकरहेजुनिरंजन, सुंदरकेमनमान
तसोई ॥ ६ ॥ देवनिकेसिरदेवविराजित, ईश्वर
केसिईश्वरकहीयें लालनिकेसिरलालनिरंतर,षू
बनिकेसिरषुबहिलहीयें॥पाकनिकेसिरपाकसि-
रोमनि, देसविचारउहेंद्रढगहीयें सुंदरएकसदा-
शिरऊपर, औरकछूहमकोंनहींचहीयें॥७॥से
समहेसगनेसजहांलग, विष्णुविरंचिहूकेसिर
स्वामी व्यापकब्रह्मअषंडअनावृत, बाहिरभी
तरअंतरजामी ॥वोनरछोरअनंतकहेगुन, या-
हीतेसुंदरहे धननामी एसोप्रभुजिनकेशिर-
ऊपर, क्योंपरिहे तिनकोकहिषामी॥ ८ ॥ ॥
॥ ॥ इतिनिर्गुणउपासनाकोअंगसमासः ॥ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१५॥ ॥ ७॥ ॥ अथपतिव्रताकोअंग आरंभः॥ ॥ छंदइंदव॥ ॥ आनकीवोरानि हारतहीजेसें, जातपतिव्रतएकघ्रत्तिको होतअ- नादरएसीहिभांतिजु, पीछेफिरेनहिंसूरसतीको ॥नेकहीसेहरवोहोइजात, घिसेअधबिंदुजोजोगजतीको रामत्हदेतेगएजनसुंदर, एकरतीबिनपावरतीको ॥१॥ जोहरीकोंतजिआनउपासत, सोमति- मंदजतीनहिहोई जोअपनेभरतारहिछांड, भई विभचारनिकामनीकोई ॥सुंदरताहिनआदरमान, फिरेविमुषीअपनीपतषोई डूबिमरेकिनकूपमझार, कहांजगजीवतहेसठसोई ॥२॥ होइअनन्यभ- जेभगवंतही, औरकछूउरमेंनहीराषे देवीरु- देवजहांलगहेंडर, केतिनसोवहीदीननभाषे॥ जोग- हूजज्ञव्रतादिक्रियातिन, कोतोनहींस्वपनेअभि लाषे सुंदरअमृतपानकियोतब, तोकहीकोन- हलाहलचाषे॥३॥ एकसहीसबकेउरअंतर,ता प्रभुकोकहीकाहीनगावे संकटमाहीसहायकरेपु- न, सोअपनेपतिक्योंविसरावे ॥चारपदारथ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औरजहांलग, आठउसिधिनवेनिधिपावे सुंदरछारपरोतिनकेमुष, जोहरिकोंतजिआनकोंध्यावे॥४॥पूरनकामसदासुषधामनि, रंजनरामसिरज्जनहारो सेवकहोइरह्योसबकोनित, कीटहिकुंजरदेतअहारो॥भंजनदुःखदरिद्रनिवारन, चिंतकरेपुनसांऊसवारो एसेप्रभुतजिआनउपासत, सुंदरहेतिनकोमुषकारो॥५॥ ॥छंद मनहर॥ ॥पतिहीसोंप्रेमहोईपतिहीसोंनेमहोई, पतिहीसोंषेमहोईपतिहीसोंरतहें पतिहीहेजज्ञजोगपतिहोहेरसभोग, पतिहीसोंमिटेसोगपतिपतिहीकोजतहे॥पतिहीहेज्ञानध्यानपतिहीहेपुन्यदान, पतिहीहेतीरथस्नानपतिहीकोमतहें पतिविनुपतनाहींपतिबिनगतनाहीं, सुंदरसकलविधिएकपतिव्रतहे॥६॥जलकोसनेहीमीनविछुरततजेप्रान, मनीबिनुअहीजेसेंजीवतनलहीयें स्वातबिंदुकेसनेहीप्रगटजगमाही एकसीपदुसरोसुचातकउकहियें॥रविकोसनेहीपुनिकमलसरोवरमें, ससीकोसनेहीउंचकोरजेसेरही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये तैसेहीसुंदरएकप्रभुसोंसनेहजोर, औरक-
छूदेषीकाहूवोरनहींवहीयें ॥७॥ ॥ इतिपति-
व्रताकोअंगसमाप्तः ॥१६॥ ॥छ॥ ॥
अथविरहउराहनकोअंगप्रारंभः ॥ ॥छंदमनह
र ॥ ॥ पायकोअंदेसोभारीतोसोकह्योसुनप्या-
री, यारीतोरीगयेसोतोअजहूनआयेहैं मेरेतो-
जीवनप्राननिसदिनउहेध्यान, मुषसोंनकहोंआ
ननेनउरलाएहैं ॥ जबतेगएबिछोहकलनपरतमो
ही, तांतेहूपूंछततोहिकिनविरमायेहैं सुंदरविर
हनीकोसोचसषीवारवार, हमकोंबिसारअबकों
नकेकहायेहैं ॥१॥ हमकोंतोरेनदिनसंकमनमाहिं
रहे, उनकीतोबातनिमेठिकहूनपाईयें कबहूसंदे
सासुनिअधिकउछाहहोई, कबहूकरोईरोईआ
सुनीवहाईयें औरनिकेरसबसह्योईरहेप्यारेला
ल, आवनीकीकहीकहीहमकोसुनाईयें सुंदरक
हबताहीकाटीयेसुकोनभांति, जोईतरुआपनेंसु
हाथतेलगाईयें ॥ २ ॥ मोसोकहेऔरसीहीवासुं
कहेऔरसीहीं; जाकोंकहेताहीकेप्रतीतकेसेहोत

हें, काहूंसोंसमासकरे काहूंसोंउदासफिरें, काहूसों तोरसबसएकमेक पोतहें॥ दगाबाजीदुबधातोमन कीनदूरहोई, काहूकेअंधेरोघरकाहूकेउद्योतहें स्कंदरकहतजाकेपीरसोंकरेपुकार, जाकेदुषदूरग-योताकोंभईषोतहे ॥३॥ हीयेओरजीयेओरलीये-ओरदीयेओर, कीयेओरकोंनसूंअनुपपाटीपढे हें मुषओरबेनओरनेन ओरतनओर, मनओर कायासबजंत्रमाहींकिढेहें॥ हाथओरपांवओरसी सहूंश्रवनओर, नषसिषरोमरोंसमलईसोंमढेहें एसीतोकठोरतानसुनिनहीदेषीजग, स्कंदरकहत कोईव्रजहीके घढेहें॥४॥ ॥इतिविरहउराह नेकोअंगसमाप्तः॥१७॥ ॥छ॥ ॥

अथशब्दसारकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहर॥ ॥ ॥भूल्योफिरेभ्रमतेंकहतकछुओरओर,करत नतापदूरिकरतसंतापकों दक्षभयोरहेपुनीदक्षप्र-जापतिजेसें, देतपरदक्षनानंदिक्षादेनआपकों॥ सुंदरकहतएसेजामेनजुगतिकछू, ओरजाप जपेनजपतनिजजापकों बालभयोज्वानभयोवय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वीतेवृधभयो, वपुरूपहोईकेंबिसरीगयोआपकौं ॥१॥ ॥छंदइंदव॥ ॥पानवहेजुपीयूषपीवेनित, दानवहेजुदलिद्रकौभाने; कानउहेसुनीयैजसकेसब, मानउहेकरीयेंसनमाने॥ तानउहेसुरतानरिझावत, जानउहेजगदीसहीजानें बानउहेमनबेधतसुंदर, ज्ञानउहेंउपजेनअज्ञानें॥२॥सूरउहेमनकौंबसराषत, कूरउहेमनमांहींलजैहैं॥ त्यागउहेअनुरागनहींकछू भागवहेमनमोहतजैहैं ॥तज्ञवहेनिजतत्वहीजानत, जज्ञवहैजगदीसजजैहैं रत्तउहेहरिसोंरतसुंदर, भक्तउहेभगवंतभजैहैं ॥३॥ चापउहेकासिएरिपुऊपर, दापउहेदलकारहीमारें छापउहेंहरिआपदईशिर, थापउहेंथपिओरनधारें॥ जाउपहेंजपीयेअजपानित, व्यापउहैनिजव्यापबिचारें थापउहेंसबकोंप्रभुसुंदर, पापहरेअरुतापनिवारें॥४॥ भौंनउहेंभयनाहिनजामहीं, गोनउहेफिरहोइनगोना ग्रेनउहेबिसरेविषयारस, रौनउहेप्रभुसोंनहिंरोना ॥मोनउहेजुली-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

येहरिबोलत लोनउहेसबऔरअलोना, सोनउहे-
गुरुसंतमिलेजब, सुंदरशंकरहेनहिकोना ॥५॥
कारउहेअविकाररहेनित, सारउहेजुअसारहीना
षे प्रीतउहेजुप्रतीतधरेंउर, नीनउहेजुअनीतनभा
षे॥ नंतउहेलगिअंतनटूटत, संतउहेअपनोंसतरा
षे नादउहेसुनिबादनजेसब, स्वादउहेंरससुंदर-
चाषे ॥६॥स्वासउहेजुउस्वासन छांडत, नासउहें
फिरिहोईननासा, पासउहेसन पासलगेजम, पा
सकटेप्रभुकेनित पासा॥बासउहें ग्रह बासनजे-
बन, यासरहीतिहीठोहरवासा, दासउहेंजु उदास
रहेहरि, दाससदाकहिसुंदरदासा ॥७॥ श्रोत्रउहेंश्रु
तिसार सुनेअरु, नयनउहेंनिजरूपनिहारें नाक
उहेंहरिनाकहीराषत, जीभउहेंजगदीसउचारें॥
हाथउहेंकरियेहरिकोकन, पावउहेंप्रभुकोपथधारें
सीसउहेकरीस्यामसमर्पन, सुंदरयोंसबकारज
सारें॥८॥ सोवत सोवत सोइगयोसठ, रोवतरो-
वत कैंबिररोयो गोवतगोवनगोईधस्यो धन, षोव
तषोवतनेंसबषोयो ॥जोवनजोवनदीनगयेदिन, बो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वतवोवततें विषबोयो, सुंदर सुंदर राम भज्यौन-
हि, ढोवत ढोवत बोऊ ही ढोयो ॥९॥ देषत देषत दे
षत मारग, बूझत बूझत बूझत भायो सूझत सू-
झत सूझ परी सब, गावत गावत गोविंद गायो ॥सो
धत सोधत सुद्ध भयो पुनि, तावत तावत कंचनता
यो जागत जागत जाग पर्‌यो जब, सुंदर सुंदर सुं
दर पायो॥१०॥ ॥इति शब्द सार को अंग स-
माप्तः॥१९॥ ॥छ॥ ॥अथ भक्ति
ज्ञान मिश्रित को अंग प्रारंभः॥ ॥छंद इंदव॥
बैठत राम हि ऊठत राम हि, बोलत राम हि राम रह्यो
हैं जीमत राम हि पीवत राम हि, धाम हि राम ही राम
गह्यो हैं॥जागत राम ही सोवत राम ही, जोवत रा-
म ही राम लह्यो हैं देत हू राम ही लेत हू राम ही, सुं
दर राम हि राम रह्यो हैं॥१॥ श्रोत्र हू राम ही नेत्र हू
राम ही, वक्र हू राम ही राम ही गाजें सीस हू राम ही
हात हू राम ही, पाव हू राम ही राम ही छाजें॥पेट हू राम
ही पीठ हू राम ही, रोम हू राम ही राम ही वाजे अंतर रा-
म निरंतर राम ही, सुंदर राम हि राम विराजें॥२॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोमीहूरामहीआपहूरामही, तेजहूरामहीवायूही
रामें व्योमहूरामहीचंदहूरामही, सूरहूरामहीसी-
तहीघामें॥ आदीहूरामहीअंतहूरामही, मध्य-
हीरामहीपुर्षनवामें आजहूरामहीकालहूरामही,
सुंदररामहीरामहीथामे ॥३॥ देषहूरामअदेषहू
रामही, लेषहूरामअलेषहूरामें एकहूरामअने-
कहूरामही, शेषहूरामअशेषहूनामें॥ मोनहूराम
अमोनहूरामही, गोनहूरामहीठामकुठांमें बाहीर
रामहीभीतररामही, सुंदररामहीहेजगजामें॥
४॥ दूरहूरामनिजीकहूरामही, देसहूरामप्रदेसहू
रामें पूरबरामहिपछिमरामहि, दछ्छनरामहीउत्त
रधामें॥ आगेहूरामहीपीछेहूरामही, व्यापनराम-
हीहेबनग्रामें सुंदररामदसोदिसपूरव, स्वर्गहूरा-
मपतालहूतामें॥५॥ आपहूरामउपावलरामही, भं
जनरामसंवारनवामे दृष्टहूरामअदृष्टहूराही, इ-
ष्टहूरामकरेसबकामें॥ वर्णहूरामअवर्णहूरा
मही, रक्तनपीतनस्वेतनस्यामें सुन्यहूरामअ-
सुन्यहूरामही, सुंदररामहीनामअनामें॥६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ ॥इतिभक्तिज्ञानमिश्रितकोअंगसमाप्तः॥१९
॥ ॥६॥ ॥अथविपर्जयशब्दकोअंग-
प्रारंभः॥ ॥छंदसवैया॥ ॥श्रवनहुदेषि
सुनेपुनिनेनहू, जिव्हासुंघेनासिकाबोले गुदा
षायइंद्रीजलपीवे, बिनहिहाथसुमेरहितोले॥ऊं
चेपावसुंडिनीचेकूं, तीनलोकमेंविचरतडोले सुं
दरदासकहेसुनज्ञानी, भलेभांतियाअर्थहिषोले
॥१॥अंधातिनलोककूंदेषे, बेरासुनेबहुतविधना
द नकटाबासकमलकीलेवे, गुंगाकरेबहुतसं-
वाद॥ठूठापकरिउठावेपर्वत, पंगुलकरेनिरतअ
हलाद, जोकोउवाकोअर्थबिचारे, सुंदरसोईपावे
स्वाद॥२॥कुंजरकोकिरीगिलबेठी, सिंघहिषा-
यअघानोस्याल मछरीअग्निमांहिसुषपायो,
जलमेंबहोतहोतिवेहाल॥ पंगुचढोपरबतके-
उपरि मृत्युहिदेषिडरानोकाल जाकोअनुभविहोयसु
जानें, सुंदरएसाउलटाष्याल॥३॥बुंदाहिमांहिसमुद्रस
मानो, राईमाहिंसमानोमेर पानीमांहितुंबकाडूबी, प
हनतरतनलागीबेर॥तीनलोकमेभयात्तमासा, सूरजकि
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योसकलअंधेर मूरषहोयसोअर्थहिपावे, सुंदरक
हेसबदमेफेर ॥ ४ ॥ मछरीबगुलाकुंगहिषायो, मूसे
षायोकारोसांप सुवेपकरिबिलाईषाई, ताकेसुवेग
योसंताप ॥ बेटीअपनीमईयाषाई, बेटेअपनोषों-
योबाप, सुंदरकहेसुनोहोसंतो, तिनकोकोउनला-
ग्योपाप ॥ ५ ॥ देवमांहितेंदेवलप्रगट्यो, देवलमाहीं
प्रगट्योदेव सिष्यगुरुउपदेसनलाग्यो, राजाकरेरंक-
कीसेव बंध्यापुत्रपंगुइकजायो, ताकोधरषोवनकीटेव
सुंदरकहतसोपंडितग्याता, जेकोउयाकोजानेभेव ॥
६ ॥ कमलमाहितेंपानीउपज्यौ, पानीमाहितेंनीप
ज्योसुर सूरमाहिसितलताउपजी, सीतलतामें-
रूपभरपूर ॥ तासुषकोक्षयहोइनकबहू, सदाए-
कररसनिकटनदूर सुंदरकहतसत्यपहयोंही, यामें-
रतीनजांनहूकूर ॥ ७ ॥ हंसचढ्योब्रह्माकेऊपर, ग
रुडचढ्योपुनिहरिकीपीठ बैलचढ्योहेसिवकेऊ
पर, जोहमदीठोअपनीदीठ ॥ देवचढोपातिके
ऊपर, जषचिढोडायनकेपीठ सुंदरएकअचं-
भाहुवा, पानीमाहेजरेअंगीठ ॥ ८ ॥ कपराधोबिकुंगही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धोवे माटिपकरी घडेकुंभार, सुद्धबिचारिदरजि-
हिसीवे, सोनातावेपकरसोनार ॥ लकरीबढहीकुंग
हिछीले, षालसुबैठीधमेलुहार सुंदरदासकहै सुन-
ज्ञानी, जेकोईयाकोकरेबिचार ॥९॥ जाघरमाहि
बहुतसुषपायो, नाघरमांहिबसे अबकौन लागी
सबैमीठाईषारी, मीठोलागोएकवहैलौन ॥ पर्व-
तऊडेरुइथिरबैठी, एसोकोइकबाज्योपौन सुंदरक
हेनमानेकोई नातेपकरिरहीयेमौन ॥१०॥ रजनी-
मांहिदिवसहमदेष्यो, दिवसमांहिदेषीहमरात ने-
लभरयोसंपूरनतामें, दिपकजरैजरेनहिबात ॥ पु
रुषएकपानीमेंहिमगल्यो, नानुगराकीकैसीजात
सुंदरसोइलहै अर्थकों, जोनितकरैपराईतात ॥११
॥ उमग्योमेघबढ्योचहुंदिससें, वरषनलाग्योअषं
डितधार॰ डूब्योमेरुनदीसबसूकी, उरलाग्योनि
सद्दिनएकतारे कांसोपरयोबिजलीउपर, कियो-
सकलकुटुंबसंहार सुंदरअर्थअनोपमयाः
कों, पंडिनहोयसोकरेबिचार ॥१२॥ वाडीमा
हीमालीनीपज्यो, हालीमांहीनीपज्यौषेत्त हं-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहीउलटिस्यामरंगलाग्यो, भ्रमरउलटिकरीहू-
वोस्वेत ॥ ससियरउलटिराहुकोंग्रास्यो,सुरजउल-
टकरियास्योकेत सुंदरसुगराकोतजिभाग्यो, नु
गरासेतीबांध्योहेत ॥ १३ ॥ आगनीमथनकरिल
करीकाढी, सोवहलकरीमानआधार पानीमथिक
रिधीवनीकास्यो, सोघृतषायोवारमवार ॥ दूधदहीं
कीइच्छाभागी, जाकूंमथतसकलसंसार सुंदर
अबतोभयेसुषारे, चिंतारहीनएकलगार ॥ १४ ॥
पात्रमांहिझोलीगहिराषे, जोगीभिक्षामागनजा
ई जागेजगतसोवहीगोरष, एसासब्दसुनावेआ
ई ॥ भीष्याफिरेबहुतकरिताकों, सोवहीभीष्या-
चेलषाई सुंदरजोगीजुगजुगजीवे, ताअवधूत-
कीदूरबलाई ॥ १५ ॥ परधनहरेकरेपरनिंदा, पर
तियकोंराषेघरमाहीं मांसषायमदिरापुनिपीवे,
ताहिमुक्तिकोसंसेनाहीं ॥ अकर्मगहेकर्मसबत्या
गे,ताकीसंगतपापनसाई एसीकरेसोसंतकहावे,
सुंदरऔरउपजिमरिजांहीं ॥ १६ ॥ निरदईहोइति
रेपसुघातिक, दयावंतबूडेभवमाहीं लोभीतरे-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबनकूंप्यारो, निरलोभीकोठोहरनाहीं ॥ मिथ्या
वादीमिलेब्रह्मकूं, सत्यकहैतेजमपुरजाहीं सुंदर
धूपमांहिसीनलता, जरंतरहेसोबैठेछांहीं ॥१७॥
बढईघरपाभलोसंवारयो, फिरनेलाग्योपानीकीभांत
बहूसासुकोंकहिसमझावें, तुमेरेढिगबैठोकात
नाकोनारनटूटेकबहू, पुनीघटेनहींदिनरात सुं
दरविधिसुंबनेजुलाहा, षासानिपजेउंचीजात॥
१८॥ मायबापनजधीउमडानी, हरषतचलीषस
मकेपास बहूबिचारीबडीबगनावर, जाकेकहे
चलतहेसास ॥ भाईषरोभलोहितकारी, सबकु-
टुंबकोकीनोनास ऐसीबिधिघरबस्योहमारी, क
हसमझावैसुंदरदास ॥१९॥ घरघरफिरैकुंवारी-
कन्या, जनेजनेसूंकरतीसंग वेस्यासोतोभईप-
तिव्रता, एकपुरुषकेलागिअंग॥ कलजुगमाही
सतजुगथाप्यो, पापीउदयधरमकोभंग सुंदरक
हइअरथसोंपावे, जोनीकेकरितजेअनंग ॥२०॥
विप्ररसोईकरनेलाग्यो, चोकाभीतरबैठोआई
लकरीमांहेचूलादीया, रोटीऊपरतवाचढाई ॥ पिच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रीमाहीं हंडीयारांधी सालनआकधतुराषाई सुंदर जीमतअतिसुषपायो, अबकेभोजनकियोअघा ई ॥२१॥ बैलउलटनाइककूंलाघो, वस्तुमांहिभ- रिगूनअपार भांतिभांतिकोसोदाकीयो, आयदि सांनरयासंसार॥नायकनीपुनिहरषतडोलै, मो- हिमिल्योनीकोमरथार पुंजीजायसाहकौंसोपी, सुंदरसिरतेंडार्योभार ॥२२॥ बनियाएकबनज कूंआयो,परेतावराभारीभैठ भलीवस्तुकछुलीनीदीनी, षेंचिगठरियाबांधीऐंठ॥सोदाकियो- चलेपुनिधरकूं, लेषाकीयोबारितरबैठ सुंदरसाहसुषीअतिहूवा,बैलगयोपुंजीमैंपैठ॥२३॥ पेहराइनघरघुस्योसाहकौ, रक्षाकरनेंलाग्योचोर कोतवालकाठोकरिबांध्यो, सूझैनहिंसांऊअरु- भोर॥राजागामछोडकेभाग्यो, हुवोसकलजगतमेंसोर परजासुषीभईनगरीमें, सुंदरकोईजुलमनजोर॥२४॥राजाफिरैपिबतकोमार्यो,घरघरटूकडामागेभीष पावपियादेनिसदिनडोलै, घोडाचालिसकेनहिवीष॥आकअरंडकिल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करीचूषे, छांडे बहुतर रस भरे ईष सुंदर कोउज गतमें विरलो था सूरषकों लावे सीष ॥२५॥ पानी जरे पुकारे निसदिन, नां कोआगि बुझावे आई हूं सीतल तूं तपत भयाक्यौं, वारंवार कहे समुझाई॥ मेरी लपट तो हिं जो लागे, तो तुं भी सीतल होइ जाई कबहूं जर नि फेरि नाहिं उपजे, सुंदर रूप मेरहे स माई ॥२६॥ षसम परयो जो रू के पीछे, कल्यो नमाने भूंडी रांड जित तित फिरे भटकती योंही, तेतो कियो जगत में भांड ॥ तो हू भूषन मागितेरी, तुं गिलवे ठीसारी मांड सुंदर कहे सीष सुन मोरी, अब तूं घर घर फिरवो छांड ॥२७॥ पंथी मांहिं पं थ चलि आयो, सो वह पंथ लष्यो नहिं जाई वा- ही पंथ चल्यो उठ पंथी निरभै देस पहुंच्यो आई ॥ तहां दुकाल परे नाहिं कबहू, सदा सुभिक्ष रह्यो ठहराई सुंदर दुषी न कोऊ दीषे अक्ष- य रूप में रहे समाई ॥२८॥ एक अहेरी बन- मैं आयो षेलन लाग्यो भली सिकार करमे ध- नुष कमरमें तरकस, सावज घेरे वारं वार ॥ मा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रयोसिंघव्याघ्रपुनिमारयो, मारिवछुरिमृगनि
कीडार ऐसेसकलमारिघरलायो, सुंदरराजहि
कियोजुहार ॥२९॥ सुकेकेवचनअमृतभइऐसे,
कोकिलधाररहैमनमाहीं सारोसुनेभागवतकबहूं,
सारसतोउपजावेनाहीं॥ हंसचुगेमुगताफलअ-
र्थहि, सुंदरमानसरोवरताहीं काककबीश्वर-
नीकेजेते, सोसबदोरतकरकहिजाहि ॥३०॥
नष्टहोइद्विजभ्रष्टक्रियाकरि, कष्टकियेनहिंपा
वैठोर महिमासकलगईतिनकेरी, रहतपदन-
तरसबसिरमोर ॥ जितप्रतिफिरेनहीकछुआ
दर, तिनकोकोउनघालोकोर सुंदरदासकहे
समझावे ऐसीकोउकरोमतिओर॥३१॥सा-
स्त्ररुवेदपुरानपढेकिन, पुनिव्याकर्णपढेजेको
ई, संध्याकरैगहैषटकर्महि, गुनअरुकाल-
विचारेसोई ॥सीराकामतबेबनिआवे,मनमें
सबताजिराषेदोई सुंदरदासकहेसुनपंडि-
त, रामनामबिनामुक्तिनहोई॥३२॥ ॥इति
विपर्जयसब्दकोअंगसमासः॥२०॥ ॥छ॥
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथसूरातनकोअंगप्रारंभः ॥ ॥छंदमनह
र॥ ॥सुनतनगारेचोटविकसेंकमलमुष,अ-
धिकउछाहफूल्योमाईहूनतनमें फेरेजबसांग
तबकोईनहींधीरधरे, कायरकंपाईमानहोतदे-
षीमनमें ॥कुंदकेंपतंगजेसेंपरतपावकमाहीं,ए-
सेटूटपरेबहुसांवतकेधनमें मारीघमसाणक-
रीसुंदरजुहारेस्याम, सोईसूरवीररूपरहेजाई
रिनमें ॥१॥ हाथसेंगहेषरगमारवेकोंएकपग,तन
मनआपनोसमरपनकीनोहे आगेकरमीचको
जुपर्योडाकिरनबीच, टूकटूकहोईकेभगाई
हलदीनोहें॥ षाईलोनस्यामकोंहरामषोरकेसे
होई, नामजादजगतमेंजीत्योपनतीनोहें सुंदर
कहतएसोकोउएकसूरवीर,सीसकोउतारके
सुजसजाईलीनोहे ॥२॥ पांवरोपिरहेरिनमां
हीरजपूतकोऊ, हयगजगाजतजुरतजहांदलहे
वाजतऊफाउसहनाईसिंधूरागपुनी, सुनतही
कायरकीछूटिजातकलहें॥ झलकतबराछिनराछि
तरवारयेहः मोरमारकरतपरतषलभलहें एसे-

जुद्धमेंअडिग सुंदर सुभट सोई, घरमाहीसूरमा कहावत सकलहे ॥ ३॥ असनवसनबहुभूषन सकलअंग, संपति विविध भांति भर्योसबघर हे श्रवननगारोसुनिछिनकमें छांडिजात, ऐसेनहीजानेकछूमेरेउहांमरहे ॥ मनमेंउछाहर नमाहीटूकटूकेहोई, निरभैनिसंकवाकेरंच हुनडरहे सुंदरकहतकोऊदेहकोममत्वनाहीं, सूरमाकोदेषीयतसीसबिनुधरहे ॥ ४ ॥ रूरबे कोचावजाके ताकीताकिकरे घाव, आगेधरिपा वफिरपीछेनसंभारेहे हाथलीयेहथीयारती- छनलगायेधार, वारनहींलागेसबपिसुनमहा रहे ॥ बोटनहीराषेकछुलोटपोटहोईजाई, चो टनहीचूकेसीसरिपुकोउतारहे सुंदरकहतना हीनेकहूनसोचपोच, सोईसूरवीरधीरमर- जायमारीहे ॥ ५ ॥ अधिकअजानबाहूमनमें उ- छाहकीये, दीयेगजढाहसुषबरषतनूरहे काढे जबनरवालबालसब ठाढेहोई, अतिविकराल पुनिदेषतक्रूरहे ॥ नेकनउसासलेतकैजकूंफि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

टाईदेत, षेतनहींछांडेमारिकरेचकचूरहे सुंदरक हततांकीकीरति प्रसिद्धहोई, सोईसूरवीरधीर-स्यामके हजूरहे ॥६॥ ज्ञानकोकवचअंगकाहूसोन होईभंग, टोपसीसऊलकतपरमविवेकहे तनता-जीअसवारलीयेसमसेररसार, आगेहोकोंपांवध रै भागनेकीटेकहे ॥ छूटनबंबूकबानमचेजहांघम सान, देषीकेपिसुनदलमारतअनेकहे सुंदरस कललोकमाहीतांको जेजेकार, ऐसोसूरवीरकोउ कोदिनमेएकहे ॥७॥ सूरवीररिपुसनमुषदेषि-चोटकरे, मारेतबताकोंतोकितरवारतीरसों, साधुआठोजामवेठोंमनहींसोंजुद्धकरे, जाकेमुह-माथोनहींदेषीयेशरीरसों ॥ सूरवीरभूमीपरदूरही लेदोरिलगे, साधूरूनकोंषकरिराषेधरधीरसों सुं-दरकहततहांकाहूकोनपांवटिके, साधूकोसंग्रा-महेअधीकसूरवीरसों ॥८॥ पेंचेकरडीक-मानज्ञानकोलगायोबान, मार्योमहाबलमन जगजिनराज्योहें ॥ ताकेअगवाणीपंचजोधाउ कतलकीये, औरररह्योपर्योसबअरिदलभाज्यो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है ॥ एसोकोउसुभटजगतमेंनदेषीयत, जाकेआगे कालहूसोकंपिकेपरान्यौहै सुंदरकहतताकीसो भातिहूंलोकमांही, साधूसौंनसुरवीरकोईहस- जान्यौहै ॥९॥ कामसोंप्रबलमहाजीतेजिनतीन लोक, सोतोएकसाधूकोविचारआगेहास्यौहै क्रोधसोकरालजाकेदेषतनधीरधरे, सोउसाधूक्ष माकेहथ्यारसोविदास्योहै ॥ लोभसोसुभटसाधू- तोषसोंगिरायदीयो ॥ मोहसोंनृपतिसाधूज्ञानसु- महास्योहै सुंदरकहतऐसोसाधुकोईसूरवीर, ता कीताकीसबहीपिसुनदलमास्योहै ॥१०॥ मारेकाम क्रोधसबलोभमोहपीसडारे, इंद्रिहुकतलकरि- कीयोरजपूतोहै मास्योमहामतमनमारेअहंकार- मीर, मारेमदमत्सरएसोरनरूतोहै ॥ मारीआ- सातष्णापुनिपापनिसापनिदोऊ, सबकोमहार करिनिजपदपहुंतोहै सुंदरकहतएसोसाधू- कोईसूरवीर, वैरीसबमारीकेनचिंतहोयसूं- तोहै ॥११॥ कीयेजीनमनहाथइंद्रिनकोसबसा थ, घेरीघेरीअपनेईनाथसोलगायेहें औरउअ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नेकवैरीमारेसबजुद्धकरि, कामक्रोधलोभमोहषो
दकेबहायेहें कीयोहेसंग्रामजिन दीयोहे भगाईदल,
एसेमहासुभटसुग्रंथनिमेंगाअेहे ॥ सुंदरकहत
औरसुरयोंहिषपिगए, साधूसूरवीरवेईजगत
मेंआएहे॥१२॥महामतहाथीमनराष्योहेपकरि
जिन, अतिही प्रचंडजामेंबहुतगुमानहें काम-
क्रोधलोभमोहबांधेचरयौपावपुनि, छूटनेनपावे
नेकप्रानपीलवानहें ॥ कबहूंजोकरेजोरसावधा-
नसांझभोर· सदाएकहाथमेंअंकुसगुरुज्ञान-
हें सुंदरकहतऔरकाहूकेनवसहोई, ऐसेको
नसूरवीरसाधूकेसमानहे ॥१३॥ ॥इति-
सूरातनकोअंगसमाप्तः ॥२१॥ ॥छ॥
॥ ॥छ॥ ॥ अथसाधूकोअंगप्रा-
रंभः॥ ॥छंदइंदव॥ ॥प्रीतिप्रचंडल-
गेपरब्रह्महीं, औरसबेकछूलागतफीको· सुद्ध
हृदेमनहोइसुनिर्मल, द्वैतप्रभावमिटेसबजीको॥
गोष्टिरुज्ञानअनंतचलेजिहां, सुंदरजेसेप्र-
वाहनदीको नाहीतेज्ञानकरोनिसवासर, सा-

धूकोसंगसदाअतिनीको ॥१॥ जोकोईजाईमिले उनसोंनर, होतपवित्रलगेहरिरंगा दोषकलंकसबे मिटिजाइसुं, नीचहुजाईकैहोतउत्तंगा ॥ ज्योंजल-औरमलीनमहा अति, गंगमिल्योहोईजातहेगंगा, सुंदरसुद्धकरेंततकालजु, हेजगमाहींबडोसतसंगा ॥ २ ॥ ज्यौंलटभृंगकरेअपनेसम, तासनभिन्नक हेनहिंकोई ज्योंद्रुमअोरअनेकनिभांतिन, चंदनकीढिगचंदनहोई ॥ ज्यौंजलछूद्रमिलेजबगंगही, होइपवित्रउहेजलसोई सुंदरजातसुभावमिटे सब, साधूकेसंगतेसाधूहीहोई ॥ ३ ॥ जोकोउआवतहेउनकेढिग, वाहीसुनावतसब्दसंदेसो, ताहीकींतेसेहीअोषदीलावत, जाहीकोंरोगहीजा-नतजेसो ॥ कर्मकलंकहिकाटतहेसब, सुद्धकरेपुनकंचनतेसो सुंदरवस्तुविचारतहे, नित-संतनिकोजुप्रभावहेअेसो ॥ ४ ॥ जोपरब्रह्मसि ल्योकोउचाहत, तोनितसंतसमागमकीजे अंतरमेटिनिरंतरहोयके, लेउनकोंअपनेमनदीजे ॥ वेमुषद्वारउचारकरेकछू, सोअनयाससुधारस-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीजें सुंदरसूरप्रकास भयोजब, औरअज्ञान-सबैतमछीजे ॥५॥ जादिनतें सतसंगमिल्योतब, तादिनतें भ्रमभाजगयोहें औरउपाय थकेसबही-तब, संतनिअद्भुयज्ञानदयोहे ॥ पोतप्रवालक्यौंकरिछूवत, एकअमोलकलाललयोहें कोनप्रकाररहेरजनीतम, सुंदरसूरप्रकाशभयोहे ॥६॥ संतसदासबकोहितवंछित, जानतहेनरबूडतका-टें देउपदेसमिटाईसबेभ्रम, देकरिज्ञानजहांज-हीचाढें ॥ जेविषयासुषनाहिनछांडत, ज्यौंकपिमूठगहेसठगाढें सुंदरलेदुषकोंसुषमानत हाटहीहाटविकावतहां ढें ॥७॥ सोअनयासतरें-भवसागर, जोसतसंगतमेंचलिआवे ज्यौंकणिहारणभेदकरेकछू, आईचढेतिहिंनावचढावे॥ ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यहुशूद्र, मलेछचंडालहीपारलगावे सुंदरबारकछुनहिलागत, यानरदेहअ-भैपदपावें ॥८॥ ज्यौंहमषाईपीवेअरुबोढही, तेसेहीसबलोकबषानें ज्योंजलमेमसिकेप्रतिबिंबही, आपसमांजलजंतुप्रमानें ॥ ज्यौंषगछाहध-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रापरदीसत, सुंदरपंषिउडेअसमानें॥ त्योंसब देहनिकेऋतदेषत, संतनिकीगतिक्यौंकोउजानें॥९॥ ज्यौंषपराकरलेघरडोलत, मागतभीष हीतोनहींलाजें जोसुषसेजपटंबरभूषन, लावतचंदनतोप्रतिराजें॥ जोकोउआयकहेसुषतेंकछु,जानततांहीबयारहीबाजें सुंदरसंसयदूरभयेसब,जोकछुसाधूकरेंसोईछाजें॥१०॥ कोउकनिंदतकोउकवंदत, कोउककेतहेआइकेभछन कोउकआयलगावतचंदन, कोउकडारतधूरितत्तछन॥ कोउकहेयहमूरषदीसत,कोउकहेयहआंहिविचछन सुंदरकाहूसौंरागनद्वेषन, एसबजानहूसाधूकेलछन॥११॥ तातमिलेपुनिमातमिलेसुत, आतमिलेजुवतिसुषदाई राजमिलेगजबाजमिलेसब, साजमिलेमनवांछितपाई॥ लोकमिलेसुरलोकमिलेविधि, लोकमिलेबैकुंठहिजाई सुंदरऔरमिलेसबहीसुष, संतसमागमदुर्लभभाई॥१२॥ ॥छंदमनहर॥ ॥देवहूभयेतें कहांइंद्रहूभयतेंकहां, विधिहूकेलोकतेंबहुरिआइ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यतुहे मानुष भयेतेकहां भूपति भयेते कहा, द्वि
जहू भयेतेकहा पारजाइयतुहे॥पसुहू भयेतेकहां
पंषीहू भयेतेकहां, पन्नगभयेतेकहा क्यौंअघा-
इयतुहे छूटिवेकोसुंदरउपाय अेकसाधूसंग,
जिनकीकृपातें अतिसुषपाइयतुहे ॥१३॥ इंद्रा-
नीशृंगार धरिचंदनलगायोअंग, वाहीदेषीइंद्रभ्र
त्तिकामावसभयोहे सूकरीहू कर्दमबीच हू मेंलो-
टिकरि, आगेजाईसूकरकोमनहरिलयोहे ॥जेसो
सुषसूकरकोते सोसुषमधवाको, तेसोसुषनरप
सुपंषिनकोंदयोहे सुंदरकहतजाके भयोब्रह्मानं-
दसुष, सोईसाधूजगतमेंजीती करिगयोहे॥१४
॥धूलिजेंसोधनजाके सुलिसोसंसारसुष, भूलि
जेसोभागदेषेंअंतकेसीयारीहे पापजेसीप्रभुता
ईसापजेसोसनमान, बडाईविछुनजेसीनागनी
सीनारीहे ॥अग्निजेसोइंद्रलोक विघ्नजेसोविधि
लोक, किरतीकलंकजेसी सिधिसीलगारीहे वास
नानकोईवाकी ऐसीमतिसदाजाकी, सुंदरकहत
ताहीवंदनाहमारीहे ॥१५॥ कामहीनक्रोधजाके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोभहीनमोहताके, मदहीनमछरनकोउनवि-
कारोहे दुषहीनसुषमाने पापहीनपुन्यजानें, हर-
षनसोकअनेदेहहीतेंन्यारोहे ॥ निंद्यानप्रसंसाक
रेरागहीनदोषधरे, लेनहीनदेनजाकेकछूनपसा
रोहें सुंदरकहतताकीअगमअगाधगति, एसो
कोऊसाधूसोतोरामजीकोंप्यारोहें॥ १६॥ आठो-
जामजमनेमआठोजामरहेप्रेम, आठोजामजाग्य
जज्ञकीयोबहूदानजू आठोजामजपतपआठो-
जामलियोव्रत, आठोजामतीर्थमेंकरतहेस्नानजू
॥ आठोजामपूजाविधिआठोजामआरतीहू, आ
ठोजामदंडव्रतसमरनध्यानजू सुंदरकहतजिनकी
योसबआठोजाम, सोईसाधूजाकेउरएकभगवा
नजू ॥ १७ ॥ जेसे आरसीकोमेलकाटनसिकलि-
गर, मुषमेंनफेरीकोऊवहेवाकोपोनहे जेसेबेद-
नेंनमेंसलाकामेलिसुधकरे, पटलगएतेनहां-
ज्योंकित्योंहिजोतहें ॥ जेसेवायूबादरविषेर-
केंउडाईदेत, रवितोआकासमाहींसदाईउ-
द्योतहे सुंदरकहतभ्रमछिनमेंविलाईजात॥
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साधूहीकेसंगतेंस्वरूपज्ञानहोतहे॥१८॥सूत-
कदादुरजीवसकलजीवायेजिन, घरषतवानीसु
षमेघकीसीधारकों देतउपदेसकोऊस्वारथनत
वलेस, निसदिनकरतहेब्रह्महिविचारकों॥
ओरउसंदेहसबमेदतनिमषमाहीं, सूरजमि-
टाईदेतजेसेअंधकारकों सुंदरकहतहेंसवासी
सुषसागरके, संतजनआयेहेंसोपरउपकारकों
॥१९॥हीराहीनलालहीनपारसनचिंतामनी,ओ
रउअनेकनगकहोकहांकीजिये कामधेनुसुरत
रुचंदननदीसमुद्र, नोकाहूजिहाजबेठकबहुक
छीजीये॥पृथ्वीआपतेजवायूव्योमलोंसकलज
ड, चंदसूरसीतलतपतगुनलीजिये सुंदरवि-
चारहमसोधेसबदेषेलोक, संतनिकेसमकहोओ
रकहांदीजिये॥२०॥जिनतनमनप्रानदीनोसबमे-
रेहेत, ओरउममत्वबुद्धीआपनीउठाईहें जाग
तउसोवतउगावतहेमेरेगुन, करतभजनध्यानदू
सरीनकोईहे॥तिनकेमेपीछेलग्योफिरतहोनि-
सदिन, सुंदरकहतमेरीउनतेंबडाईहें वहेमेरेप्रि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यमेंहोउनकेआधीनसदा संतनिकीमहिमातोश्री मुषसुनाइहे॥२१॥जगतब्योहारसबदेषतहेऊपर को, अंतःकरनकोतोनेकनपीछानेहे छाजनके-भोजनकेहलनचलनकछु, औरकोऊकीयाकीतो मध्यईबषानेहे ॥आपनेई अवगुनआरोपेअ-ज्ञानीजीव, सुंदरकहततांतेनिंदाहीकौंठानेहे भा वमेतोअंतरहेरातिअरुदिनकेसो, साधूकीपरी-क्षाकोउकेसेंकरिजानेहें॥२२॥ऊहीदगाबाज ऊहीकुष्टीजुकलंकभर्यो, ऊहीमहापापीवाके नषसिषकीनहे ऊहीगुरुद्रोहीगवुब्राह्मनहन-नहार, ऊहीआतमाकोघातीएसीवाकीबीनहे॥ ऊहीअघकोसमुद्रऊहीआगकोपहार, सुंदरक-हतवाकीबुरीभांतसीचहे ऊहीहेमलेंछऊहीचंडा लबुरेतेबुरो, संतनिकीनिंदाकरेसोतोमहानीचहे ॥२३॥ परीहेबिजुरीताकेऊपरसोअचानक, धू-रिउडिजायकहूंठोरनहीपाईहें पीछेकोउसुगम-हानरकमेपरेजाई, उपरतेजमहूकीमारबहुषाईहां ताकेपीछेभूतप्रेतथावरजंगमजोनी, सहेगीसंक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टतबपीछेपछताईहै सुंदरकहतओरभुगतेंअ-
नंतदुष, संतनिकोंनिंदेताकोंसत्यानासजईहैं
॥२४॥ कूपमेकोमेंडकसौकूपकेंसरावतहै, रा-
जहंससोंकहतकेतोतेरोसरहैं मसकाकहतमे-
रोंसरभरकोंनउडे, मेरेआगेगरुडकीकेतीएक-
जरहै॥ गूबरीलागोलीकोंलूदाईकरिमानेमोद, म-
धुपकोंनिंदतसुगंधजाकोघरहैं अपनीनजाने
गतिसंतनिकोंनामधरें, सुंदरकहतदेषोएसेमू-
दनरहै ॥२५॥ कोउसाधूभजनीकहूतोलथली
नअति, कबहूपारब्धकर्मधकाआईदयोहै जे-
सेकोऊमारगमें चलतआषडिपरे, फेरीकरिउठेत-
बउहेपंथलयोहै ॥जेसेचंद्रमाकीपुनिकलाछीनहो
ईगई, सुंदरसकललोकहूतियाकोंनयोहैं देवहू
कोदेबातनगयोतासेंकहाभयो, पीतरकोमोलसो
तोनाहीकछूगयोहै ॥२६॥ ताहीकेभगतिभाव-
उपजेहेअनायास, जाकीमतिसंतनिसोंसदाअ-
नुरागीहै अतिसुषपावेताकेदुषसबदूरहोई, औ
रहीकाहूकीजिननिंदासबत्यागीहैं॥ संसारकी-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पासकाटीपाईहेपरमपद, संतसंगहीतेंजाकेए-
सीमतिजागीहे सुंदरकहतताकोतुरतकल्यानहो
ई, संतनिकोगुनगहेसोईबडभागीहे ॥ २७ ॥जो
गजज्ञजपतपतीर्थव्रतादिदान, साधनसक-
लनहियाकीसरभरहे औरदेवीदेवताउपासना-
अनेकभांति, संकसबदूरकरितिनतेंनडरहे ॥स
बहीकेसीसपरपांवदेसुगनिहोई, सुंदरकहत-
सोतोजनमेनमरहें मनवचकायकरिअंतरनरा-
षेकछू, संतनिकीसेवाकरेसोईनिसरतहे ॥२८॥
प्रथमेसुजसलेतसीलहूसंतोषलेत, क्षमादया
धर्मलेतपापतेंडरतुहे इंद्रीनिकोंघेरिलेतमनहीं-
कोंफेरीलेत, जोगकीजुगतिलेतध्यानईधरतु
हे॥ गुरुकोवचनलेतहरीजीकोनामलेत, आ-
तमाकोंसोधीलेतभौजलतरतुहें सुंदरकहत-
जगसंतकछूलेतनाहीं, संतजननिसदिनलेवेई
करतुहें॥२९॥ साचोउपदेसदेतभलीभलीसीषदे,
त, समतासबुधिदेतकुमतिहरतुहे मारगदिषा
ईदेतभावहूभगतिदेत, प्रेमकीप्रतीतिदेतअभ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राभरतुहे ॥ज्ञानदेतध्यानदेतआतमाविचारदेत, ब्रह्मकोबताईदेतब्रह्ममेंचरतुहें सुंदरकहतजग संतकछूलेतनाहीं, संतजननिसदिनदेवोईकरतु हें॥३०॥ ॥इतिसाधूकोअंगसमाप्तः॥ ॥ २२॥ ॥छ॥ ॥अथज्ञानीकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदइंदव॥ ॥जाकेहृदेमहिज्ञानप्रकासत, ताकोस्वभावरहेक्योंछानो नेनमेंबेनमेंसेनमेंजानीये, ऊठतबेठतहीअलसानो ॥ज्योंकछुभक्षकीयेउदगारत, केसेहिराषिसकेनअघानो सुंदरदासप्रसिद्धदिषावत, धानकोंषेतपरारतेंजानों॥१॥ ज्ञानप्रकासभयोजिनकेउर, वेघटक्योंहिछिपेनरहेंगे भोडलमांहिंदुरेनहिदीपक, जद्यपिवेसुषमोंनगहेंगे ॥ ज्योंधनसारहीगोप्यछिपावत, तोहिसुगंधहितेपलहेंगे सुंदरओरकहाकोउजानत, बूढेकीवानबटाउकहेंगे॥२॥ बोलतचालतबेठतऊठत, पीवतस्वातहूंसूंघतस्वासें ऊपरतोव्यवहारकरेसब, भीतरस्वप्नसमानजुभासे॥ लेकरितीरपनालकोंसाधत·

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मारतहे पुनफेरअकासें॥ सुंदरदेहक्रियासबदेषत, कोउकपावतज्ञानीकोआसें॥३॥ बैठेतोबैठेचले- तोचलेपुनि, पीछेतोपीछेहीआगेतोआगें बो- लेतोबोल्लेनबोलेतोमानहि सोवेतोसोवेरुजागेतो जागें॥ षाईतोषाईनहींतोनहीजु, येहतोयेहपुनि त्यागेतोत्यागें सुंदरज्ञानीकीऐसीदसायह, जा नेनहीकछुरागविरागे॥४॥ देषतहेपेंकछुनहींदेष त, बालतहेनहिबोल्लवषानें सुंघतहेनहीसूंघत- घ्रानसु, नेसबहेनसुनेयहकानें॥ भक्षकरेअ- रुनाहीभषेकछू, भेदतहेनहींभेदतप्राने लेतहि देतहिलेतनदेतहि, सुंदरज्ञानीकीज्ञानीहीजा- ने॥५॥ काजअकाजभलोनबुरोकछु, उत्तमम- ध्यमदृष्टनआवे कायकवायकमानसकर्मसुआ पविषेंनतिहूंठहरावें॥ हूंकरिहोनकियोनकरोअ- ब, योंमनइंद्रिनिकोयरतावें दीसतहेव्यवहारवि षेनित, सुंदरज्ञानीकीकोउकपावे॥६॥ देषत- ब्रह्मसुनेपुनिब्रह्महि, बोलतहेसोइब्रह्महिबा नी भूमिरुनीररुतेजरुवायुरु, व्योमहिब्रह्मजहां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगमानी ॥ आदिहुअंतहुमध्यहुब्रह्महि, हेसब-
ब्रह्मयहेमतिठानी सुंदरज्ञेयरुज्ञानहुब्रह्महे,
आपहुब्रह्महिजानतज्ञानी ॥७॥ बैठतकेवलऊ
ठतकेवलबोलतकेवलबातकहीहें जगतकेवलसो
वतकेवल, जोवतकेवलद्रष्टिलहीहें ॥ भूत
हुकेवलभव्यहिकेवल, वर्ततकेवलब्रह्मसहीहें
हेसबहीअर्धऊर्धसुकेवल, सुंदरकेवलज्ञानउही
हे ॥८॥ केवलज्ञानभयोजिनकेउर, तेअधऊर्ध-
सुलोचनजाहीं व्यापकब्रह्मअखंडनिरंतर वा-
हिनओरकहूकछुनाहीं ॥ ज्योंघटनासभयोघटव्यों
मसु, लीनभयोपुनहेंनभमाही त्योंपुनिसुक्तिज-
हांवपुछांडत, सुंदरमोक्षसिलाकहुंकाहीं ॥९॥
आदिहुतोनहिअंतरहेनहिं, मध्यशरीरभ-
यो भ्रमकूपा भासतहे कछु औरकोऔरहि,
ज्योंरजुमेंअहिसीपमेंरूपा ॥ देषिमरीचिउठ्योवि
चविभ्रम, जानतनाहींउहेरविधूपा, सुंदरज्ञा
नप्रकासभयोजब, एकअषंडितब्रह्मअनूपा ॥१०॥
छंदमनहर ॥ ॥जाहीकेविवेकज्ञानताहीकेकुस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लभयो, जाहीवोरजाईवाकोंताहीवोरसुषहे जसें-
कोईपायनिपेजारकोंचढाईलेत, ताकोंतोनको-
उकाटे षोभरेकोदुषहे॥ भावेकोउनिंदाकरे भावेतो
प्रसंसाकरे, वेतोंदेषआरसीमेंअपनोइसुषहे
देहकोव्योवारसबमिथ्याकरजानतहें, सुंदरकह
त एकआतमाहीरूपहे॥११॥ अंतःकरनजाकेत
मगुनछाईरह्योजडता अज्ञानवाके आलसभेंत्रा
सहे रजगुनकोप्रभाव अंतःकरनजाके, विविध-
करमवाकेकामनाकोवासहे॥ सत्वगुन अंतःकरन
जाकेदेषीयत, क्रियाकरिसुद्धवाकेभक्तिकोनिवासहे, त्रिगु
णअतीतसाक्षीतुरीयास्वरूपजान, सुंदरकहत वाके
ज्ञानकोप्रकासहे॥१२॥ तमोगुनबुधीसोतोत-
वाकेसमानजेसे, ताकेमध्यस्फुरजकीरंचहुनजो
तहे रजोगुनबुधीजेसेंआरसीकीउंधीवोर, ता-
केमध्यसुरजकीकछुकउद्योतहे॥ सत्वगुनबुधीजेसें-
आरसीकीसुधीओर, ताकेमध्यप्रतिबिंबसूरजको
पोतहे त्रिगुनअतितजेसेंप्रतिबिंबामिटिजात, सुंदरक
हतएकसुरजहीहोतहे॥१३॥ सबसोंउदासीहोइकाढिम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नभिन्नकर, ताकोनामकहीयतपरमवैरागहैं अंतः करनहुकीवासनानिवर्तहोई, ताकोमुनीकहतहैं उहेवडोत्यागहैं ॥चित्तएकईश्वरतैंनेकहूनन्यारोहोई, उहेभक्तकहीयत उहेप्रेममार्गहैं आपुब्रह्मज गतकोएककरीजानेसब, सुंदरकहतवहज्ञानअ मभागेहैं ॥१४॥ कोउनृपफूलनिकीसेजपरिसूतोआई, जबलगजाग्यो तोलौंअतिसुषमान्यौंहैं ॥नीदजबआईतबवाहीकोंस्वपनभयो, जबपर्यो नरककेकुंडमेंयोजान्यौंहै॥ अतिदुषपावेपरनिकस्योनक्योंहीजाई, जागिजबपर्योतबस्वपनबषान्यौहै यहजूठवहजूठजाग्रतस्वपनदोऊ, सुंदर कहतज्ञानीसबभ्रमभान्यौंहै॥१५॥ स्वपनेमेंराजा होईस्वपनेमेंरंकहोई, स्वपनेमेंसुषदुषसत्यकरि जानेहैं स्वपनेमेंबुधीहीनमूठनसमुझकछू, स्वप्नमेंपंडितबहूग्रंथनिवषानेहै ॥स्वप्नमेंकामीहोई इंद्रीनिकेबसपर्यो, स्वपनेमेंजतिहोईअहंकार आनेहै स्वप्नतेंजाग्योजबसमझपरीहैतब, सुंदरकहतसबमिथ्याकरिमानेहैं॥१६॥ विधिननिषे

धकछूभेदनअभेदपुनि, क्रियासोंकरतदीसेयोंही नितप्रतिहै काहूकौंनिकटराषेकाहूकोंनोदूरभाषे काहूसोंनेरेनदूरएसीजाकीमतीहै॥रागहूनदोषको उसोकनउछाहदोऊ, एसीविधिरहेकहूंरतिनाविर तिहै बाहिरव्यवहारठानेंमनमेंस्वपनजाने, सुंदर ज्ञानीकीकछुअद्भूतगतीहै॥१७॥ कामीहैनज तीहैनसूमहैनेसतीहैन, राजाहैनरंकहैनतनहैन मनहै सोवेहैनजागेहैनपीछेहैनआगेहैन, ग्रहे हैनत्यागेहैनघरहैनबनहै॥स्थिरहैनडोलेहैनमो- नहैनबोलेहैन, बंधेहैनषोलेहैनस्वामीहैनजनहै वेसोकोउहोवेजबवाकीगतिजानेतब, सुंदरक- हतज्ञानीज्ञानसुधधनहै॥१८॥ ॥इतिज्ञा नीकोअंगसमाप्तः॥२३॥ ॥६५॥ ॥

अथसांख्यज्ञानकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमन हर॥ ॥छितिजलपावकपवननभमिलिकरि, सब्दरुसपरसरूपरसगंधजु श्रोत्रत्वक्चक्षु घ्राणरसनारसकोज्ञान, वाक्पाणीपादपायूप स्थहिवंधजु मनबुधिचित्तअहंकारएचोवीसत

त्व, पचीसमोजीवतत्व करतहैइं धज्ञु षट्बिंस मोहैब्रह्मसुंदर सुनिहकर्म, व्यापकअषंडए-करसनिरसंगजू ॥१॥ श्रोत्रदिगत्वकुवायूलोचनप्रकासरवि, नासिकाअस्वानिजिह्वावरुनबषानिये वाकअग्निहस्तइंद्रचरनउपेंद्रबल, मेढ्प्र-जापतिगुदामृत्युहूकोठानिये॥मनचंद्रबुधिविधि-चितवासुदेवआहि, अहंकाररुद्रकोप्रभावकरिमानियेजाकीसतापाइसबदेवताप्रकासतहैं, सुंदरसोआतमाहीन्यारोकरिजानीये॥२॥ ॥छंदइंदवा॥ ॥ श्रोत्रसुनेदृगदेषतहैरस, नारसघ्रानसुगंधपियारो, कोमलतात्वकजानतहैपुन, बोलतहैसुषशब्दउचारो ॥पाणियहैपदगौनकरेमल, मूत्रतजेउभयोअघहारो जाकेप्रकासप्रकासतहैसब, सुंदरसोइरहैघटन्यारो ॥३॥ बुधिभ्रमेमनचित्तभ्रमे,अहं-कारभ्रमेकहांजानतनाहीं श्रोत्रभ्रमेत्वकघ्रानभ्रमे, रसनादृगदेषीदसोदिसजाही वाक्यभ्रमेकरपादभ्रमेगुद, हारउपस्थभ्रमेकहूकाही तेरेभ्रमाएभ्रमेसबहीपुनि, सुंदरतूंक्योंभ्रमेउ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नमाहीं ॥४॥ बुद्धिकोबुद्धिरुचित्तकोचित्त, अहं-कोअहंमनकोमनवोई नेनकोनेनहेबेनकोबेनहे, कानकोकानतुचात्वकहोई ॥ घ्रानकोघ्रानहेजीभकोजीभहे, हाथकोहाथपगेपगदोई सीसकोसीसहेप्रानकोप्रानहे, जीवकोजीवहेसुंदरसोई ॥५॥ ॥

॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥प्रश्न॥ ॥ केसेकेजगतयहरच्योहेजगतगुरु, मोसोकहोप्रथमहीकोनतत्वकीनोहे पुरुषकेप्रकृतिकेमहत्तत्वअहंकार, किधोउपजायतभरजसततीनोहे ॥ कीधोव्योमवायुतेजआपकेअवनिकिन, किधोपंचविषयपसारकरिलीनोहे कीधोदसइंद्रिकीधोअंतःकरन किनं, सुंदरकहतकिधोसकलबहीनोहे ॥६॥ ॥

उत्तर ॥ ॥ ब्रह्मतेपुरुषअरुप्रकृतिप्रगटभई, प्रकृतितेमहत्तत्वपुनअहंकारहे अहंकारहूतेतीनगुनसत्वरजतम, तमहूतेमहाभूतविषयपसारहे ॥ रजहूतेइंद्रिदस प्रथकप्रथकभई, सत्वहूतेमनआदीदेवताविचारहे एसेअनुक्रमकरिसिषसंकहतगुरु, सुंदरसकलयहेमिथ्याभ्रमजारहे ॥७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ ॥प्रश्न॥ ॥मेरोरूपभूमीहैकेमेरोरूप-आपहैके; मेरोरूपतेजहैकेमेरोरूपपोनहैं मेरोरूपव्योमहैकेमेरोरूपइंद्रियदश, अंतःकरनहै के बैठोहैकेगोनहै॥ मेरोरूपत्रिगुनकेअहंकार महत्तत्व, प्रकृतिपुरुषकिधोबोलेहैकेमोनहै मेरोरूपस्थूलहैकेसूक्ष्मआदिमेरोरूप, सुंदर पूछतगुरुमेरोरूपकोनहै॥८॥ ॥उत्तर॥ ॥ तूंतोकछुभोमीनाहीं आपतेजवायूनाहीं, व्योमपंचविषेनाहींसोतोभ्रमकूपहै तूंतोकछुइंद्रिअरुअंतःकरननाहीं, तीनगुनतूंतोनाहींन-छांहीधूपहै॥ तूंतोअहंकारनाहींपुनिमहत्तत्व नाहीं,प्रकृतिपुरुषनाहींतूंतोस्वअनूपहै सुंदर बिचारएसेंसिषसोंकहतगुरु, नाहींनाहींकहत रहेसोतेरोरूपहै॥९॥ तेरोतोस्वरूपहैअनूपचिदानंदघन, देहतोमलीनजडयोंविवेककीजीये तूंतोनिहसंगनिराकारअविनासीअज, देहतोविनासवंननाहीनहिंधीजीये॥ तूंतोषटउरमीरहीत सदाएकरस, देहकेविकारसबदेहसिरदीजीये,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुंदरकहतयौंविचारआपुभिनजानी परकीउपा-
धिकहांआपपेचलीजिये ॥१०॥ देहहीनरकरूप
दुषकोनवारपार, देहहीस्वरगरूपजूठोसुषमा-
न्योहे देहहीकोंबंधमोक्षदेहहीअपोक्षपोक्ष, देह
हीकेक्रियाकर्मसुभासुभठान्योहे ॥ देहहीसेऔरदे
हषुसीव्हैविलाषकरे, ताहीकोंसमजविनाआतमा
वषान्योहे दोउदेहतेंअलिप्तदोउकोप्रकासकहे, सुं
दरचैतन्यरूपन्यारोकरिजान्योहे ॥ ११ ॥ देहहले
देहचले देहहीसोंदेहमिले, देहषाइदेहपीवे दे-
हहीभरतहे देहहिहीमारेगरे देहहीपावकज-
रे, देहरनमाहेजूझे देहहीपरतहे। देहहिअने-
ककर्मकरतविविधभांति, चमककीसतापाईलो
हज्योंफिरतहे आतमाचैतन्यरूपव्यापकसा-
क्षीअनूप, सुंदरकहतसोतोजामेनमरतुहे ॥
१२॥ देहयहकिनकोहेदेहपंचभूतनिको, पंच
भूतकोनतेहेतामसअहंकारतें अहंकारकोन
तेहेजासोमहत्तत्वकहे, महत्तत्वकोनतेहेप्र-
कृतिमंझारतें ॥ प्रकृतिसोंकोनतेहेपुरुषहेजा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोनाम, पुरुषसोंकोनतेहे ब्रह्मनिराधारतें ब्रह्म अबजान्यो हमजान्यो हेतोनिश्चेकर, निश्चेहमकी योहेतोचुपमुषद्वारतें ॥१३॥ ॥पूर्ववत्॥ एक घटमाहींतोस्रुगंधजलभरिराष्यौ, एकघटमाहींतोदुर्गंधजलभर्यौहे एकघटमाहींपुनिगंगोदकराष्योआनी, एकघटमाहींआनीमदीराउकर्यौ हे ॥एकघृतएकतेलएकमाहींलषुनीत, सबहीमे सविताकोप्रतिबिंबपर्यौहें तेसेहीसुंदरऊंचनीचमध्यएकब्रह्म, देहभेददेषीभिन्नभिन्ननामधर्यौहे ॥१४॥ भूमिपरआपआपहूकेपरे पावक हे, पावककेपरपुनिवायुहूबहतहे वायूपरेव्योम व्योमहूकेपरइंद्रीदस, इद्रीनिकेपरअंतकरनर हतुहे ॥ अंतःकरनपरतीनोगुनअहंकार, अहंकारपरमहतत्त्वकोंलहतुहे महतत्त्वपरमूलमाया.मायापरब्रह्म, ताहीतेपरातपरसुंदर कहतु हें ॥१५॥ भूमितोबिलीनगंधगंधतोविलीनआप, आपहूविलीनरसरसतेजषातहे तेजरूपरूप वायूवायूहीसपर्सलीन, सोसपर्स व्योमशब्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तमहीविलातहे ॥ इंद्रीदसरजमनदेवता विलीनस-
त्व, तीनगुनअहंमहत्तत्वगलिजातुहे महत्तत्व
प्रकृतिरुप्रकृतिपुरुषलीन, सुंदरपुरुषजाईब्रह्म
मेंसमातहे ॥ १६ ॥ आतमाअचलरूपएकरस-
रहेसदा, देहविवहारनिमेदेहहीसोजानीये जेसे
ससीमंडलअभंगनहींभंगहोई, कलाआईजावे
घटबढसोबषानीये ॥ जेसेद्रुमथिरनदीहुकेतट दे-
षीयत, नदीकेप्रवाहमाहींचलतेसोमानीये, तेसे-
आतमाअनंतदेह सो प्रकासकरे, सुंदरकहतयों
विचारभ्रमभानीये ॥ १७ ॥ आतमाशरीरदोऊ
एकमेकदेषीयत, जबलगअंतःकरनमेंअज्ञानहे
जेसेअंधेयारीरेनघरमेंअंधेरोहोई, आंषनि-
कोतेजज्योंकोत्योंहीविदमानहे जद्यपिअंधेरे
माहींनेनकोनसूझेकछू, तदपिअंधेरेसोंअले
पसोबषानहे सुंदरकहततोलोएकमेकजानी
यत, जोलोंनहींप्रगटप्रकासज्ञानभानहे ॥ १८
॥ देहजडदेवलआतमाचैतन्यदेव, याहीकोस-
मझिकरियासोंमननाईहे देवलकोंबीनरसनबार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहींलागेकछु, देवतोअभंगसदादेवलमेंपाई ये॥देवकीसंगतीकरीदेवलकीपूजाहोत भोज-नविविधभांतिभोगहूलगाईये, देवलतेंन्यारोदेवदेवलमेंदेषीयत सुंदरविराजमानऔरकहांजाइये॥१९॥प्रीतसीनपातीकोऊप्रेमसेनफूलऔर, चितसोनचंदनसनेहसोनसेहरा हृदेसोन-आसन सहजसोनसिंघासन, भावसीनसेज-औरसुनसोनगेहरा॥सीलसोनस्नाननाहीध्यानसोनधूपऔर, ज्ञानसोनदीपकअज्ञानतमकेहर मनसीनमालाकोउसोहंसोनजापऔर, आतमासोदेवनाहींदेहसोंनदेहरा॥२०॥स्वासास्वासरातिदिन सोहंसोहंहोयजाप, याहीमालावारवारदृढकेधरतुहे देहपरेइंद्रिपरेअं-तकरणपरे, एकहीअषंडजापतापकुंहरतुहे॥काठुकीरुद्राक्षकीरूसूतहूकीमालाऔर, इनकेफिरायेकछुकारजसरतुहे सुंदरकहततातेंआनमाचैतन्यरूप, आपकोभजनसोतोआप-हीकरतुहे॥२१॥षीरनीरमिलेदोऊएकठेहीहोइ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहै, नीरजेसेछांडहंससषीरकौंगहतुहें कंचनमें-ओरघातुमिलीकरीबानपड्यो, सुद्धकरिकंच नसीनारज्यौलहतुहे ।पावककूदारमध्यदारहू-सोहोइरत्यो,माथिकरिकाढेवहद्वारकोंदहतुहे ते सेहीसुंदरमिल्योंआतमाअनातमाजु, भिन्न-भिन्नकरिसोतोसांख्यहीकहतुहे ॥२२॥अन्न-मयकोसमोतोपिंडहेप्रगटयह, प्रानमयको-स पंचवायूहीबषानीये, मनोमयकोसपंचकर्म इंद्रीहेप्रसिद्ध, पंचज्ञानइंद्रीयविज्ञानकोसजा नीये ॥जाग्रतस्वपनविषेकहीयेचत्वारकोस, सुषोपतीमाहींकोसआनंदमेंमा नीये पंच-कोसआतमाकोंजीवनामकहीयत, सुंदशंकर भास सांष्ययहवषानीये॥२३॥जाग्रतअवस्था जेसेसदनमेंबेठीयत, तहांकछुहोईताहीभली भांतदेषीये स्वपनअवस्थाजेसेदेहरिमेंबैठेजाय, रहेजोईउहांवाकीवस्तुसबलेषीये॥सुषोपतिभोह रेमेंबैठलेनसूऊपरे, महाअंधघोरतहांकछूईनपे-षीये व्योमअनुस्यूतघरदेहरेंभोंहरेमांहीसुंदर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साषीस्वरूपतुरीयाविसेषीये ॥ २४ ॥ जाग्रतके-
विषेजीवनेननीमेदेषियत, विविधव्योवारसब
इंद्रनिगहतुहे स्वपनेहूमाहीं पुनी वैसेहीव्यो-
हारहोत, नेननीतेआइकरिकंठमेंरहतुहे ॥ सुषो
पतिल्हदेमेविलीनहोइजातसब, जाग्रतस्वपन-
कीतोसुधिनलहतुहे नीनहूअवस्थाकोईसाक्षी
जबजानेआप, तुरीयास्वरूपयह सुंदरकहतुहें
॥ २५॥　॥छंदइंदव॥　॥ भोमीतेसूक्ष
मआपकोजानहू, आपतेंसूक्षमतेजकोअंगा ते
जतेंसूक्षमवायुवहेनित, वायूतेसूक्षमव्योमउ-
तंगा ॥ व्योमतेसूक्षमहेगुननीनहूं,
तिहूंतेअहंमहत्तत्वप्रसंगा ताहूतेंसूक्षममूलप्र
प्रकृतिजु, मूलतेसुंदरब्रह्मअभंगा ॥२६॥ ब्रह्मनि
रंतरव्यापकअग्निअरूप, अषंडितहैसबमा
हीं ईस्वरपावकरासिप्रचंडजु संगउपाधिलीये
वरताहीं ॥ जीवअनंतमसालचिरागसु दीपपतं
गअनेकदिषाहीं सुंदरद्वैतउपाधिमिटेजब,
ईस्वरजीवजुदेकछुनाहीं ॥२७॥ ज्योंनरषावकलो-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हतपावत, पावकलोहमिलेसुदिषाई चोटअने-
कपरे घनकीसिर, लोहबधेकछुपावकनाहीं॥पाव
कलीनभयोअपनेघरसौंनकुलोहभयोतबताहीं॥त्यौं
यहआतमदेहनिरंतर, सुंदरभिन्नरहेमिलिमा
हीं॥२८॥आतमचेतनसुद्धनिरंतर, भिन्नरहे क-
छुलिप्तनहोई॥हेजडचेतनअंतःकरनजु, सुद्ध-
असुधलीयेगुनदोई॥देहअसुधमलीनमहाजड,
हालनचालसकेपुनहोई सुंदरतीनविभागकीये-
विन, भूलिपरेभ्रमतेसबकोई॥२९॥ ॥छं
दसवैयामात्रा३१ ॥ब्रह्मअरूपअरूपी
पावक, व्यापकजुगलनदीसतरंग देहदारतेप्रग
टदेषीयत, अंतःकरनअग्निहपअंग॥तेजप्र-
कासकल्पनातौंलगि, ज्यौंलगिरहेउपाधिप्रसंगज
हाकेतहांलीनपुनहोई, सुंदरहोईसदाअभंग॥
३०॥ देहसरावतेलपुनिमारुत, बातीअंतःकर
नबिचार प्रगटजोतियहचेतनदीसे, जातेभयेस
कलउजियार॥व्यापकअग्निमथनकरिजोए, दी-
पकबहुतभांतिबिस्तार सुंदरअद्भुतरचनातेरी
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तूंहीएकअनेकप्रकार ॥३१॥ तिलमेंतेलदूधमें घृतहे, दारमाहिपावकपहिचान पुहपमाहिजुंघ गटवासना, इषमांहिरसकहतबषान ॥पोसतमांहीअफीमनिरंतर, वनस्पतीमेंसहतप्रमान सुंदरभिन्नमिल्योपुनिदीसत, देहमाहींयौआतमजान ॥३२॥ ॥ छंदसवैयामात्रा ३२॥ ॥ जाग्रतस्वप्नसुषोपतितीनौ, अंतःकरनअवस्थापावें प्रानचलेजाग्रतअरुसुप्त, सुषोपतिमेंकछूवेनरहावे प्रानगएतेरहेनकोऊ, सकलदेषताथाटविलावे सुंदरआतमनित्यनिरंतर, सोतोकितहूंजायनआवे ॥३३॥ ॥सवैयाछंदमात्रा ३२॥ ॥ ॥पंद्रहतत्वस्थूलकुंभकमे, सूक्षमलिंगभयोज्योंतोय·यहांजीवउहांआभाजानोउन, सेब्रह्मइंदुप्रतिबिंबजुदोय ॥घटफूटेजलगयोविलैव्हे, अंतःकरनकहेनहिकोय, तबप्रतिबिंबमिलेससिहीमही, सुंदरजीवब्रह्ममयहोय ॥३४॥ ॥ ॥छंदमनहर॥ ॥जैसेव्योमकुंभकेबाहेरअरुभीतरहू, कोउनरकुंभकूंहजारकोसलेगयोज्यौंहि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्योमइहांत्यूहीउहांपुनीहैअषंड, इहांनबिछोह न तो उहांमिलकेभयो कुंभतोनयोपुराणोहोईकैबि-नासिजाई, व्योमतोनहैपुरानोनतोकछूहैनयो नैसे-हीसुंदरदेहआवेरहैनासहोई, आतमाअचल-अविनासीहैअनामयो ॥३५॥ देहकेसंजोगहीतैसी तलगेधामलगें, देहकेसंजोगहितेक्षुधातृषायौं-नकौं देहकेसंजोगहितेकटुकमधुरस्वाद, देहके-संजोगकहेषाटोषारोलौंनकौं॥ देहकेसंजोगकहै सूषतेंअनेकबात, देहकेसंजोगहिपकरिरहैमौ नकौं सुंदरदेहकेसंजोगदुषमानेसुषमाने, देह-कोसंजोगगयोदुषसुषकौनकौं॥ ३६॥ आपुकी-प्रसंसासुनिआपहिषुसालहोई, आपुहीकीनिं-दासुनिआपमुरफाईहै आपुहिकोसुषमानी आपुसुषपावतहें, आपुहिकोदुषमानीआपुदु षपाइहें॥आपुहीकीरक्षाकरेआपुहीकीघातकरे, आपुहिहत्यारोहोईगंगाजाइन्हाइहै सुंदरकहत एसेदेहहीकोआपुमानी, निजरूपभूलिकेकरत होईहाईहै॥३७॥ ॥ इतिसांख्यज्ञान-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोअंगसमाप्तः ॥२४॥ ॥ अथअपनेभावकौ-
अंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥ एकहीआ
पनोभावजहांतहां, बुद्धिकेजोगतेविभ्रमभासे ॥
जोयहक्रूरतोक्रूरवहीपुनि, याकेषासेतेउहांपुनि
षासे ॥ जोयहसाधुतोसाधुउहांपुनियाके, हसेते-
उहांपुनिहांसे जेसोईआपकरेमुषसुंदर, तैसो
ईदर्पनमांहीप्रकासे ॥१॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥
जेसेस्वानकाचकेसदनमधदेषिआर, भूंकिभूंकि
मरतकरतअभिमानजु जेसेगजफटिकशिलासो-
अरितोरेदंत, जेसेसिंघकूपमांहिंउकमुलान-
जू ॥ जेसेकोउफेरीषातफिरतसुदेरवेजग, तैसेही
सुंदरसबतेंरोइअज्ञानजु आपनोईभ्रमसोंतो
दुसरोदिषाइदेत, आपकेविचारकोऊदूसरोन-
आनजू ॥२॥ नीचऊंचभलोबुरोसज्जनदुर्जन, सु
निमंडितमूरषसत्रुमित्ररंकरावहे मानअपमानपु
न्यपापसुषदुषसोऊ, स्वरगनरकबंधमोक्षहूको-
चावहे ॥ देवताअसुरभूतप्रेतकीटकुंजरऊ, पशुअ
रुपंषीस्वानसूकरबिलावहे सुंदरकहतयहएक-

ईअनेकरूप, जोईकछूदेषीयेसोआपनोईभावहे॥
३॥ याहीकेजागतकाम याहीकेजागतक्रोध, याही
केजागतलोभयेहीमोहमत्तहे याहीकोतोयोहीबैरी
याहीकोतोयोहीबैरीयाहीकोतोयोहीमित्र, याको
योहीसुषदेतयाहीदुषदातहे॥ योहीब्रह्मायोहीरुद्र
योहीविष्णुदेषीयत, योहीदेवदैतयक्षसकलसंगा
तहे याहीकोप्रभावसोतोयाहीकोंदिषाइदेत, सुंद
रकहतयेहीआतमांविष्यातहे॥ ४॥ याहीतोकों
भावयाकोंसंकउपजावतहे याहीकोतोभावयाही
निसंककरतुहे याहीकोतोभावयाकोंभूतप्रेतहोइ
लगे, याहीकोतोभावयाकीकुमतिहरतुहे॥ याही
कोतोभावयाहीधातुकोबपुराकरे, याहीकोतोभाव
याहीथिरकेंधरतुहे याहीकोतोभावयाको
धारेमेंबहाईदेत, सुंदरयाहीकोंभावयाही
लेतरतुहे॥ ५॥ आपहीकोभावसोतोआपकोंअग्र
व्हेहोत, आपहीआरोपकरिआपमनलायोहे देवी
अन्यदेवकोउभावकोउपासेताही, कहूँसेतोपुत्र
धनइनहींतेंपायोहे॥ जेसेस्वानहाडकोंचचोरके

रिसानेसौंदं, आपहीकौमुषफोरीलोहूचाटषायो है तैसेहीसुंदरयहआपुहीचैतन्यआही, आपने अज्ञानकरिआेरसोबंधायोहै ॥६॥ ॥ छंदइंदव॥ ॥नीचेतेनीचेरुऊंचेतेऊपर, आगेतेआगेरुपीछेतेपीछो दूरतेंदूरनजीकतेंनेरेहि, आडेते आडोहितीछेतेतीछो॥ बाहिरभीतर भीतरबाहिर, ज्यौंकोउजानत त्यौंकरईछा जैसोहीआपनोभावहैसुंदर, तैसोहीहै दूगधोलिके दीछो॥७॥ आपने भावतेंसूरसोदीषत, आपनेभावतेंचंदसोभासे आपनेभावतेतारेअनंतजु, आपनेभावतेविद्युततासे॥आपनेभावतेनूरहेतेजहे,आपनेभावतेंज्योतिप्रकासे तैसोहीताही दिषावत सुंदर, जैसोहीहोतहैजाहिकोंआसे ॥८॥आपनेभावतेसेवकसाहिब, आपनेभावसबेकोउध्यावे आपनेंभावतेअन्यउपासत, आपनेभावते भक्तहुगावे ॥आपनेभावतेदुष्टसंघारत,आपनेभावते बाहिरआवे जैसोहीआपनोहीभाव सुंदर,ताहीकोतेसोई होइदिषावे॥ ९॥ आप-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नेभावतेंदूधपिबावत, आपनेभावतेंविठ्ठलजान्यौ ॥ आपनेभावतेंचारभुजापुनि, आपनेभावतेंसिंघसोंमान्यौ सुंदरआपनेंभावकोकारन, आपही पूरनब्रह्मपिछान्यौ ॥१०॥ आपनेभावतेंहोइउदासजु, आपनेभावतेंप्रेमसोरोवे आपनेभाव मिल्योपुनिजानत, आपनेभावतेअंतरजोवे॥ आपनेभावरहेनितजायत, आपनेभावसमाधि मेंसोवे सुंदरजेसोईभावहेआपनो, तेसोईआपहाहांतहहोवे ॥११॥ आपनेभावतेंभूलपरयो भ्रम, देहस्वरूपभयोअभिमानी आपनेभावतें चंचलताअति, आपनेभावतेंबुद्धिथिरानी॥आपने भावत्तेआपविसारत, आपनेभावत्तेआनमज्ञानी सुंदरजेसोईभावहे आपनो तेसोईहोईगयोयहप्रानी॥ १२॥ ॥
॥ ॥ इतिआपनेभावकोअंगसमाप्त:॥२५॥अथस्वरूपविस्मरणकोअंगप्रारंभः छंइंदव॥ जाघटकीउनहारहेजेसिहि, ताघटचेतनतेसोइदीसे हाथीकीदेहमेंहाथीसोमान-

त, चींटीकीदेहमेचींटीकरीसे ॥ सिंघकीदेहमेंसिंघसोंमानत, कीरकीदेहमेंमानत कीरसे जेसीउपाधीभईजहांसुंदर, तेसोई होईरह्योनषसीसे ॥१॥ जेसेहीपावककाठकेजोगतें, काठसोहोयरह्योइकठोर। दीरघकाठमेदीरघलागत, चौरसकाठमेंलागतचोरा॥ आपनोरूपप्रकासकरेजब, जारकरैतबओरकोओरा तेसेहीसुंदरचेतन्यआपरू, आपकोंजानतनाहीनघोरा॥२॥ ॥छंद मनहर॥ ॥प्रश्न॥ ॥अजरअमरअविगतअविनासिअज, कहतसकलजनश्रुतिअवगाहेतें निरगुननिरमलअनिरुधनिरबंधनित, एसेहीकहतओरग्रंथनिकेथाहेतें॥ व्यापकअषंडएकरसपरिपूरनहे, सुंदरसकलरमिरह्योब्रह्मताहेतें सहजसदाउद्योत याहीतेंअचंभाहोत, आपुहीतोआपभूलगयोसोतोकाहेतें॥३॥ ॥उत्तर॥ ॥ जेसेमीनमांसकोनिगलिजातलोभलगि, लोहकोकंटकनहींजानतउमाहेतें जेसेकपिगागरमेंमूठिबांधिराषेसठ, छांडनहींदेतसोतोस्वादहीकेचाहेतें

जेसेसुकनारीयरचूंचमारिलदकत, स्फंदरसहतदु षदेतयाहीलाहेतें देहकौसंजोगपायइद्रीनिकेवस परयौ, आपहीकेआपभूलिगयोस्फषचाहेतें॥ ॥४॥ ॥छंदइंदव॥ ॥ ज्यौंकोईमद्य- पियेअतिछाकत, नाहींकछुस्फधिहेभ्रमऐसो ज्यौंकोईषाईरहेटगमूरिहि, जानेनहींकछूकार- नतेसो॥ज्यौंकोऊबालकसंकउपावत, कंपिउ- ठेअरुआनतभैंसो तैसेहीस्फंदरआपसोभूलि स्फ,देषहूचैतनमानेहेकेसो॥५॥ ज्यौंकोईकूप मेंझांकिअलापत, ऐसीही भांतिसुकूपअलापें ज्यौंजलझालतहेलगिपौन, कंहेभ्रमतेप्रतिबिंबहि कांपे॥देहकेप्रानकेजेमनकेकृत, मानतहेसब मोहिकोव्यापे स्फंदरपेंचपरयोअतिसेंकरि, भू लिगयोभ्रमतेब्रह्मआपे॥६॥ ज्यौंद्विजकोउक छांडिमहांतम, शूद्रभयोकरिआपकौंमान्यौं ज्यौं कोउभूपतिसोबतसेजस्फ रंकभयोसुपनेमाहि जान्यौ॥ज्यौंकोउरूपकीरासीअत्यंतकु,रूपक- हेभ्रमभैंचकआन्यौ तैसेहीस्फंदरदेहसांहो-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यके, याब्रह्मआपहीआपभुलान्यौ ॥ ७ ॥ एक हीव्यापकवस्तुनिरंतर, विश्वनहींयहब्रह्मविलासे ज्यौंनटमंत्रनिसौंद्रष्टबांधत, हैकछुऔरहिऔ रहिभासे। ज्यौंरजनीमहिवूऊपरेनहि, ज्यौलग सूरजनाहीप्रकासे· त्यौंलगिआपहिआपनजानत, सुंदरव्हैरह्योसंकटदासे ॥ ८ ॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥ इंद्रिनकोंप्रेरीपुनिइंद्रनिके पीछेपर्यो, आपनीअविद्याकरिआपुतनगह्यो है जोईजोईदेहकोसंकटआईपरेकछु, सोई सोईमानेआपुयातेंदुषसह्योहै ॥ भ्रमतभ्रमत कहुंभ्रमकोनआवेअंत, चिरकालवीत्योपेस्वरूपकोनलह्योहै सुंदरकहतदेषोभ्रमकीप्रबल नोई, भूतनिमेभूतमिलिभूतहोयरह्योहै ॥ ९ ॥ जैसेसुकनलिकानछांडिदेतपगनितें, जानेकाहू औरमोहीबांधिलटकायोहै जेसेकपिगुंजनिकोढेरकरिमानेआग, आगधरीतापैकछूसीत नगमायोहै जैसेकोऊकारजकोजातहुतोपूरव कौं, भ्रमतेउलटिफिरिपाछिमकोंआयोहै तेसें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिसुंदरसबआपहीकोंभ्रमभयो, आपहीकोंभूल करिआपहीबंधायोहे ॥१०॥ जेसेकोउकामनि-केहीयेपरत्युंपेवाल, स्वपनेमेकहेमेरोपुत्रकहूंगयो हे जेसेकाहूपुरुषकेकंठहुतिमनिसोंही, हूढतफि रतकछुएसोभ्रमभयोहे। जेसेकोउवायुकरिबाव रोबकतडोले, औरहीकीओरकहेसुधिभूलगयो हे तेसेहीसुंदरनिजरूपकोंविसारिदेत एसो-भ्रमआपुहीकोंआपकरिलयोहे ॥११॥ दिन दिनछिनछिनहोईजातभिन्नभिन्न, देहके सं-जोगपराधीनसोरहतुहे सीतलगेघामलगेभूष-लगेप्यासलगे, सोकमोहमानअतिषेदकोलहतु हे ॥ अंधभयोपंगुभयोमूकहूबधिरभयो, एसेमा नीमानी भ्रमनदीमेंबहतुहे सुंदरअधिकमोहि-याहीतेअचंभाआहि, भूलिकेस्वरूपकोंअना थसोकहतुहे ॥१२॥ जेसेकोईकहेमेंतोस्वपने-मेंऊंटभयो, जागिकरिदेषेउहीमनुषस्वरूपहे जेसेकोईराजापुनीसोवत भिषारीहोई, आषउघरे तोमहाभूषानिकोभूपहे। जेसेकोउभ्रमहुतेंकहेमेरोसि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रकहा भ्रमनेंगयेकेजाने सिरतदरूपहै तैसेहीसुं
दरयह भ्रमकरि भूल्योआप, भ्रमकेभएते यहआ
तमाअनूपहै॥१३॥जैसेकोईपोसतीकीपागप
डीभौमीपर, हाथलेकेकहै एकपागमेंतोपाईहै जै
सेसेषसलीमनोरथनिकोकीयोघर, कहेमेरो घर
गयोगागरीमिराइहै॥जैसेकाहूभूतलग्यौबकत
हैआकबाक, सुन्हिसबदूरभई औरेमति आईहै
तैसेहीसुंदरयह भ्रम करि भूल्योआप, भ्रमकेभ-
एते यह आतमासदाईहै॥१४॥ आपहिचेतनय
हइंद्रियचेतनकर, आपुहिमगनहोइ आनंद बढा
योहै जैसेनरसीतकालसोवत निहालिओढे, आ
पहितपतहोइआपसुषपायोहै॥जैसेबालककरि
कोघोराकरिडाकचढे, आपअसवारहोई आपइ
कुदायोहै तैसेहीसुंदर यह जडकोसंजोग पाय,
आपसुषमानिमानि आपही भुलायोहै॥१५॥क
हूभूल्योकामरतकहूभूल्योसाधीजत, कहूं भू-
ल्योयेह मध्यकहूबनवासीहै कहूं भूल्यो नीचमा
न कहूभूल्योऊंचमानि, कहूभूल्योमोहबांधि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहतोउदासीहै ॥कहूभूल्योमोनधरिकहूबकवाद करि, कहूंभूल्योमकेजायकहूभूल्योकासीहै, कहतसुंदरअहंकारहूतेभूल्योआप, एकआवेरोन अरुदूजेआवेहांसीहै॥१६॥मैबहुतदुषपायो मैबहुतसुषपायो, मैअनंतपुन्यकीयोमेरेअति-पापहै मैंकुलीनविद्यावंतपंडितप्रवीनमहा, मैंतो मूढअकुलीनमेरोनीचबापहै॥ मैंहोराजामेरी-आणफिरेचहुंचक्रमांहीं, मैंहोरंकद्रव्यहीनमो-हीतोसंतापहै सुंदरकहतअहंकारहीतेजीवभयो, अहंकारगयेयहएकब्रह्मआपहै॥१७॥देहईसुंपुष्टलगेदेहहीदूबरीलगे, देहईकोसीतलगेदेहईकोतावरो देहईकोतीरलगेदेहईकोतोपलगे, देहकोकपानलगेदेहईकोघावरो॥ देहईस्वरूपलगेदेहईकुरूपलगे, देहईजोबनलगेदेहवृद्धावरो देहईसोबांधीहेतआपविषेमानीलेत, सुंदरकहतेंऐसोबुधिहीनबावरो॥१८॥ ॥छंद-इंदव॥ ॥आपहीचेतनब्रह्मअषंडित, सोंभ्रमतेकछुअन्नपरेषे ढूंढततांहिफिरेजितत-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हीतित, साधतजोगबनावत भेषे॥ओरउकष्टक रैअतिसेकर, प्रत्यक्षआनमतलनपेषे सुंदर भूलगयेनिजरूपहि, हेंकरकंकनदर्पनदेषे॥१९ सूत्रलगेमहिमेलिभयोहिज, ब्राह्मनहोयकेब्र ह्मनजान्यो क्षत्रियहोयकेछत्रधस्योशिर हयग जपयदलसोंमनमान्यो॥वैश्य भयोवपुकीवय देषत, रूठप्रपंचवनिजहिठान्यो सूद्रभयोमि लिसूद्रसरीरहि, सुंदरआपनहींपहिचान्यो॥२० ॥ज्योंरविकोरथिढूंढनहेकहुं, तमामिलेतनसी नगमाऊं ज्योंससिकोसशिचाहतहेपुनि, सीत लव्हेकरितसबुझाऊं॥ज्योंसनिपात भयेनररटेर नः हेघरमेंअपुनेघरजाऊं त्योंयहसुंदरभूलि स्वरूपहि, ब्रह्मकहेसबब्रह्महिपाऊं॥२१॥आ पुनदेषतहेअपनोसुष, दर्पनकादलग्योअति धूला ज्योंद्रगदेषतनेरहिजालभ, षोजबहीपुत्त रीपरिफूला॥छायअज्ञानरह्योअतिअंतरजा निसकेनहिआतममूला सुंदरयोंउपज्योमनके वल, ज्ञानविनानिजरूपहिभूला॥२२॥दीनहू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औखिललातफिरैनित, इंद्रिनकेबसह्वैकछोलैं सिंघनहीं अपनोबलजानत, जंबुकज्यौंजितहीतितडोलैं ॥ चेतनताविसराइनिरंतर, लेजडताभ्रमगांठनषोलै सुंदरभूलगयोनिजरूपहि, देहस्वरूपभयोमुषबोलै ॥ २३ ॥ मैंसुषियासुषसेजसुषासन, हयगजभूमिमहारजधानी होदुषियादिनरैनमरौंदुष, मोहिविपत्तिपरीनहिंछानि ॥ हौंअतिउत्तमजातिबडोकुल, हौंअतिनीचक्रियाकुलहानि सुंदरचेतनतानसंभारत देहस्वरूपभयोअभिमानी ॥ २४ ॥ गर्भविषैउतपत्तिभईजब जन्मलियोसिसुह्वैनजानी बालकुवारकिसोरजुवादिक, वृद्धभयोअतिबुद्धिनसानी ॥ जैसेहि भांतिभईवपुकीगति, तैसोईहोईरह्योयह प्रानी सुंदरचेतनतानसंभारत, देहस्वरूपभयोअभिमानी ॥ २५ ॥ ज्यौंकोइत्यागकरे अपनोघर, बाहिरजायकेभेषबनावै मुंडमुडायकेकानफरायवि, बभुतिलगायजटाउबढावैं ॥ जैसोईस्वांग करेवपुकोपुनि, तैसोहिमानतत्यूंहोयजावैं त्यौंसहसुं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दरआपनजानत, भूलिस्वरूपहिऔरकहावे॥ २६॥ ॥इतिस्वरूपविस्मरणकोअंगसमाप्तः॥२६॥ ॥छ॥ ॥छ॥

अथविचारकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहर॥ ॥ ॥प्रथमश्रवनकरिचित्तएकाग्रहिधरि, गुरु संतआगमकहेसुउरधारियें दूतियमननबारबार हीविचारिदेषें, जोइकछूसुने ताहीफेरकेसंभारी यें॥तृतीयप्रकारनिदिध्यासहिजुनिकेकरि, निहसंगविचारेतेआपुनपोतारीये तेसेहीसाक्षात् याहीसाधनकरतहोइ, सुंदरकहतद्वैतबुधि कोनिवारिये॥१॥ देखेतोविचारकरिसुनेतोवि- चारकरि, बोलेतोविचारकरिकरेतोविचारहे षा इतोविचारकरिपीवेतोविचारकरि, सोवेतोविचार करिजागतोनदारहे॥बेठेतोविचारकरिउठेतोवि- चारकरि, चलेतोविचारकरिसोइमतसारहे देइतो विचारिकरिलेइतोविचारकरि सुंदरविचारकर याहीनिरधारहे॥२॥ एकहीविचारकरिसुषदुष जाने, एकहीविचारकरिमलसबधोइयें एकही-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचारकरिसंसारसमुद्रतरें,एकहीबिचारकरिपा-
रंगतिहोइयें॥एकहीबिचारकरिबुधिनानाभावत
जे,एकहीबिचारकरिदूसरोनकोईहेंएकहीबिचा
रकरिसुंदरसंदेहमिटे,एकहीबिचारकरिएकब्रह्म
जोईहें॥३॥ ॥छंदइंदव॥ ॥रूप
कोनासभयोकछुदेषीये,रूपअरूपहिमाहिंसमा
वे रूपकेमध्यअरूपअषंडित,सोतोकहूंक
छुजोइनआवे॥वीचअज्ञानभयोनवतत्वको,
वेदपुरानसबेकोउगावे सोइबिचारकरेजबसुंदर
सोधततांहिकहूंनहिंपावे॥४॥ भूमिसुतोनहिं-
गंधकोछांडत,नीरसुतोरसतेंनहिंन्यारो तेजसु-
तोमिलिरूपरह्योपुनि,वायुसपर्ससदारूपिसा-
रो॥व्योमरुशब्दजुदेनहिंहोवत,एसेहीअंतहक
रनबिचारो अनेकतत्वमिलेइनतत्वनि,सुंदरभि
न्नस्वरूपहमारो॥५॥क्षीनरुपुष्टशरीरकोधर्मजु,
सीतहुउष्णजरामृतठानें भूषतृषागुनप्रानकोंव्या
पत,सोकरुमोहउभेमनआनें॥बुधिबिचारकरे
निसवासर, चित्तचितेरुअहंअभिमाने स
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैकोप्रेरकसर्व कोसाषिजु, सुंदरव्यापकोंन्यारोहि जानें ॥ ६॥ एकहिकूपतेनीरहिसींचत, ईषअफीमहिअंबअनारा होतउहेजलस्वाद अनेकनि, मिष्टकटूकषदाअरुषारा ॥ त्यौंहिउपाधिसंजोगतें आतम, दीसतआहिमिल्योसविकारा काढलियेसुविवेकविचारसो सुंदरशुद्धस्वरूपहेन्यारो॥ ७॥ रूपपराकोनजानेकछु, ऊठतहेजोहि मूलतें छांनि नाभिविषेमिलिसप्तकियेस्वर, पुरुषसंजोगपश्यंतिबखानि ॥ नादसंजोगत्हदे पुनिकंठजु, मध्यमयाहिविचारतेंजानी आसरभेदमिले मुषद्वारसु, बोलतसुंदरवैखरिबानी ॥ ८॥ ज्यौं कोईरोगभयोनरकेघट, वैदकहेयहवायुविकारा कोउकहेग्रहआइलगेताते, पुन्यकहेकछुहोइउवारा ॥ कोइकहेयहचूकपरीकछु, देवनिदोस कियोनिरधारा॥ तैसेहीसुंदरतंत्रनिकेमत, भिन्नहीभिन्नकहेजुविचारा॥ ९॥ जेविषयानसपूररहेनिन, कोंरजनीमहिवादरछायो कोउमुमुक्षकियेगुरुदेवतो, निर्भयमुक्तजुशब्दसुना-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बादरदूरभयेउनकेपुनि, तरनिसोरजुसर्पदिषायो सुंदरसूरप्रकासतहिंभ्रम दूरभयोरजुकोरजुपायो ॥१०॥ कर्मसुभासुभकीरजनीपुनि, अर्धतमोमयअर्धउजारी भक्तिसोतोयहहैअरुनोदय, अंतनिसादिनसंधिबिचारी ॥ ज्ञानसोभानुउदेनिसबासर, वेदपुरानकहैजुपुकारी सुंदरतीनप्रभावबषानत, योंनिहचेसमझैविधिसारी ॥ ११ ॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥
देहहीसोआपमानिदेहहीसोह्वैरह्यो, जडता अज्ञानतमसूद्रसोईजानियें इंद्रिनकेव्यापारनि अत्यंतनिपुनबुधि, तमरजदुहुंकरिवैश्यहूप्रमानियें॥ अंतःकरनमाहींअहंकारबुधिजाके, रजोगुनवर्धमानक्षत्रीपहिचानियें सत्वगुनबुद्धिएकआतमाविचारजाके, सुंदरकहतवहीब्राह्मनवषानिये॥१२॥ आतमाकेविषेदेहअ्याईकरिनासहोइ, आतमांअषंडसदाएकइरहतुहै जेसेसापकंचुकीकौंलीयेरहैकोउदिन, जीरनउतारकरिनीतनगहतुहैं॥ जेसेद्रुमहूकेपन्नफू-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लफलआइहोत, तिनकेगयतेहुमओरउलहतुहैं जेसेंव्योममांहीअभ्रहोईकेविलाईजात, एसो- हिविचारकरिसुंदरकहतुहैं ॥१३॥ षरीकीडरी- सौंअंकलिषतविचारीयत, लिषतलिषतवहीड रीघंसिजातुहे लेषोसमज्योंहेजबसमुझपरीहे- तब, जोइकछूसहीभयोसोईठहरातुहैं ॥दारही सोदारमथिप्रगेटपावकभयो, वहेदारजारिपुनि पावकसमातुहे तेसेहिसुंदरबुद्धिब्रह्मकोविचा रकरि, करतकरतवहबुद्धिहुविलातुहे ॥१४॥आ पकोसमुझदेषोआपुहीसकलमाहीं, आपहीमेंस- कलजगतदेषियतुहैं जेसेंव्योमव्यापकअषंडपरि पूरनहें, बादलअनेकनानारूपलेषियतुहैं ॥जेसे भोमीघटजलतरंगपावकदीप, वायूमेंबघूरासो ईविश्वरेषियतुहैं एसेहीविचारतेंविचारतेंहूलीन होइ, सुंदरहीसुंदररहितपेषीयतुहैं ॥१५॥देह कोसंजोगपाइजीवएसोनामभयो, घटकेसंजो गघटाकासहीकहायोंहें ईश्वरहीसकलविराटमें विराजमान, मठकेसंजोगमठाकासनामपायोंहें॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाकासमाहीसबघटमठदेषियत, बाहीरभीतर एकगगनसमायोहें॥ तेसेहीसुंदरब्रह्मईश्वर-अनेकजीव, त्रिविधउपाधिभेदग्रंथनिमेंगायोहें ॥१६॥ ॥प्रश्न॥ देहदुषपावेकिधोंइंद्रीदुषपावेकिधों, प्रानदुषपावेकिधोंलहनअहारकौं मनदुषपावेकिधोंबुधिदुषपावेकिधों, चित्तदु-षपावेकिधोंदुषअहंकारकौं॥गुनदुषपावेकिधोंश्रोत्रदुषपावेकिधों, प्रकृतिदुषपावेकिधोंपुरुषआधारकौं सुंदरपूछतकछुजानिनपरततातें, कौंनदुषपावेगुरुकहोयाविचारकौं॥१७॥ ॥उत्तर॥ देहकौंतोदुषनाहींदेहपंचभूतनिकी, इंद्रीनकों-दुषनाहींदुषनाहींप्रानकौं मनहूकोदुषनाहींबु-धिहूकोदुषनाहीं, चित्तहूकोदुषनाहींनाहींअभिमानकौं॥गुननिकोदुषनाहींश्रोत्रहूकोदुषनाहीं, प्रकृतिकोदुषनाहींदुषनपुमानकौं सुंदरविचार एसेशिषकौंकहतगुरु, दुषएकदेषीयतबीचकेअज्ञानकौं॥१८॥ प्रथवीभाजनअंगकनकक-टकपुनि,जलहीतरंगदोउदेखीकरिमानिये कारन-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारजएतोप्रगटथूलरूप, ताहीतेंनिजरमाहींदे षीकरिमानिये॥पावकपवनव्योमएतोनहिदे- षियत, दीपकबधूरात्र्प्रनुमानतेंबषानिये आ तमाअरूपअतिसूक्षमतेसूक्षमहें, सुंदरकारन तातेंदेहमेंनजानिये॥१९॥जैनमतउहेजिनरा जकोनभूलिजाय, दानतपसीलसतभावनाने रियें मनवचकायसुद्धसबसोंदयालरहे, दो- षबुधिदूरकरिदयाउरधरिये॥बोधनामनबजब मनकोनिरोधहोइ, बोधकेविचारसोधआतमा कोकरिये सुंदरकहतएसोजीवतहिमुक्तहोई, मूएतेमुकतकहेताकोंपरहरियें॥२०॥देहदोर- देषीयेतोदेहपंचभूतनिकों, ब्रह्मअरुकीटलग देहइप्रधानहे प्रानदोरदेषीयेतोप्रानसबहीको एक, क्षुधापुनित्रषादोउव्यापतसमानहे॥म नदोरदेषीयेतोमनकोस्वभावएक, संकल्पविक ल्पकरैसदाइअज्ञानहे आतमाविचारकीये- आतमाहीदीसेएक, सुंदरकहतकोउदूसरोन- आनहे॥२१॥ ॥इतिविचारकोअंगसमाप्तः॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥२७॥ ॥छ॥ ॥अथब्रह्मनिःकलंककोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहर॥ ॥

एककोउदातागायब्राह्मनकौंदेतदान, एककोउदयाहीनमारतनिसंकहे एककोइतपस्वीतपस्यामाहीसावधान, एककोउकामक्रीडाकामनिकोअंकहे॥एककोउरूपवंतअधिकविराजमान, एककोउकोढीकोढचूवतकरकहे अरसीमेंप्रतिबिंबसबहीकोदेषियत, सुंदरकहतऐसेब्रह्मनिकलंकहे॥१॥ रवितेप्रकासतेंप्रकासहोतनेत्रनिको, सबकोउसुभासुभकर्मकोकरतुहे कोउजग्यदानतपजपनेमव्रतकोउ, इंद्रीवसकरिकोउध्यानकौंधरतुहें॥कोउपरदारापरधनकौंतकतजाई, कोउहिंसाकरिकरिउदरभरतुहे सुंदरकहतब्रह्मसाक्षीरूपएकरस, याहीमेंउपजिकरिवाहीमेंमरतुहें॥२॥ जेसेजलजंतुजलहीमेंउतपनहोय, जलहीमेंविचरतजलकेआधारहे जलहीमेंक्रीडाकरिविविधविहारहोत, कामक्रोधलोभमोहजलमेंसंहारहें॥जलकौंनलागेकछूजीवनकेराग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोष, उनहीकीक्रियाकर्मउनहीकीलारहै तैसेही
सुंदरयहब्रह्ममेंजगतसब, ब्रह्मकूंनलागेकछूज
गतविकारहै॥३॥ स्वेदजजरायुजअंडजउद्भिजे
पुनि, चारषानतिनकेचोरासीलषजंतुहै जलचर
थलचरव्योमचरभिन्नभिन्न, देहपंचभूतनकीउ
पजिषपतुहै सीतघामपवनगगनमेंचलतआइ,
गगनअलिप्तजासेंमेघहूअनंतहै तैसेहीसुंदर
यहसृष्टिसबब्रह्ममांहि; ब्रह्मनिकलंकसदाजा·
नतमहंतहै॥४॥ ॥इतिब्रह्मनिःकलंककौ-
अंगसमाप्तः॥२८॥ ॥छ॥ ॥
अथआत्मअनुभवकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदइं
दव॥ ॥हेदिलमेंदिलदारसही, अषियाउलटी
करिताहिचितैयें आबमेंषाकसंवादमेंआतस,
जानमेंसुंदरजानिजनैये॥नूरमेंनूरहैतेजमेंतेज
हैं जोतिमेंजोतिमिलेंमिलिजैयें क्याकहियेकह
तेनबनेकछु, ज्योंकहियेकहतेहिलजैयें॥१॥जो
कहेंहिसबमेंवहएकतो, सोकहेकैसोहैंआंषिदि
षैयेंजोकहारूपनरेषदिसेकछु, तोसबजूटकिमाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इकईयें ॥ जोकहुसुंदरनैननिमांझतो, नैनकहुबैनग येपुनहैयें क्याकहियेकहतेनबनेकछु, जोकहियें कहतेइलजैयें ॥ २॥ होनविनोदजितोअभिअं- तर, सोसुषआपमेंआपहिपैयें बाहिरकोउमग्यौं पुनिआवत, कंठतेसुंदरफेरपठैयें ॥ स्वादनिवैं रनिवेस्योनजातहु, मानुहुगुंडगुंडगुंगेनितषैये क्या कहीयेकहतेंनबनेकछु, जोकहीयेकहतेईलजैयें ॥ ३॥ व्योमकोव्योमअनंतअषंडित, आदिनअं- तमुमध्यकहांहै कोपरमानकरेपरिपूरन हैतअ- हैतकछूनजहांहै॥ कारनकारजभेदनहीकछुआप मेंआपहिआपतहांहें सुंदरदीसतसुंदरमाही- सु, सुंदरताकहिकौनउहांहै ॥ ४॥ एककेदोइन एकनदोई, उहीकिइहीनउहीनइहीहें सुन्यकेस्थू लनशून्यनस्थूल, जिहींकितहीन जिहीनतिहीहें ॥ मूलकीडालनमूलनडाल, वहीकिमहीन वहीन महीहें जीवकेब्रह्मनजीवनब्रह्मतो, हे केंनहीकछुहे ननहीहें ॥ ५॥ एककहूंतोअनेकसोदीसत, ऐ कअनेकनहींकछुऐसो आदीकहूंतहांअंतहू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवत, आदीनअंतनमध्यसोकैसोगोप्यकहूं
तो अगोप्यकहांयह, गोप्यअगोप्यनऊभोनवैसो
जोइकहूंसोइहैनहिंसुंदर, हैतोसहीपरिजैसोको
तैसो ॥६॥ ॥छंदमनहर॥ ॥एक-
कोकहैजोकहूं एकहीप्रकासतहैं, दोउ कोकहैजु
कोऊदूसरोऊदेषीये, अनेक कहैजुकोउअने-
कअभासेताही, जाकेजैसो भावतैसोताकोई वि
सेषीयें॥ वचनविलासकोउकैसेहीवषानेकहो,
व्योममाही चित्र कहो कैसे करिलेषीये
अनुभवषीये एकदायनअनेककछु, सुं-
दरकहतज्योंहैत्योंहीताही पेषीयें॥७॥ वचनइवेद
विधिवचनइशास्त्रपुनि, वचनसमृतिअरुबचनपु
रानजु, वचनईऔरग्रंथवचनइव्याकरन, वचन
इकाव्यछंदनाटकवषानजु॥ वचनइसंसकृतवचन
ईपराकृत, वचनइभाषासबजगतमेंजानजु वचन
कोपरेहैसोवचनमेंआवैनहिं, सुंदरकहतवहीअ
नुभवप्रमानजु॥८॥ इंद्रिनहीजानीसकेअल्प-
ज्ञानइंद्रीनिको, मानहुनजानीसकेस्वासआवे-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाइहैं मनहु नजानिसके संकल्पविकल्पकरे बुधि हूनजानिसके सुन्योसबताहीहै ॥ चित्तअहंकार पुनि एक हूनजानीसके, शब्दहूनजानीसकैं अनुमानपाईहैं सुंदरकहतनाहींकोउनहिजानीसके, दीवाकरदेषीयेसु ऐसीनहिंलाइहै॥ ९॥ ॥
छंदइंदव॥ ॥श्रोत्रनजानतचक्षुनजानत, जाननाहिंजुरसंघतघ्राने जानिसपर्सतुचानसके पुनि, जाननताहीनजीभबषानें॥ मन्ननजानतबुद्धिनजानत, चित्तअहंकारक्यौंपहिचानें सुंदर शब्दहुजानिसकेनहि, आतमआपकोआपहि-जानें॥ १०॥ सूरकेतेजतें सूरजदीसत, चंद्रकेतेजतेचंद्रउजासे तारेकेतेजतेतारेउदीसत, बीजुलतेजते बीजुप्रकासे॥ दीपकेतेजतेंदीपकदीसत, हीरेकेतेजतेहीरोई भासे, तैसेहीसुंदरआतमजानहु, आपकेज्ञानतेंआपप्रकासे॥ ११॥ कोउ कहेयहसृष्टिस्वभावतें, कोउकहेयहकर्मतेसृष्टी कोउकहेयहकालउपावत, कोउकहे यहईश्वरतिहृष्टी॥ कोउकहेयहऐसेहिहोवत, क्यौंकरिमानीयेबात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनिष्टी सुंदरएककीयेअनुभवबिन, जानि सकेनहिंबात्यहिदृष्टी ॥१२॥ कोउतोमोक्षआका सबतावत, कोउतोमोक्षपातालकेमांहिं कोउतो मोक्षकहेप्रथवीपर, कोउकहेकहूंऔरकहांही॥ कोउबतावतमोक्षासिलापर कोउकमोक्षामिटैपर छाहीं सुंदरआतमकेअनुभौबिन, औरकहूं- कोइमोक्षहिनाहिं ॥१३॥ मूएतेमोक्षकहेसब पंडित; मुएतेमोक्षकहेमुनिजैना मूएतेमोक्ष कहेऋषितापस, मूएतेमोक्षकहेशिवसैना॥मू एतेमोक्षमलेछकहेतुं, धोदेहिधोषेबषानतबै- ना सुंदरआतमको अनुभौसोई, जीवतमोक्षस दासुषचैना॥१४॥ ॥छंदमनहर॥ ॥कोउतो- कहतब्रह्मनाभिकेकमलमध्य, कोउतोकहतब्रह्म हृदेमें प्रकासहै कोउतोकहतब्रह्मनासिकाकेअ ग्रभाग, कोउतोकहतब्रह्म भृकुटीमेंवासहै ॥ कोउतोकहतब्रह्मदसमेंदुवारिबीच, कोउतोकह- तब्रह्मगुफामेंनिवासहै पिंडतेंब्रह्मंडतेंनिरंतरविरा- जेब्रह्म, सुंदरअषंडजेसेव्यापकआकासहै॥१५॥पा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यजिनग्रत्योसोतोकहतहेंऊषरसो, पूछजिनग्र-
त्योतिनलावसोसुनायोहे सूंढजिनग्रहीतिनदग-
लेकीबाहकहि, दंतजिनग्रत्योतिन भूसरदिषायो
हे॥कान जिनग्रत्योतिनसूपसोबनायकत्यो, पीठ
जिनग्रहीतिन भीटोराबतायोहे जेसोहेनेसोही-
नाहीसुंदरस्रुग्रक्षीजानें, ग्रांधरेनेहाथिदेषीऊग
रोमचायोहे॥१६॥ न्यायशास्त्रकहेतहेंप्रगटईश्वर
वाद, मीमांसाईशास्त्रमाहींकर्मवादकत्योहे वी-
शेषिकशास्त्रपुनिकालवादीहेप्रसिद्ध, पातांजलि
शास्त्रमाहीजोगवादलत्योहे॥सांख्यशास्त्रमाहींपु
निप्रकृतिपुरुषवाद, वेदांतसुशास्त्रतिनब्रह्मवाद-
गत्योहे॥सुंदरकहतषटशास्त्रमाहींभयोवाद,
जाकेग्रनुभवज्ञानवादमेंनवत्योहे॥१७॥ प्रज्ञा
नग्रानंदब्रह्मएसेऋगवेदकहे, ग्रहंब्रह्मग्रस्मि
इतियजुरवेदयोंकहे तत्वमसिइतिसामवेदस्रोंव-
षाननहे, ग्रयंग्रात्माब्रह्मकहिग्रथर्वणयोंलहे
॥एकएकवचनमेंतीनिपदहेप्रसिद्ध, तीनकोबि-
चारकरिग्रर्थतत्वकोंगहें चारवेदभिन्नभिन्नसब-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोसिद्धांतएक, सुंदरसमझिकरितुपचायहोरहें ॥ १८ ॥ इंद्रनिकोभोगजबचाहेतबआयरहे, ना शवंततातेंतुछानंदयोसुनायोहें देवलोकइंद्र- लोकविधिलोकशिवलोक, वैकुंठकेसुषलेंगणि तानंदगायोहे ॥ अक्षयअषंडएकरसपरिपूरनहे, ताहीतेंपूर्णानंदअनुभौतेपायोहें याहीकेअंत रभूतआनंदजहांलोऔर, सुंदरसमुद्रमाहिंसर्वजल आयोहे ॥ १९ ॥ एकतोमायाविलासजगतप्र पंचयह, चारषानिभेदपायद्वैतभासरह्योहे दू- सरोविषेविलासइंद्रिनिकीविषेपंच, सब्दसपर- सरूपरसगंधगरह्योहें ॥ तीसरोवाचाविलास- सोतोसबवेदमाहि, वर्णिकेजहांलगिवचननतेंक ह्योहें चोथोब्रह्मकोविलासतिहुकोअभावज हां, सुंदरकहतवहअनुभवतेंलह्योहे ॥ २० ॥ जीवतहिदेवलोकजीवतहिइंद्रलोक, जीवतहि जनतपसत्यलोकआयौहें जीवतहिविधिलोक- जीवतहिशिवलोक, जीवतवैकुंठलोकज्योंअकुंठ गायौहें ॥ जीवतहिमोक्षसिलाजीवतहिभिस्तमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हीजीवतहिनिकदपरम पदपायोहै आतमाकौअनु भवजिनकौंजीवतभयो, सुंदरकहततिनसंशयमि टायोहै॥२१॥ क्षितिभ्रमजलभ्रमपावकपवनभ्रम, व्योमभ्रमतिनकोशरीरभ्रममानीयें इंद्रीदस तेउभ्रमअंतहकरनभ्रम, तीनहीकेदेवतासोंभ्रमतेवषानीये॥ सतरजतमभ्रमपुनिअहंकार भ्रम, महत्तत्वप्रकृतिपुरुषभ्रममानीयें जोइक छुकहियेसुसुंदरसकलभ्रम, अनुभवकीयेकेआतमाहीजानीयें॥२२॥ भोमीहुंविलीनहोई आपहूविलीनहोई; तेजहूविलीनहोईवायूजो विहतुहै व्योमहूविलीनहोईत्रिगुनविलीनहोई, शब्दहूविलीनहोईअहंजोकहतुहैं॥ महत्तत्वलीनहोई प्रकृतिविलीनहोई, पुरुषविलीनहोईदेहजोगहतुहै सुंदरसकललोककहीयेसुलीनहोई, आतमाकेअनुभवेंआतमारहतुहै॥२३॥ मायाकीअपेक्षाब्रह्मरात्रिकीअपेक्षादिन, जडकीअपेक्षाकरीचैतनबषानीयें अज्ञानअपेक्षाज्ञानबंधकीअपेक्षामोक्ष, द्वैतकीअपे-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षासोतोअहैनप्रमानीयें॥ दुषकीअपेक्षासुष
पापकीअपेक्षापुनि, झूठकीअपेक्षाताहीस
त्यकरिमानीयें सुंदरसकलयहवचनविलास-
भ्रम वचनरहितअवचनसोई जानीयें॥ २४॥
आनमाकहतगुरुसुन्द्निर्बंधनित, सत्यकरिमा
नेसोतोशब्दहू प्रमानहै जेसेव्योमव्यापकअ-
खंडपरिपूरनहै, व्योमउपमातेउपमानसोप्रमा-
नहैं॥जाकीसत्तापायसबइंद्रियचैतन्यहोइ, या
हीउपमातेंउपमानउप्रमानहै अनुभवजानेतब-
सकलसंदेहामिटे सुंदरकहतयह प्रतक्षप्रमानहै
॥२५॥ एकघरदोयघरतीनघरचारघर, पंचघरत-
जेतबछठोधरपाइयें एकएकघरके आधार एकए
कघर, एकघरनिराधारआपई दिषाइयें॥सोतो
घरसाक्षीरूपघरघरमेंअनूप, ताहूघरमध्यकोउदि
नठहराइयें ताकेपरेसाक्षीनअसाक्षीनसुंदरक
छू, वचनअतीतकहूआईहैनजाईयें॥ २६॥
एकलोभ्रवनज्ञानपावकज्यौंदेषीयत, मायाजल-
परसतबेगबूझिजातहैं एकहैमननज्ञानबिजु-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लीज्यौं धनमध्य, मायाजल बरषत ताप्रैं न बुझात हैं ॥ एक निदध्यासज्ञान बडवाअनल जैसें, प्रगटस समुद्र माहिं मायाजल षातु हैं अनुभौ साक्षात-ज्ञान प्रलय कि अग्निसम, सुंदर कहत द्वैतप्रपंच बिलात है ॥ २७ ॥ भोजन की बात सुनि मन में मुदित भयो, मुष में न परे ज्यो लों मैं लियेन प्यास है सकल सामग्री आनि पाथक कौं कारन लागो, मनन करत कबजी मैं होए आस है ॥ पाक जब भयो नब भोजन करबैठो, मुष में मेलत जाई यहे निदध्यास है भोजन पूरन करि त्रिपति भयो है जब, सुंदर साक्षात्कार अनुभौ प्रकास है ॥ २८ ॥ श्रवन करत जब सब सौं उदास होई, चित्त एकाग्रह आनि गुरु मुष सुनिये बैठिके एकांत ठोर अंतह करन माहीं, मनन करत फेर उहे ज्ञान गुनिये ॥ ब्रह्म अपरोक्ष जानी कहत है अहंब्रह्म, सोई सोहं होइ सदा निदध्यास धुनिये सुंदर साक्षात्कार कीं दहीतें होई भ्रंग, यह अनुभव यह स्वस्वरूप भानिये ॥ २९ ॥ जब ईज-ग्यास होई चित एक ठोर आनि, मृग ज्यौं सुनत नाद-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रवनसोंकहियें जेसेस्वातबुंदहूकोचात्र करतपु-
नि, ऐसेहीमनन करे कंबबुंदलहियें॥ रात्रिकोच-
कोरजेसेचंद्रमाकोधरेध्यान, एसेजानि निदध्यास
दृढकरिग्रहियें यहेअनुभवयहेकहियेसाक्षात
कार, सुंदरपारेतेगलपानीहोईरहीयें॥३०॥काहू
कों पूछतरंकधनकेसेंपाईयत, कानदेकेसुनतश्र-
वनसोईजानिये उनकह्यो धनहमदेब्योहेफलानी-
ठोर, मननकरतभयोकबघरआनिये॥ फेरिजब
कह्यो धनगड्यानेरे घरमाहीं, षोदनलग्योहे तब-
निदिध्यासठानिये धननिकस्योहेजबदरिद्रगयोहे
तब, सुंदरसाक्षात्कारनृपति बषानिये॥ ३१॥
चकमकठोकेतेचमतकारहोतकछु, एसेहीश्रवन
ज्ञानतबहीलोंजानिये सोषतामैंलागेजब प्रगटे-
पाकज्ञान, सिलगतजाईवहमननवषानिये ॥व
र्धमान भयेकाठकर्मनिकोंजरावत, इहिंनिदध्या
सज्ञानग्रंथनिमैंगानियें सकलप्रपंचयहजरिकें स
माईजाल, सुंदरकहतवहअनु भौ प्रमानियें ॥
॥३२॥ ॥इतिआत्मअनुभवकोअंगसमाप्तः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥२९॥ ॥७॥ ॥अथज्ञानकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहर॥ ॥श्रवनसुनन सुषबोलतबचनघ्रान, सूंघतफूलनरूपदेषतद्रगनहै त्वकसपरससरसरसनाग्रसतकर, ग्रहतअसनअरुचलतपगनहैं॥करतगवनपुनिबैठतभवनसेज, सोवतरवनपुनिपोढतनगनहैं जोजाकछुविवहार जानतसकलभ्रम, सुंदरकहतज्ञानीज्ञानमैंमगनहैं॥१॥कर्म्मनविकर्मकरभावनअभावधरे, सुनहुंअसुभपरेयांतेनिधरकहैं वसतीनसुन्यजाकेपापहुनपुन्यताके, अधिकनन्यूंन्यवाकेस्वर्गनिनरकहे॥सुषदुषसमदोउनीचहूनऊचकोऊ, असीविधिरहेसोउमिल्योनफरकहै एकहीनदोयजानेबंधमोक्षभ्रममाने, सुंदरकहतज्ञानीज्ञानमेंगरकहै ॥२॥अज्ञानीकोदुषकोंसमूहजगजानियत, ज्ञानीकोसबजगतआनंदस्वरूपहें॥नैनहीनकोतो घरबाहेरनसुझैकछु, जहांजहांजायतहांतहांअंधकूपहें॥जाकेचक्षुहेप्रकासअंधकारभयोनास, वाकेजहांरहेतहांसूरजकीधूपहे सुंदरअज्ञानी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञानीअंतरबकुतआही, वाकेसदारातिवाकेदिवस अनूपहे ॥३॥ ज्ञानीअरुअज्ञानीकीक्रियासब- एकसीही, अज्ञआसाओरज्ञानीआसननिरास हे अज्ञजोईजोईकरेंअहंकारबुधिधरे, ज्ञानीअहंका रबिनुकरतउदासहे॥ अज्ञसुषदुषदोउआपविषेमानिलेत,ज्ञा नीसुषदुषकौंनजानेंसेरेपासहे अज्ञकौंजगतयहसक लसंतापकरें, ज्ञानीकौंसुंदरसबब्रह्मकोविलासहैं ॥४॥ ज्ञानीलोकसंग्रहकौंकरतब्यौहारविधि, अंत हकरनमेतोस्वप्नकीसीदोरहें देतउपदेसनानाभांति केवचनकहि, सबकोउजानतसकलसिरमोरहें॥ह् लनचलनपुनिदेहसोंकरतनितज्ञानमेंगरकगतिलीये निजठोरहे सुंदरकहतजेसेदंतगजराजमुष, षाइ वेकेओररुदीषाइवेकेओरहे॥५॥ इंद्रनिकोज्ञान जाकेसोतोहेपसुसमान, देहअभिमानषानपान हीसोंलीनहें अंतहकरनज्ञानकछूकबिचारजाके, मनुषब्योहारसुभकर्मनिआधीनहे॥ आतमावि चारज्ञानजाकेनिसवासरहे, सोहीसाधूसकलही बातमेंप्रवीनहे एकपरमातमाकोज्ञानअनुभवजाके-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्फुंदरकहतवह ज्ञानी भ्रमछीनहे ॥ ६ ॥ जाहीठोर विकोउद्योत भयो ताहीठोर, अंधकारभागीगयो ग्रहबनबासतें ननोकछुबनतंउलटिआवे घरमाहीं ननोबनचलीजाइकनक आवासतें। जेसीपे षीषंषटूठीजाईठोरपरयोआइ ताहीठोरगिररह्योउडवेकी आसतें, स्फुंदरकहतमिटिजाई सबदोउदुष, धोषोनर हतकोउ ज्ञानके प्रकासतें ॥ ७ ॥ जेसे कोउदेस जाई भाषाकहे औरसीही, समुझेनकोउवासोंकहे क्याकहतुहे कोउदिनरहे करबोलि सीषेउनहीकि, फेरीसमझावेतबसबकोलहतुहें ॥ तेसेज्ञानकहेते सुनतविपरीतलागे, आपआपनोईमतसबकोग हतुहे उनहीकेमतकरिस्फुंदरकहतज्ञान, तबहीतें ज्ञानठहराईकेरहतुहे ॥ ८ ॥ एकज्ञानीकर्मनिमेंतत्परदेषियत, भक्तिकोप्रभावनाहीज्ञानमेंगरकहें एकज्ञानीभक्तिकोअत्यंतप्रभावलीये, ज्ञानआहींनिश्चेकरिकर्मसोंतरकहे ॥ एकज्ञानी ज्ञानहीमेंज्ञानकोउचारकरें, भक्तिअरुकर्मइनदुहूनतें फरकहें कर्मभक्तिज्ञानतिनोवेदमेंबषानिकहे, स्फुंदरबतायोगु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रुताहीमेंलरकहें ॥ ९ ॥ जेसेंपंषीपगनिसोंचलनअ
वनिआई, तेसेज्ञानीदेहकरिकर्मनिकरतुहें जेसंपं
षिचुंचकरिचुगतअहारमुनि, तेसेज्ञानीपुरमेंउपा-
सनाधरतुहें ॥ जेसेपंषी पंषनिसोंउडतगगनमां
हीं, तेसेज्ञानीज्ञानकरिब्रह्ममेंचरतुहें ॥ सुंदरकह-
तज्ञानीतीनों भांतदेषीयत, ऐसीविधिजानेसबसं
शयहरतुहे ॥ १० ॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥ एकक्रिया-
करिकीर्षिनिपावत, आदीरुअंतसमत्वबंध्योहे
एकक्रियाकरिपाककरेजब, भोजनलोंकछुअन्नरं
ध्योहे ॥ एकक्रियामलत्यागतहेलघु, नीतकरेंकछुन-
हींफंध्योहे त्यौंयहकर्मउपासनज्ञानहे, सुंदरतीन-
प्रकारसंध्योहे ॥ ११ ॥ दोऊजनेमिलिचोपरषेलत, सारि
धरेपुनिढारतपासा जीततहेसुसुषीमनमेंअति,
हारतहेंसोइ भरेउउसासा ॥ एकजनोदोउधो
रहीलेषत, हारनजीतकरेजुतमासा तेसेंअ-
ज्ञानीकेद्वैतभयोभ्रम, सुंदरज्ञानीके अेकप्र
कासा ॥ १२ ॥ ॥ सवैय्यामात्रा ॥ ३१ ॥ ॥ जी
वनरेसअविद्यानिद्रा, सुषसिज्यासोसोकरिहेत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्मखवासपूटभरिलाइ, तांतेंबकुविधिभयोअवे न॥भक्तिप्रधानजगायोकरगहि,आलसभस्यो जंभाईलेत सुंदरअबनिद्रावसनाहीं, ज्ञानजागर नसदासुचेत॥१३॥　॥सवैयामात्रा ३२॥ ॥

ज्ञानीकर्मकरेनानाविध, अहंकारयाननकोषोवे कर्मनिकोफलकछूनजोवे अंतहकरनवासनाधोवे॥जोंकोऊषेतीकोंजोतत, लेकरिबीजभूनिकेबोवे सुंदरकहेसुनोदृष्टांतहि, नागोनहाइसु कहानिचोवे॥१४॥　॥इतिज्ञानिकोअंगसमाप्तः॥२९॥　॥छं॥　॥अथनिरसंसेकोअंगप्रारंभः॥　॥छंदमनहर॥　॥भावे देहछुटिजाहु कासीमाहीगंगातट, भावेदेहछूटी जाओक्षेत्रमधहरमें भावेदेहछुटिजाओविप्रकेसदनमध्य, भावेदेहछूटिजाओस्वपचकेघरमें ॥भावेदेहछूटोदेसआरजअनारजमें, भावेदेहछूटिजाओबनमेंनगरमें सुंदरज्ञानीकेकछूसंशयरहेजुनाहीं, स्वरगनरकसब भागीगयोभरमें ॥१॥भावेदेहछूटीजाओअजहीपलकमाहीं, भावे

देहरहोचिरकालजुगन्धंतजु भावेदेहछूटिजाओ ग्रीषमपावसअरुतु, सरदससिरसील छूटनवसंत- जु॥ भावेंदक्षिनायनहुभावेंउत्तरायनहु, भावेदेहस र्पसिंघखीजलीहनतजु सुंदरकहत एकआतमाअ षंडजानि, याहीभांतिनिरसंसे भयेसबसंतजु॥२॥

॥ ॥छंदइंदव॥ ॥कैयहदेहगिरोवनपर्वत, कैयह देहनदीमेंवहोजु कैयहदेहधरोधरतीमहि कैयहदे हमसानदहोजू॥कैयहदेहनिरादरनिंदहु, कैयहदे हसराहकहोजु सुंदरसंशयदूरभयोसब कैयहदेह चलीकिरहोजु ॥३॥ कैयहदेहसदासुषसंपति, कैयहदेहविपत्तपरोजू कैयहदेहनिरोगरहोनित, कैयहदेहहिरोगचरोजू ॥ कैयहहुतासनपैठहु, कैयहदेहहि मारेगरोजु सुंदरसंशयदूरभयो- सब, कैयहदेहजीवोकमरोजू॥ ४॥ ॥इति- निस्संसेकोअंगसमाप्तः॥२१॥ ॥६७॥ ॥

अथप्रेमज्ञानीकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदइंदव॥ ॥

प्रीतकीरीतकछूनहिराषत, जातनपातनहींकुलगारो ॥प्रेमकुनेमकहोंनहिंदीसत, लाजनकाजलग्योसब

घारो॥लीनभयोहरिसोंअभिअंतर, आठहुजाम रहेमतवारो सुंदरकोउकजानिसकैयह, गोकुलगामकोपेडोइन्यारो॥१॥ज्ञानदियोगुरुदेवकृपाकरि, दूरिकियोभ्रमषोलिकिवारो ओरक्रियाकहिकोनकरेअब, चिंतलग्योपरिब्रह्मपियारो॥पावविनाचलवोकिहीठोरहु, पंगुभयोमनमित्तहमारो सुंदरकोउकजानिसकेयह, गोकुलगामकोपेडोइन्यारो॥२॥ एकअखंडितज्यौंनभव्यापक, बाहिरभीतरहेइकसारो दृष्टिनमुष्टिनरूपनरेषन, स्वेतनपीतनरक्तनकारो॥चकिनहोइरहेअनुभौबिन, ज्यौंलगिनाहिनज्ञानउजारो सुंदरकोउक-जानिसकेयह, गोकुलगामकोपेडोइन्यारो॥३॥ हूंहूविनाविचरेवसुधापर, जाघटआतमज्ञानअपारो कामनक्रोधनलोभनमोहन, रागनदोषनम्हारनथारो॥जोगनभोगनत्यागनसंग्रह, देहदिसानढक्योनउघारो सुंदरकोउकजानिसकेयह, गोकुलगामकोपेडोइन्यारो॥४॥लक्षअलक्षअदक्षनदक्षन, पक्षअपक्षनतूलनभारो जूठनसाचअवाचनवाचन, कं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चनकाचनदीनउदारो ॥ जानअजाननमानअमानन, मानगुमाननजीतनहारो सुंदरकोउकजानिसकेयह, गोकुलगामकोपेडोइन्यारो ॥५॥ ॥

इतिप्रेमज्ञानकोअंगसमाप्तः ॥३२॥ ॥छ॥

॥ ॥अथअद्वैतज्ञानकोअंगप्रारंभः ॥ ॥

छंदइंदव ॥ ॥प्रश्नोत्तर ॥ ॥हौंतुमकौनहौंब्रह्मअखंडित, देहमेंक्योंनहींदेहकनेरें बोलतकैसेंकहौंनहिंबोलत, जानियकैसेअज्ञानहेतेरे ॥ दूरकरोभ्रमनिश्चयधारिक, होगुरुदेवकहोनितटेरे होतुमऐसेतुहूंपुनिऐसेइ, दोयनहींनहिंद्वैतहिमेरे ॥१॥ हूंकछुऔरकतूंकछुऔरकि, हेकछुऔरकिसोकछुऔरें होअरुतूंयह हे कछुसोपुनि, बुद्धिविलासभयोइकठौरें ॥ होंनहिंतूंनहिंहेकछुसोनहिं, बूझबिनाजितहीतितदोरें ॥ होंपुनितूंपुनिहेकछुसोपुनिसुंदरव्यापरह्योसबठौरें ॥२॥ उत्तममध्यमऔरसुभासुभ, भेदअभेदजहांलगजोहै दीसतभिन्नतयोअरुदर्पन, वस्तुविचारतएकहिलोहें ॥ जोसुनियेअरुद्रष्टिपरेपुनि, वाबिनऔरकहूंअबकोहें सुंदरसुंद,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रह्यापरिह्योसब सुंदरमेंपुनिसुंदरसोहें ॥ ३ ॥ ज्यौं
वनएकअनेकभयेद्रुम, नामअनंतनिजातिहुन्यारी
वापीतडागरुकूप नदीसब, हेजलएकसुदेषुनिहारी ॥
पावकएकप्रकाससबहुविधि, दीपचिराकमसालहु-
बारी सुंदरब्रह्मविलासअषंडित, भेदअभेदकि-
बुद्धिसुटारी ॥ ४ ॥ एकशरीरमेंअंगभयेबहु, ए-
कधरापरिधामअनेका एकसिलामहिकोरकिये
सब, चित्रबनायधरेइकठेका ॥ एकसमुद्रतरंगअ
नेकहु, कैसेकेकीजियेभिन्नविवेका द्वैतकछूंनहिंदे
षियेसुंदर, ब्रह्मअषंडितएकको एका ॥ ५ ॥ ज्यौंमृ
तिकाघटनीरतरंगहि, तेजमसालकियेजुबहूता,
वायुवघूरनिगांठिपरीबहु, बादलव्योमसुव्योमजु
भूत ॥ वृक्षसुबीजहेबीजसुब्रक्षहे, पूतसोंबापहे-
बापसुपूता वस्तुविचारतएकहिसुंदर, नानेरुवानेतो
देषियेसूता ॥ ६ ॥ भोमिहुचेतनआपहुचेतन तेज-
हुचेतनहेजुप्रचंडा वायुहिचेतनव्योमहुचेतन,
शब्दहुचेतनपिंडब्रह्मंडा ॥ हैमनचेतनबुद्धिहुचे
तन, चित्तहुचेतनआहिअडंडा जोकछुनामध-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसोइचैतन, चेतनसुंदरब्रह्मअषंडा ॥७॥ एकअ
षंडितब्रह्मविराजत, नामजुदोकरिविश्वकहावे
एकइग्रंथपुरानबषानत, एकइदत्तवसिष्ठसुनावें॥
एकइअर्जुनउद्धवसोंकहि, कृष्णकृपाकरिके-
समुझावें सुंदरद्वैतकछूमतिजानहु एकहिव्या
पकवेदबतावे॥८॥ ॥छंदमनहर॥ ॥सि-
ष्यपुंछेगुरुदेव गुरुकहे पूंछशिष्य, मेरेएकसंशयहे
क्यूंनपूंछेअबही तुमकह्योएकब्रह्मअजहुमेंक
हुंएक, एकताअनेकताकोंयहभ्रमसबही॥भ्र-
मयहकोनकोहे भ्रमहिकोभ्रमभयो, भ्रमहिको
भ्रमकेसेतुनजानेकबही केसेकरिजानेप्रभुगुरु
कहेंनिश्चेधरि, निश्चैऐसेजान्योअबएकब्रह्मतब
ही॥९॥ बौधोक्ति॥ ॥ब्रह्महेठोरकोठोरदूसरोन
कोउओर, वस्तुकोविचारकियेवस्तुपहिचानियें,
पंचतत्वतीनगुनविस्तरेंविविधभांति, नामरूपज-
हांलगिमिथ्यामायामानिये॥शेषनागआदिदेकेवे
कुंठगोलोकपुनि, बचनविलाससबभेदभ्रममानि
ये नतोकछुउरझोनसुरझोकहोसोकोन, सुंदर-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकलएहउहांवाहीजानिये॥१०॥उहावाहीनामबाल
कनेनींदप्राणकोहालस्योगीत॥ ॥प्रथमहिदेहमेतें
बाहेरकोचूकिपस्यो, इंद्रियव्यापारसबसत्यकरिजा
न्योहैं कोनउसंजोगपाइसदगुरुभेटभइ, उनउपदेस
देके भीतरकुआन्योहैं॥भीतरकेआवतहिबुधि-
कोप्रकासभयो, कौंनदेहकौंनमेंजगतकिनमान्यो
हैं सुंदरविचारतयौंउपज्यौअद्वैतज्ञान, आपको-
अषंडब्रह्मएकपहिंचान्योहैं॥११॥ ॥हंसालछंद॥
सकलसंसारविस्तारकरिवरणियो, स्वर्गपातालमृ-
तब्रह्महीहैं एकतेगिनतगिनजाइयेसोलगे, फेरि
करिएककोएकहीहै॥ एनहिंएनहीरहेअवसेषसों,
अंतहीवेदनें यूंकहीहैं कहतसुंदरकहीजांनुजब
अपनपो, आपसेंआपनेंआपहीहै॥१२॥
एकतूंदोयतूंतीनतूंचारतूं, पंचतूंतत्वतेजगतकी
यो नामअरूपहोईबूझतविधिविस्तस्यो, तुमबिना
औरकोउनाहिबीयो॥रावतूंरंकतूंदीनतूंदानितूंदो
इकरिमेलतेंलीयदीयो सकलहीएहतुममाहिउपजें
षपे, कहतसुंदरबडोविपुलहीयो॥१३॥ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ छंदमनहर ॥ ॥ तोहिमेजगतयहतूंहिहेजगत-
माहीं, तोमेंअरुजगतमेंभिन्नताकहांरही भोमी-
हीतेभाजनअनेकविधिनामरूप, भाजनविचारदेषे
उहेंएकहेमही ॥ जलतेंतरंगफेनबुदबुदाअनेकभां
ति, सोउतोविचारेएकवहेजलहेसही, जेतेमहापु
रुषहेसबकोसिद्धांतएक, सुंदरअखिलब्रह्मअंत
वेदएकहि ॥ १४ ॥ जेसेईषरसकीमिठाई भांतिभां
तिभई, फेरकरिगारेइक्षरसहीलहतुहे जेसेघ्रत
थीजकेडरासोबंधजानपुनि, फेरपघरेतेयहघ्रतई-
रहतुहे ॥ जेसेपानीवेजमीकेपषानहूसोदेषीयत,
सोपषानफेरपानीहोयकेबहतुहे तेसेहीसुंदरयह
जगतहेब्रह्ममय, ब्रह्मसोजगतमयवेदसुकहतु
हें ॥ १५ ॥ जेसेकाठकोरितामेंपुत्तरीबनायराषी,
जोविचारिदेषीयेतोउहेएकदारहे जेसेमालासूत
हूकमनिकाहूसूतहीके, भीवरहूपोयोपुनिसूत
हीकोतारहें ॥ जेसेएकसमुद्रकेजलहीकोलोनभ
यो, सोउतोविचारेपुनिउहेजलषारहे तेसेहीसुं
दरयहजगतसोब्रह्ममय, ब्रह्मसोंजगतमयया-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हीनिरधारहे ॥१६॥ जेसेएकलोहकेहथ्यारनाना-
विधकीये, आदिमध्यअंतएकलोहई प्रमानीयेजे
सेएककंचनमेंभूषनअनेकभये, आदीमध्यअंत
एककंचनई जानीये॥ जेसेएकमोमकेसंवारेनरहा
थीयह, आदिमध्यअंतएकमोमकेवषानीये ते-
सेहीसुंदरएकजगतमोब्रह्मयह, ब्रह्मसोंजगत-
मयनिश्चेकरिमानीये ॥१७॥ ब्रह्ममेजगतयहऐ-
सीविधिदेषीयत, जेसीविधिदेषीयतफूलरीमह-
लमें जैसीविधिगिलिमदुलीचेमेंअनेकभांति, जे-
सीविधिदेषीयतचूनरीउचीरमें॥ जेसीविधिकांगुरे
उकोटपरीदेषीयत, जेसीविधिदेषीयतबुदबुदानी
रमें सुंदरकहतलीकहाथ,परिदेषीयत सीतलास
रीरमें ॥ १८ ॥ ब्रह्मअरुमायाजेसें शिवअरुश
क्तिपुनि, पुरुषप्रकृतिदोउकहीकेसुनायेहें॥ प
तिअरुपतनीईश्वरअरुईश्वरीहु, नारायनल-
क्ष्मीहूवचनकहायेहें ॥ जेसेकोईअर्धनारीनादे
स्वररूपधरे,एकबीजहीतेदोउदालिनामपायेहें ते-
सेहीसुंदरवस्तुज्योंहेंत्योंहिएकरस, उभयप्रकार-
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होइ आपही दिषायेहै ॥ १९॥ ॥ छंदईदव॥
ब्रह्मनिरीह निरामयनिर्गुन, नित्यनिरंजन औरन भासें ब्रह्म अषंडितहे अधऊरध, बाहीर भीतरब्रह्मप्रकासे॥ ब्रह्महिसूक्षमस्थूल जहांलग, ब्रह्म हीसाहिब्रह्महीदासें सुंदर औरकछु मतजानहु, ब्रह्महीदेषतब्रह्मतमासे॥२०॥ ब्रह्महिमाहि विराजतब्रह्महि, ब्रह्मविनाजिन औरहीजानो ब्रह्मही कुंजरकीटहुब्रह्महि, ब्रह्महिरंकहु ब्रह्महिरानो॥ कालहिब्रह्म स्वभावहु ब्रह्महि, कर्महु जीवरु ब्रह्मवषानो सुंदर ब्रह्मविनाकछु नाहिन, ब्रह्महिजानि सबे भ्रमभानो॥२१॥ आदिहु तोसुहि अंतहिहेपुनि, मध्यकहाकछु औरकहावें कारनकारजनामधरेपुनि, कारजकारनमांहिसमावे ॥कारजदेषिभयोविचविभ्रम, कारनदेषिविभ्रमविलावे सुंदरयेंनिश्चेअभिअंतर, द्वैतगएफिरिद्वैत नआवे॥ ॥२२॥ ॥ छंदमनहर॥ द्वैतकरिदेषेजबद्वैतहीदीषाईदेत, एककरिदेषे नबउहेएकअंगहे सूरजकोदेषेजबसूरजप्रकासरह्यो, कीरणकोदेषेतोकीरण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नानारंगहे॥भ्रमजबभयोतबमायाऐसोनामध-
र्‍यो,भ्रमकेगयेतेएकब्रह्मसरवंगहें सुंदरकहत
याकीदृष्टिहूकोफेरभयो,ब्रह्मअरुमायाकेतो
माथेनहिंशृंगहे॥२३॥श्रोत्रकछुओरनाहींनेत्र
कछुओरनाहीं,नासाकछुओरनाहीरसनान-
औरहे,त्वककछुओरनाहीवाककछुओरनाही,
हाथकछुओरनाहींपावकीदोरहे॥मनकछुओर
नाहींबुधिकछुओरनाहीं,चितकछुओरनाहींअ
हंकारतोरहें सुंदरकहतएकब्रह्मविनाओरनाहीं,
आपहीमेंआपव्यापरह्योसबठोरहे॥२४॥ ॥
इतिअद्वैतज्ञानकोअंगसमाप्तः॥३३॥ ॥७॥
॥अथजगतमिथ्याकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमन
हर॥ ॥कियोनविचारकछुभनकपरीहेकोन,धा
इआइसुनिकिरिडरीविषपायोहे॥जैसेकोउ
अनछतोएसेहीबुलाइयत्त,वारवीतगईपरको
ऊनहीआयोहे॥वेदहिवरनिकेजगततरुठाढो-
कियो,अंतपुनिवेदजरमूलतेंउखायोहे तेसेही-
सुंदरयाकोकोईएकपावेभेद,जगतकोनामसुनि

जगत भुलायोहे ॥१॥ एसोईअज्ञानकोईआयके प्रगट भयो, दिव्यद्रष्टिदूर गइ देषे चामद्रष्टिको जेसेएकआरसीसदाई हाथमाहीरहे, सुमुषनदेषेफे-रफेरदेषेप्रष्टिकौं ॥जेसे एकव्योमपुनिबादरसौंछायरह्यौ, व्योमनहीदेषतदेषतबहुद्दष्टिकों तेसेए-कब्रह्म ही विराजमानसुंदरहें, ब्रह्मकौनदेषेको उदेषेसबसृष्टिकौं ॥२॥ अनछतोजगतअज्ञानतेंप्रगटभयो, जेसेकोईबालकवेतालदेषिडर्यौ हें जेसेकोईस्वपनेमेंदाव्योहेथारें, आयमुषतेंन आवेबोल एसोदुषपर्योहे॥जेसेंअंधीयारीरेन जेवरीनजानेंताही, आपहीतेंसापमानिभयअतिकर्योहे तेसेहीसुंदरएकप्रकासबिनु, आपदुषपायआयआपपचिमर्योहें॥ ३॥मृत्तकासमाईरही भाजनकेरूपमाहीं, मृत्यकाकोनामभिटिभाजनईगर्यौहें कनकसमाईर्योंही होइ रह्यौ आभूषन, कनकहेनकोउआभूषनकह्यौहे॥बीजहूसमाईकरिवृक्ष होईरह्योपुनि, वृक्षहीकौदेषीयतबीजनाहिंलह्योहे सुंदरकहतयहयों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हीकरिजान्योसब, ब्रह्मईजगतहोईब्रह्मदुरिरत्यो
है॥४॥कहतहेदेहमांहीजीवआहिमिलिरत्यो,क
हांदेहकहांजीववृथाचूकपर्योहें बुडवेकेडरतेत
रनिकोंउपायकरे, ऐसेनहींजानेयहमृगजलभ-
र्योहें॥जेवरीकोंसापजेसेसीपविषेरूपोजानी,
औरकोऔर हिदेषीयोहीभ्रमकर्योहें सुंदरक
हतयहएकहीअषंडब्रह्म, ताहीकोपलटकेज
गतनामधर्योहें॥५॥ ॥इतिजगतमिथ्या-
कोअंगसमाप्तः॥३४॥ ॥छ॥ ॥अथ-
आश्चर्यकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहर॥ ॥
वेदकोविचारसोइसुनकेसंतनमुष, आपहूविचा
रकरिसोंहिधारियतुहे जोगकीजुगतिजानिजग
तेउदासहोई, सुन्यमेंसमाधिलाईमनमारियतु
हे॥ऐसेंऐसेंकरतकरतकेतेदिनबीते,सुंदरक
हतअजहूविचारीयतुहें.कारोहीनपीरोनतोना
तोहीनसीरोकछुहाथनपरततातेहाथझारीयतुहे
॥१॥मनकोंअगमअतिवचनथकितहोत,बुद्धि
हूविचारकरिवहुपंडियतुहें श्रवनसुनतनाहीनेन

हूनदेषेनाही, रसनाकोरससब र स छांडियतुहैं ॥त्वक्कोंस्परसनाहिं घ्रानकोनविषेहोई, पगनि हूंकरिजितति तहीडीयतुहैं सुंदरकहतअतिसू क्षमस्वरूपकछु, हाथनपरततातें हाथमीडीयतुहैं॥ गुफाकोसंवारकरिआसनहूमारिकरि, ध्यानहीको धारधारनाकसीदीयतुहैं इंद्रिनकोंघेरकरिमन- हूकोफेरपुनि, भ्रकुटिमेंहेरहेरहीयोचीटीयतुहैं॥ सबछांटिकाय पुनिसून्यमेंसमायतहां, समाधि लगायकरिआषमींचियतुहैं सुंदरकहतहमओ रऊकीयेउपाय, हाथनपरततातेहाथमीडीयतु हैं॥३॥ बोलेहीनमौनधरे बैठेहेनगौनकरे, जागे- होनसोवैंसोतोदूरहेननेरोहैं॥ आवेहीनजाईन तोथिरअकुलातपुनि, भूषीहीनषातकछु तातो हीनसीरोहै लेतहैंनदेतकछुहेतनकुहेतुपुनि॥स्या महीनस्वेतपुनिरातोहीनपीरोहै दूवरोनमोठोकछुलां बोहीनछोटोताते,सुंदरकहतकछुकाचहीनरोहै॥४॥ भूमीहीनआपनतो तेजहीनतापनतो, वायू- हीनव्योमनतो पंचकोपसारोहैं हाथहीनपां-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यनतोनेनबेनभावनतो, रंकहीनरावनतोवृधहीनवारोहे॥ पिंडहीनप्राननतोजाननअजानननतो, बंधनिरवानननतोहरवोनभारोहे हैतननअद्वैतननतोभीतननअभीतननतो, सुंदरकह्योनजाईमिल्योहीनन्यारोहे॥५॥ ॥छंदइंदव॥ पापनपुन्यनस्थूलनसुन्यन, बोलनमौननसोवेनजागे एकनदोइनपुरुषनज्ञोइकहे, कहेंकोइनपीछनआगे॥वृद्धनबालनकर्मनकालन, हस्वविसालनऊनभागे बंधनमोक्षअमोक्षनमोक्षन, सुंदरहैनअसुंदरलागे॥६॥ तत्वअतत्वकह्योनहिंजातजु, सुन्यअसुन्यउरेनपरेहे जोतिअजोतिनजानिसकेंकोऊ, आदिनअंतजिवेनमरेहें॥ रूपअरूपकछूनहिदिसत, भेदअभेदकरेंनहरेहें स्रुद्धअसुद्धकहेपुनिकौनजु, सुंदरबोलेनमौनधरेहें॥७॥ षोजतषोजतषोजिगयेपुनि, षोजतहेअरुषोजिहे आनेंगावतगावतगायरहेसब, गावतहेपुनिगायाहिगानें॥देषतदेषतदेषथकेसब, दीसनहींकछुठोरठिकानें॥बूझतबूझतबूझिकेसुंदर, हेरतहेरतहेरहिरानें॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

॥८॥ पिंडमेंहेंपुनिपिंडमिलेनहीं, पिंडपरेपुनित्यों-हिरहावे श्रोत्रमेंहेपरिश्रोत्रस्कनेनहिं, द्रष्टिमेंहेपरिद्रष्टिनश्रावे॥ बुद्धिमेंहेपरिबुद्धिनजानत, चित्तमेंहेपरिचित्तनपावें शब्दमेंहेपरिशब्दथक्योकहि, शब्दहुसुंदरदूरबतावें ॥९॥ भूमिहुतैंसेहिश्रापहुतेसेहि, तेजहुतैंसेहितेसेहिपोना· व्योंमहुतैंसेहि-श्राहिश्रषंडित, तेसेहिब्रम्हभयोभरिभोंन॥ देहसंजोगवियोगभयोतब, श्रायोसोंकोनगयोतोहीकोना जोकहियेकहतेनबनेकछु, सुंदरजानिगहीमुषमोना ॥१०॥ एकहिब्रह्मरह्योभरिपूरितो, दूसरोकौंनबनावनहारो जोकोउजीवकरेपरमानतो, जीवकहाकछुब्रह्मतेंन्यारो॥ जोकहेजीवभयोजगदीसतें, तोरबिमाहिकहांकोश्रंधारी सुंदरमोनगहीयहजानके, कोनहुभांतिगहैनिरधारो॥११॥ जोहमषोजकरेश्रभिश्रंतर तोउहषोजउरेहिविलावें जोहमबाहिरकौंउठिदोरत, तोकछुवाहिरहाथनश्रावे॥ जोहमकाहुकौंपूंछतहेपुनिं, सोइश्रगाधश्रगाधबतावे ताहीतेको-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री मुमुक्षु भ... वाराणसी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्यालयीय
सं०............
०............
वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri